जब आवेगी

लेखक—
डा० रांगेय राघव

विनोद मन्दिर
हॉस्पिटल रोड, आगरा।

प्रकाशक—
राजकिशोर अग्रवाल
विनोद पुस्तक मन्दिर
हॉस्पिटल रोड, आगरा।

प्रथम संस्करण
मार्च—१९५८
मूल्य ३।।)

मुद्रक—राजकिशोर अग्रवाल, कैलाश प्रिंटिंग प्रेस,
बाग मुजफ्फरखाँ, आगरा।

भूमिका

प्रस्तुत उपन्यास लिखते समय मेरे सामने तीन दृष्टिकोण थे।

एक। मुझे नाथसंप्रदाय का वह रूप दिखाना जो गोरखनाथ और कबीर के बीच में था। इसमें गोरखनाथी संप्रदाय का विस्तृत रूप और साधनाएँ आईं।

दो। तत्कालीन युग का चित्रण करके योगियों की परिस्थिति दिखानी थी। इसमें विदेशियों की वास्तविकता और इस्लाम को प्रगट करना पड़ा।

तीन। सिद्धियों वाले योगियों का जनता में प्रभाव, उससे संबंध, जीवित बने रहने का कारण, रूप बदलने का कारण तथा सांस्कृतिक परंपरा को निर्वाह करने का कारण दिखाना था। इसमें हिंदी साहित्य को *नाथसप्रदाय* की देन दिखानी पड़ी।

इन तीनों का निर्वाह कर दिया और इसलिये बहुत बड़े पट को अंकित करना पड़ा, जिसके लिये शैली भी नयी अपनानी पड़ी। इस दृष्टिकोण से चरित्र चित्रण में यह प्रयत्न अभी तक नया है।

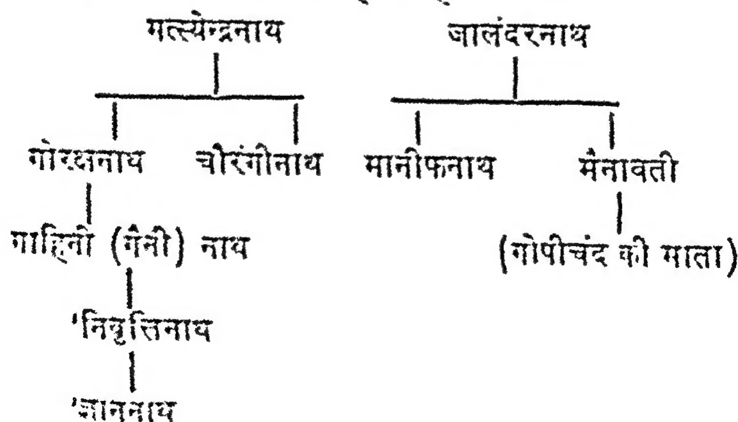
चर्पटनाथ को मैंने ज्ञानेश्वर और उनके बाद तक माना है। बहुधा चर्पट को गोरख का समकालीन माना जाता है।

किन्तु मैं इस परंपरा को नहीं मानता। मेरी राय में चर्पटी और चर्पट दो व्यक्ति थे। चर्पटी थे पा संप्रदाय के और थे पुराने व्यक्ति। चर्पटनाथ थे परवर्त्ती। बाद में दोनों मिला दिये गये। सिद्ध और नाथ बाद में बहुधा मिला दिये गये हैं। जो चर्पटी पा थे वे सम्भवतः गोरख युगीन थे, या कुछ बाद में, उनमें शाक्त प्रभाव रहा होगा, वज्रयानी भी। चर्पटनाथ रसेश्वर मत के थे। चर्पटनाथ का कार्य विवरण नहीं मिलता उनकी रचनाएं मिलती हैं, जिनकी भाषा सधुक्कड़ी है और भाव दृष्टि से भी वे गोरख के बहुत बाद की लगती हैं। चर्पट ने योगी के बाह्यवेश को ही अस्वीकृत किया है, जो प्रगट करता है कि वे गोरख से काफ़ी दूर थे, क्योंकि गोरख के युग में योगी वेश धारण करना ब्रह्मचर्य्य के कारण गौरवास्पद विषय था।

ज्ञानेश्वर की गुरु परंपरा में यह बताया गया है—(ज्ञानेश्वर चरित्र–पं० लक्ष्मण पांगारकर)

आदिनाथ सर्वप्रथम हुए। उनके दो शिष्य हुए—मत्स्येन्द्रनाथ और जालंदरनाथ।

इनके बाद परंपरा का यह रूप है—



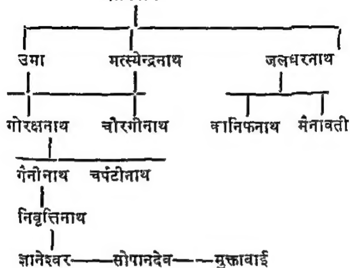
स्पष्ट ही मत्स्येन्द्र नवीं शती के थे। गोरख उनके शिष्य थे। चोरंगीनाथ पूर्व के थे जो गोरक्ष के समकालीन थे। किंतु जो पूरन भक्त भी चोरंगीनाथ कहलाते हैं, वे चोरंगी पा थे, जो गोरख के पूर्ववर्त्ती थे और बाद में चोरंगीनाथ से मिला दिये गये। इसके उपरांत गैनीनाथ का नाम आता था। यह योगमार्गी थे, परंतु कृष्ण के उपासक थे और इन्होंने ज्ञानेश्वर को सहायता दी थी। ज्ञानेश्वर अलाउद्दीन के समय में स्वर्गवासी हुए थे। एक मतानुसार उनका यह समय १२९६ ई० है। यह समय गोरखनाथ से कई वर्षों बल्कि शतियों बाद है। उस समय तक नाथ सिद्धों की कोई सूची नहीं बनी थी, सिद्ध होते जारहे थे। जालधरनाथ के शिष्य मुख्य थे कण्हपा या कानीपाव या कृष्णाचार्य, या कानीफनाथ। पता नहीं मानीफनाथ कौन थे। मैनावती गोपीचंद की माता थी, जो जालंधर की समकालीन नही वरन् कई वर्षों बाद जन्मी थी।

पंडित हजारी प्रसाद ने ईसवी सन् की १३ वीं शती तक ही सिद्धों नाथों को समाप्त कर दिया है। उनके मतानुसार यह सब लोग १२९६ ई० तक होचुके थे। यह ठीक लगता है। यही समय है जब अलाउद्दीन ने इन योगियों का गोरखपुर का मन्दिर ढहाया था।

नवनाथों के नवनारायणों के रूपों में अवतार लेने की कल्पना परवर्त्ती है, उसमें भी गोपीचदनाथ काफी परवर्त्ती है—जिसे द्रुमिलनारायण कहा गया है। अतः उस सूची में चर्पट या चर्पटीनाथ अथवा पिप्पलायन नारायण का नाम मिलना कोई ऐतिहासिक तथ्य नहीं माना जा सकता। परंतु हजारीप्रसाद

जी ने जो चर्पटनाथ और चर्पटी पा को एक में मिला दिया है, वह ठीक नहीं लगता। उन्होंने चर्पटनाथ के रसेश्वर वाद को तो देखा है, परंतु इस तथ्य पर ध्यान नहीं दिया कि योगीवेश के बाह्यरूप के विरोध के लिये गोरख से कितनी दूरी की आवश्यकता है। जहाँ तक चर्पट के स्वरों का भाव है वह भी परवर्त्ती ही है।

कल्याणके संत अंक में पं० लक्ष्मणनारायण गर्दे ने 'महाराष्ट्र में नाथ पंथ' में यह परपरा दी है : (पृ० ४८३—) "मराठी के आदि कवि और संत श्री मुकुन्दराज से भी पूर्व महारष्ट्रा में नाथ पंथ ही सर्वमान्य था।"निवृत्तिनाथ–ज्ञानेश्वर नाथ पंथ से ही दीक्षा प्राप्त हुए थे। ज्ञानेश्वर के प्रपितामह-त्र्यम्बक पंत को गोरखनाथ ने संवत् १२६४ में दीक्षा दी थी। ये वे ही गोरखनाथ हैं जिन्होंने अवंत्तिराज भर्त्तृहरि को दीक्षा दी या कोई दूसरे, इसका उत्तर ऐतिहासिक और संत संप्रदाय भिन्न भिन्न ढंग से दे सकते हैं। ज्ञानेश्वर के पितामह को गैनीनाथ ने दीक्षा दी थी। इन्हीं गैनीनाथ ने ज्ञानेश्वर के बड़े भाई निवृत्तिनाथ को उपदेश दिया, जो निवृत्तिनाथ से ज्ञानेश्वर तक पहुँचा। नासिक में त्र्यम्बकेश्वर के पिछवाड़े ब्रह्मगिरि पर्वत पर गोरखनाथ की गुहा है और इसी पर्वत की परिक्रमा के रास्ते में गैनीनाथ का मठ है। अनेक परंपराओं से पता लगता है कि मत्स्येन्द्र और गोरख महाराष्ट्र में रहे अवश्य थे। निवृत्ति नाम को 'शाम्भव अद्वयानंद वैभव' और 'सम्यक् सनंनता' देने वाले गैनीनाथ कृष्णोपासक थे।



इस परपरा मे चर्पटीनाथ को गैनीनाथ का समकालीन कहा गया है। गैनीनाथ का कृष्ण भक्त होना प्रगट करता है कि नाथ पथ कितना रूप बदल गया था। उसी समय स भवत चर्पटनाथ भी थे जिन्होने योगियो के बाह्यवेश का विरोध किया था, जो कि महाराष्ट्र की सन्त परम्परा से स्पष्ट होता है।

सुधाकर चद्रिका, नेपाल की परम्परा, तारारहस्य, कौलावली तत्र और श्यामारहस्य की गुरु परम्पराओ मे चर्पटनाथ का नाम भी नही मिलता। सन् १३००-१३२१ ई० की वर्णरत्नाकर नामक रचना मे जो ७६ नाथ गिनाये गये हैं, उनमे चर्पटी भी है। इसमे गाहिनी, ज्ञानेश्वर आदि नहीं हैं जो

दक्षिण में हुए थे। फिर यह दक्षिण के महाराष्ट्र सन्त नाथ पंथ
में सीधे सीधे थे भी नहीं। अतः वे शायद नहीं गिनाये गये।
चर्पट का संप्रदाय से सीधा सम्बन्ध था अतः संभवतः वे
मान्य हुए। या यह पूर्ववर्ती चर्पटी पा का ही नाम है, क्योंकि
वर्ण रत्नाकर की सूची में अनेक नाम ऐसे हैं जो वज्रयानी-
सहजयानी-सिद्धसूची में भी मिल जाते हैं। अतः इससे भी
चर्पटनाथ का समय पूर्ण रूप से निश्चित नहीं हो जाता।
सारी सूचियों को मिलाने पर १३७ नाथ सिद्ध बैठते है,
जिनमें बहुत से सहजयानी भी लगते हैं। अतः हम अंतिम
छोर पर अलाउद्दीन काल तक इन्हें खींच सकते हैं। दूसरी
ओर नाथ सिद्धों में प्रथम मत्स्येन्द्र मिलते हैं जिनके शिष्य
गोरखनाथ और समकालीन जालंधर नाथ और कानीपानाथ थे।
चर्पटनाथ का समय काफी परवर्ती प्रतीत होता है। प्राण
सांगली एक सिख ग्रंथ है। उसमें जिन परवर्त्ती नाथ सिद्धों के
नाम आते हैं, जिनका नानक से साक्षात्कार बताया जाता है,
वे हैं—परवतनाथ, ईश्वरनाथ, चरपट नाथ, घुघूनाथ, चंपानाथ,
ग्रियटनाथ, भंगरनाथ, घूमंनाथ, बंगर नाथ, मंगल नाथ,
प्राणनाथ। यह आवश्यक नहीं है कि यह नाथसिद्ध नानक-
कालीन थे, परंतु इससे अधिकाधिक यही सोचा जासकता है
कि यह सिद्ध स्मृति में उतने पुराने नहीं पड़े थे। इनकी शिष्य
परंपरा संभवतः तब तक मौजूद थी। गोरखनाथ की कवि-
तियों में चर्पटनाथ कहीं दिखाई भी नहीं देते। बल्कि ए
धारणा तो यह है कि गोरखनाथ ने ही नौ बार नव नाथों
रूप में अवतार लिया था।

चर्पट नाथ को रज्जबदास ने चारणी के गर्भ से उत्पन्न माना है । डा० पीताबर दत्त बडथ्वाल ने लिखा है कि चर्पट का नाम चबा रियासत की राजवशावली मे आता है । वागेल और ओमेन के अनुसार चबा के राजप्रासाद के सामने जो मदिर हैं उनमे चर्पट का भी मदिर है । डा० बडथ्वाल मानते हैं कि राजा साहिल्लदेव सचमुच चर्पट का शिष्य था । उधर तिब्बती परपरा मे वे मनिपा के गुरु थे । कही वे गोरख के शिष्य है, कही वे गोरख के प्रसाद से जन्म लेते हैं ।

हमारा निष्कर्ष है—

१) चर्पट दो थे ।

२) चर्पटीपा सहजयानी थे ।

३) चर्पट नाथ परवर्त्ती रसेश्वर सप्रदाय मे थे, जो गोरखपथ में थे परतु योगिवेश के विरोधी थे ।

४) बाद में यह दोनो मिला दिये गये ।

अत हमारे चर्पटनाथ परवर्त्ती है । हमने उन्ही को कथा-नायक बनाया है । उनका समय गोरख और कबीर के लग-भग बीच में पडता है । इनके समय मे खिलजी प्रभुत्व था जब गोरखनाथी मदिर तोडा गया था । योगियो के आडबर से वे उनके बाह्यवेश के विरोधी होगये थे ।

चर्पटनाथ के समय मे सहजयान और नाथ सप्रदाय की स्थिति पर थोडा विचार कर लेना अच्छा होगा । चर्पटनाथ का नाथ सिद्धो मे व्यक्तिगत प्रभाव था । उनके नाम का कोई सम्प्रदाय हमे नाथ पथो मे नहीं मिलता ।

गोरख के सहजयान का धीरे धीरे लोप होगया (ब्रह्म-

ही श्रेयस्कर लगा। मैंने समन्वय के नाम पर विदेशी साम्राज्य-वादी शोषक को किसी प्रकार भी बदल कर नहीं रखा। इस्लाम के क्रोड़ में जो तीन वर्ग थे उन्हें मैंने उपन्यास में स्पष्ट कर दिया है—

१) शासक वर्ग

२) मुल्ला वर्ग–पुरोहित वर्ग

३) तथा जनता

इस जनता में दो तरह के मुसलमान थे—देसी लोग जो मुसलमान होगये थे, और वे जो बाहर से आये थे। बाहर से आने वालों में ही सूफी भी थे, जो आगे चल कर हमें प्रेममार्गी कवियों के रूप में दिखाई देते है किंतु वे सहसा ही खड़े नहीं होगये थे। उनके पीछे भी एक परंपरा विद्य-मान थी।

इतिहास और व्यक्ति, समाज और विचारधाराएं इनको मैंने समान दृष्टि से देखने का प्रयत्न किया है। यदि मेरा यह प्रयास पाठकों को रुचिकर लगता है तो मेरा श्रेय सफल होगा—

—रांगेयराघव

पुनश्च: यहां हमने गोरख के नाम से विख्यात पदों को प्रयुक्त किया है, क्योंकि इस समय तक यही पद गोरख के नाम से चल पड़े थे।

भाग-१

चर्पटनाथ की खोज : विद्रोह का प्रारंभ

१

करनाल। पंजाब की धरती पर।

पंजाब ३०० वर्षों से तुर्कों के पाँवों और तलवारों के नीचे पड़ी धरती, जिसकी नदियों में लहू गिरा है और बहा है सिंधु तक।

एक अधेड़ व्यक्ति। कानों में बीच में बड़े बड़े छेद हैं और पहने है उनमें कुण्डल, जो लटक रहे हैं और ज्यों ज्यों वह खल्लड़ में पड़ी दवाएँ घोटता है, हिल रहे हैं।

खल्लड़ में अजीब अजीब जड़ी बूटियाँ हैं, पारा है, गंधक है, और हाथ बड़ी तन्मयता से चल रहा है। देह पर कुछ नहीं है, कटि के नीचे एक धोती है। सिर के बाल लंबे हैं, परंतु जटा नहीं हैं। रंग है गेहुँआ, कंधे हैं मजबूत और चौड़े। मुख पर न दाढ़ी है, न मूँछें, फिर भी लंबी नाक के कारण वह पुरुष ही लगता है और लंबी मगर पतली आँखें चौड़े माथे के नीचे चमकती हुई लगती हैं। वह गंभीर है।

बाहर दालान के एक कोण और है। उसके बाहर चार-पाँच कनफटे ज्वान बैठे हैं और दम लगा रहे हैं गाँजे में और बातें भी करते जाते हैं। उनकी बातों की ओर दवा घोटने वाले का कोई ध्यान नहीं है।

का। चौड़े दांत हैं। उसके सिर पर भी उस्तरा फिरा हुआ है और गले में रुद्राक्ष की माला पड़ी है। वे लोग शांत मन से आसनों में लगे हैं। अब एक ने पांव ऊपर उठा लिये हैं और सारे बोझ को गर्दन पर साध लिया है। यह ऊर्ध्वसर्वांगासन है। दोनों हाथ उसने फैला कर धरती पर चिपका दिये हैं और अपनी नाक की नोंक पर वह आँखें गड़ाये है।

सन्नाटा भी अजीब चीज है। आस्मान में उड़ते पक्षी देखते रहो, या मंदिर के सामने के घने पेड़ की छाया को, या सुती पुंछी धरती की धूल को, जिसमें शायद एक आध जोगी के निकल जाने से पांवों के निशान बन गये हैं, या इसे भी छोड़ो और सुलगती धूनी को देखो, जिसके चारों तरफ़ राख है, सफ़ेद सफ़ेद···यह सब काम यहाँ होते हैं, फिर भी कोई त्वरा नहीं है, बड़ी शांति है, यहां हलचल नहीं, क्योंकि किसी के गृहस्थी नहीं, और औरत के न होने से मर्द को यहाँ बेफ़िक्री है, गोया दुनिया में चिंता और काम, रहस्य और शिष्टाचार की मर्यादा तब प्रारंभ होती है, जब स्त्री आती है। स्त्री के बिना पुरुष संसार में ऐसे रहता है, जैसे रहता है, मगर नहीं रहता। वह किसी खूंटे से बँधा हुआ नहीं है।

समय एक व्यापक प्रसार है। फिर भी उसे शून्य की भांति यहाँ देर तक देखने का आराम है, क्योंकि काम कोई नहीं है। यह अखाड़ा है नाथों का। यहाँ बड़ी बड़ी दूर से तीर्थ-यात्री बन कर घुमक्कड़ नाथ जोगी आते हैं। ऐसे ही महंत में सन्नाटे हैं। यहाँ आने वाले को अपना ही समझा

जाता है, क्योंकि सारे जोगी ही इस विरादरी के लोग हैं। विलोचिस्तान से कामरूप तक, पेशावर से मदरास (तब कुछ नाम था इस स्थान का) तक, कच्छ से पुरी तक, कौन सी जगह से जहाँ से स्त्री का जाया यहाँ नहीं आया और आया, और आकर चला नही गया जो इस धरती में नही गड़ा'" वह आगे या उत्तर या दक्खिन या ऐसी ही किसी दिशा की धरती मे नही गड गया।

अलख निरजन !

यहाँ जीवन का आदर्श है कि अदेख को देखत करो, अलेख को लेखंत। अरसपरस से दरस 'जाणा' जाता है। सु नि तो गरजत है, नाद वाजत है, तब प्रमाण से ही अलेप को लेपंत किया जाता है।

निहचल धरि वैसिबा पवन निरोधिबा
कदे न होइगा रोगी
बरस दिन मे तीनि बार काया पलटिबा
नाग बग बनासपती जोगी ।१

२

अंधेरा होगया है।

नगर के वाहर एक तेली का निवास-स्थान है।

नागनाथ धीरे से दरवाजा थपथपाता है।

---

१ निश्चल होकर घर वैठो, पवन का निरोध करो, योगी इससे कभी भी रोगी नहीं होगा। नाग (सीसे, का भस्म) बग (टिन का भस्म) और वनस्पति के प्रयोग से वर्ष-भर मे तीन बार काया-कल्प करो।

का। चौड़े दांत हैं। उसके सिर पर भी उस्तरा फिरा हुआ है और गले में रुद्राक्ष की माला पड़ी है। वे लोग शांत मन से आसनों में लगे हैं। अब एक ने पांव ऊपर उठा लिये हैं और सारे बोझ को गर्दन पर साध लिया है। यह ऊर्ध्वसर्वांगासन है। दोनों हाथ उसने फैला कर धरती पर चिपका दिये हैं और अपनी नाक की नोंक पर वह आंखें गड़ाये है।

सन्नाटा भी अजीब चीज है। आसमान में उड़ते पक्षी देखते रहो, या मंदिर के सामने के घने पेड़ की छाया को, या सूनी पुंछी धरती की धूल को, जिसमें शायद एक आध जोगी के निकल जाने से पांवों के निशान बन गये हैं, या इसे भी छोड़ो और सुलगती धूनी को देखो, जिसके चारों तरफ़ राख है, सफ़ेद सफ़ेद···यह सब काम यहाँ होते हैं, फिर भी कोई खतरा नहीं है, बड़ी शांति है, यहां हलचल नहीं, क्योंकि किसी के गृहस्थी नहीं, और औरत के न होने से मर्द को यहाँ बेफ़िक्री है, गोया दुनिया में चिंता और काम, रहस्य और शिष्टाचार की मर्यादा तब प्रारंभ होती है, जब स्त्री आती है। स्त्री के बिना पुरुष संसार में ऐसे रहता है, जैसे रहता है, मगर नहीं रहता। वह किसी खूँटे से बंधा हुआ नहीं है।

समय एक व्यापक प्रसार है। फिर भी उसे शून्य की भांति यहां देर तक देखने का आराम है, क्योंकि काम कोई नहीं है। यह अखाड़ा है नाथों का। यहां बड़ी बड़ी दूर से तीर्थ-यात्री बन कर घुमक्कड़ नाथ जोगी आते हैं। ऐसे ही दूर में अखाड़े हैं। यहां आने वाले को अपना ही समझा

जाता है, क्योंकि सारे जोगी ही इस बिरादरी के लोग हैं। बिलोचिस्तान से कामरूप तक, पेशावर से मदरास (तब कुछ नाम था इस स्थान का) तक, कच्छ से पुरी तक, कौन सी जगह से जहाँ से स्त्री का जाया यहाँ नहीं आया और माया, और आकर चला नहीं गया''''जो इस धरती में नहीं गड़ा''''वह आगे या उत्तर या दक्खिन या ऐसी ही किसी दिशा की धरती में नहीं गड़ गया।

अलख निरंजन !

यहाँ जीवन का आदर्श है कि अदेख को देखंत करो, अलेख को लेखंत। अरसपरस से दरस 'जाएा' जाता है। सुंनि तो गरजंत है, नाद बाजंत है, तब प्रमाण से ही अलेप को लेपंत किया जाता है।

निहचल घरि बैसिबा पवन निरोधिबा
कदे न होइगा रोगी
बरस दिन में तीनि बार काया पलटिबा
नाग बंग बनासपती जोगी ।१

२

अंधेरा होगया है।

नगर के बाहर एक तेली का निवास-स्थान है।

नागनाथ धीरे से दरवाज़ा थपथपाता है।

---

१. निश्चल होकर घर बैठो, पवन का निरोध करो, योगी इससे कभी भी रोगी नहीं होगा। नाग (सीसे, का भस्म) बंग (टिन का भस्म) और वनस्पति के प्रयोग से वर्ष-भर में तीन बार काया-कल्प।

का। चौड़े दांत हैं। उसके सिर पर भी उस्तरा फिरा हुआ है और गले में रुद्राक्ष की माला पड़ी है। वे लोग शांत मन से आसनों में लगे हैं। अब एक ने पांव ऊपर उठा लिये हैं और सारे बोझ को गर्दन पर साध लिया है। यह ऊर्ध्वसर्वांगासन है। दोनों हाथ उसने फैला कर धरती पर चिपका दिये हैं और अपनी नाक की नोंक पर वह आंखें गड़ाये है।

सन्नाटा भी अजीब चीज है। आस्मान में उड़ते पक्षी देखते रहो, या मंदिर के सामने के घने पेड़ की छाया को, या सुनी पुंछी धरती की धूल को, जिसमें शायद एक आध जोगी के निकल जाने से पांवों के निशान बन गये हैं, या इसे भी छोड़ो और सुलगती धूनी को देखो, जिसके चारों तरफ़ राख है, सफ़ेद सफ़ेद···यह सब काम यहां होते है, फिर भी कोई त्वरा नहीं है, बड़ी शांति है, यहां हलचल नहीं, क्योंकि किसी के गृहस्थी नहीं, और औरत के न होने से मर्द को यहां बेफ़िक्री है, गोया दुनिया में चिंता और काम, रहस्य और शिष्टाचार की मर्यादा तब प्रारंभ होती है, जब स्त्री आती है। स्त्री के बिना पुरुष संसार में ऐसे रहता है, जैसे रहता है, मगर नहीं रहता। वह किसी खूंटे से बंधा हुआ नहीं है।

समय एक व्यापक प्रसार है। फिर भी उसे शून्य की भांति यहां देर तक देखने का आराम है, क्योंकि काम कोई नहीं है। यह अखाड़ा है नाथों का। यहां बड़ी बड़ी दूर से तीर्थ-यात्री बन कर घुमक्कड़ नाथ जोगी आते हैं। ऐसे ही बहुत से अखाड़े हैं। यहां आने वाले को अपना ही समझा

जाता है, क्योंकि सारे जोगी ही इस बिरादरी के लोग हैं। बिलोचिस्तान से कामरूप तक, पेशावर से मदरास (तब कुछ नाम था इस स्थान का) तक, कच्छ से पुरी तक, कौन सी जगह से जहाँ से स्त्री का जाया यहाँ नहीं आया और आया, और आकर चला नही गया जो इस धरती मे नही गड़ा''' वह आगे या उत्तर या दक्खिन या ऐसी ही किसी दिशा की धरती मे नही गड़ गया।

अलख निरजन !

यहाँ जीवन का आदर्श है कि अदेख को देखत करो, अलेख को लेखंत। अरसपरस से दरस 'जाणा' जाता है। सुंनि तो गरजत है, नाद बाजत है, तव प्रमाण से ही अलेप को लेपंत किया जाता है।

निहचल घरि बैसिबा पवन निरोधिबा
कदे न होइगा रोगी
बरस दिन मे तीनि बार काया पलटिबा
नाग बंग बनासपती जोगी ।१

२

अंधेरा होगया है।

नगर के बाहर एक तेली का निवास-स्थान है।

नागनाथ धीरे से दरवाजा थपथपाता है।

---

१ निश्चल होकर घर बैठो, पवन का निरोध करो, योगी इससे कभी भी रोगी नहीं होगा। नाग (सीसे, का भस्म) बंग (टिन का भस्म) और वनस्पति के प्रयोग से वर्ष-भर मे तीन बार काया-कल्प करो।

]

दरवाज़ा खुलता है।

एक स्त्री है।

मुस्कराती है।

'जोगी तेली नहीं है।'

जोगी ओसारे में बैठता है।

पास आती है।

'पांचो!'

'हां जोगी।'

'तेरा तेली कहां गया है?'

'आज गांव गया है।'

घानी तभी शांत है। बैल चुप खड़े हैं।

जोगी कहता है: 'आया था सांप पकड़ने।'

पांचो बैठती है। पूछती है: 'कुछ खाया है जोगी?'

'नहीं।'

तब वह मुसलमानिन भीतर जाती है।

'रोटी है और अचार है।'

'ला मुझे दे।'

'अचार मैंने ही डाला है।'

'अच्छा है।'

जोगी के कुण्डलों पर दीपक का हल्का प्रकाश पड़ रहा है। दाढ़ी घनी है, मूछें हल्की हैं। चौड़ी कलाई है। हाथ में पड़ा है। कंधे की झोली बगल में रखी है।

'पीर की दरगाह पर मुझे एक जाटनी मिली थी। हिं... थी। उसी ने बताया था।'

'हूँ, ठीक है ।'

स्त्री पजामा पहने है ।

"जोगी साप कैसे पकड़ा जाता है ।'

'वह बड़ा मुश्किल काम है ।'

'जहरीला नाग ?'

'हाँ ।'

'काटता नही ?'

'देवता की आन लगानी होती है उसे ।'

'और कभी काट ले तो ?'

योगी हँसता है ।'

'क्यो हँसते हो ?'

'मन्त्र से दब जाता है । फिर हम सिद्धियो से जहर निकाल सकते हैं ।'

'कैसे जोगी ?'

'तू नही समझेगी :

'पानी लाऊँ ?'

'ले आ ।'

जोगी पानी पीकर कहता है : 'मैं थोड़ी देर लेट लूँ, फिर चला जाऊँगा ।'

स्त्री कहती है : 'किधर ?'

'उधर जंगल मे ।'

'वहा तो बहुत अँधेरा है । डरावना है । तुम्हे डर नही लगता ?'

'डर किसका ? भैरव साथ है ।'

'पड़ोस में एक नाइन है, वह कहती थी, जोगी अधरम
रते हैं।'

'क्यों ?'

'कहते हैं मुसलमान का तुम खा लेते हो।'

'खाने में क्या है ?'

'कुछ नहीं ?'

'तेरा तेली पहले कौन था ?'

'वह तो देवी पूजता था। उन्होंने कहा, मुसलमान होजा। पंडत से चिढ़ा था, सो होगया। उसी के साथ मैं भी होगई। अब राजा हमारी तरफ़ होगया।'

'पर मुसलमान तुर्क अच्छे लोग नहीं हैं।'

'काजी कहता था कि जोग बुरा है, देवी देवता बुरे हैं। यह कैसे हो सकता है जोगी ?'

'मूर्ख है।'

स्त्री कहती है : 'तेली तो बाहर नमाज पढ़ता है, भीतर तो वही साधना करता है।'

'अब तूने कभी सिद्धि कराई है या नहीं ?'

'तुम करोगे ?'

'सोचता हूँ। इधर कई दिन से सुषमन नहीं चलाई।'

'जोग क्यों छोड़ते हो ? नागदेवता फिर बस में न होगा। गोरख पंथी कुछ आते हैं। एक मुझे देखकर बोला : यहाँ हमारे मंदिर में औरत क्यों आई। निकल जा यहाँ से। खबरदार जो आई। यह गुरु गोरख का ठाँव है। जोगी यह क्यों गाता था ? तुम भी तो जोगी हो !'

'वह गोरख के चलाये पंथ में है। हम शिव के चलाये पंथ में हैं। गुरु गोरख ने हमें जोग दिया। बड़े पहुँचे सिद्ध थे। मगर हमारा मारग शिव का है न ? हमें वामाग साधना भी स्वीकृत है। भोटकनाथ तो है ही वामारगी।'

योगी उठता है।

'कहाँ चले ?'

'जंगल !'

'बड़ा अंधेरा है।'

'उससे क्या डर ?'

'भूत पिशाच ?'

'भैरव के आगे ?'

'मैं अकेली हूँ। मुझे डर लगता है।'

'चल मेरे साथ, तुझे साँप पकड़ कर दिखाऊँ।'

स्त्री के नेत्र चमक उठते हैं।

कहती है : 'हाय कहीं डस गया ?'

'मैं यंत्र से कील दूँगा उसे।'

स्त्री को कौतुक है।

'चल ! डर मत।'

बाँह पकड़ कर उठाता है। स्त्री झुकीसी उठती है।

भयानक वन है। स्त्री पत्थर पर बैठी है। बीन बजने लगती है। काल बेलिया पंथी नागनाथ के गाल फूल कर कुप्पा होगये हैं।

निर्जन में वह सम्मोहक स्वर दूर दूर तक इन्द्रियों को शिथिल करता सा गूँजने लगता है। नागनाथ बड़ा पहुँचा

पड़ोस में एक नाइन है, वह कहती थी, जोगी अधरम हैं।'

'क्यों ?'

'कहते हैं मुसलमान का तुम खा लेते हो।'

'खाने में क्या है ?'

'कुछ नहीं ?'

'तेरा तेली पहले कौन था ?'

'वह तो देवी पूजता था। उन्होंने कहा, मुसलमान होजा। पंडत से चिढ़ा था, सो होगया। उसी के साथ मैं भी होगई। अब राजा हमारी तरफ़ होगया।'

'पर मुसलमान तुर्क अच्छे लोग नहीं हैं।'

'काजी कहता था कि जोग बुरा है, देवी देवता बुरे हैं। यह कैसे हो सकता है जोगी ?'

'मूर्ख है।'

स्त्री कहती है : 'तेली तो बाहर नमाज पढ़ता है, भीतर तो वहीं साधना करता है।'

'अब तूने कभी सिद्धि कराई है या नहीं ?'

'तुम करोगे ?'

'सोचता हूँ। इधर कई दिन से सुपमन नहीं चलाई।'

'जोग क्यों छोड़ते हो ? नागदेवता फिर बस में न होगा। गोरख पंथी कुछ आते हैं। एक मुझे देखकर बोला : यहाँ अखाड़े मंदिर में औरत क्यों आई। निकल जा यहाँ से। खबरदार जो आई। यह गुरु गोरख का ठाँव है। जोगी वह क्यों कहता था ? तुम भी तो जोगी हो !'

'वह गोरख के चलाये पथ मे है। हम शिव के चलाये पथ मे हैं। गुरु गोरख ने हमे जोग दिया। बडे पहुँचे सिद्ध थे। मगर हमारा मारग शिव का है न ? हमे बामाए साधना भी स्वीकृत है। भोटकनाथ तो है ही वामारगी।'

योगी उठता है।

'कहाँ चले ?'

'जगल !'

'बडा अधेरा है।'

'उससे क्या डर ?'

'भूत पिशाच ?'

'भैरव के आगे ?'

'मैं अकेली हूँ। मुझे डर लगता है।'

'चल मेरे साथ, तुझे साँप पकड कर दिखाऊँ।'

स्त्री के नेत्र चमक उठते हैं।

कहती है 'हाय कही डस गया ?'

'मै मन्त्र से कील दूँगा उसे।'

स्त्री को कौतुक है।

'चल ! डर मत।'

बाँह पकड कर उठाता है। स्त्री झुकीसी उठती है।

भयानक वन है। स्त्री पत्थर पर बैठी है। बीन वजने लगती है। काल बेलिया पथी नागनाथ के गाल फूल कर कुप्पा होगये हैं।

निर्जन मे वह सम्मोहक स्वर दूर दूर तक इन्द्रियो को शिथिल करता सा गूँजने लगता है। नागनाथ बडा पहुँचा

]

ा व्यक्ति है। 'यंत्री का लड़बड़ा' नहीं, न 'जिह्वा का
हड़ा' है। कभी कभी साधना के लिये स्त्री से आलिंगन
रता है, वैसे सदैव योग साधना में लगा रहता है। तेलिन
के नयन फट गये हैं आश्चर्य से।

नाग ! भयानक नाग को नागनाथ ने पकड़ लिया है।

अब वह मंत्र पढ़ कर उसको बांध रहा है। बांये हाथ से
उसने नाग को पकड़ रखा है ....

'चल !' नागनाथ उठ खड़ा हुआ है।

'क्या करोगे नाग का ?'

'गूगा पीर की सौगंध ! इसे एक राजपूत को देना है।
मैं इसकी चर्पटनाथ से कुछ दवा बनवाऊँगा।'

'काहे की दवा !'

'उसके पांच स्त्रियां हैं। और वह अकेला है। उससे
अपार वीरज पैदा होगा।'

स्त्री के नेत्र आश्चर्य, संकोच और लज्जा से फैल जाते हैं
और कहती है: 'अरे वह कुछ भी करले। मैं जानती हूँ पांचों
किस किस घाट जाकर लगती हैं।'

नागनाथ कहता है: अलेस को लेसूँ....

३

...गरनाथ को गिरनार की यात्रा से आने पर भी अभी
तक याद है।

गुहा में वृद्ध गैनीनाथ ध्यान में तल्लीन थे।

बाहर बैठे थे—निवृत्तिनाथ, ज्ञानेश्वर, सोपानदेव, मुक्ता-
बाई, चांगदेव, गोरा कुम्हार, विसोबा खेचर, नामदेव दर्जी,

साँवता माली, चोखा मेला मेहार, सेना नाई, जनाबाई दासी, कूर्मदास ब्राह्मण, और न जाने कितने थे वे ·

ब्राह्मण वत्सगोत्री त्र्यम्बक पत देशाधिकारी था। अकाल में लोक सेवा मे अपना सब कुछ लुटा बैठा। आपे गाँव मे उसका पुत्र हरिपन्त राजा सिंघण देव वाले युद्ध के बाद नाथ पथ में दीक्षित हुआ। उसका पुत्र विठ्ठलपत संन्यासी होगया और श्रीपाद स्वामी की आज्ञा से गृहस्थ धर्म मे लौट आया। उसी की संतान थी यह—निवृत्तिनाथ, ज्ञानेश्वर, सोपानदेव और मुक्ताबाई। उपनयन नही हुआ—समाज से तिरस्कृत के पुत्र थे न ? ब्राह्मणो ने पुन गृहस्थाश्रम में लौटने वाले को त्याग दिया। विठ्ठलपंत और पत्नी रुक्मिणी ने दु ख से प्रयाग में नदी मे कूद कर आत्महत्या करली। सिद्ध गैनीनाथ ने बच्चों को संभाला। सिद्ध की करुणा जागी। अब यह चारो अत्यत प्रसिद्ध थे।

ज्ञानेश्वर ने ब्राह्मणो को योग का गौरव दिखाया, गीता का भाष्य लिखा। वे सब तीर्थ यात्रा पर गये थे। वही मिला था भामदेव दर्जी और वहीं मिले चांग देव ··

पण्ढरपुर, उज्जैन, प्रयाग, काशी, गया, अयोध्या, गोकुल, वृन्दावन, द्वारका, गिरनार ·

वही मिले थे वे भरनाथ को····

यह थी मुक्ताबाई। एक बार नगी नहा रही थी। चांगदेव ने देखा तो मुँह ढंक कर लौट चला। मुक्ताबाई ने फटकारा : 'वृद्ध होगये, आत्मतत्त्व नही जाना। स्त्री पुरुष का व्यक्ति-भेद है ही क्या ?' चांगदेव को फिर तत्व बोध

]

आ व्यक्ति है। 'यंद्री का लड़बड़ा' नहीं, न 'जिह्व्या का
खूहड़ा' है। कभी कभी साधना के लिये स्त्री से आलिंगन
करता है, वैसे सदैव योग साधना में लगा रहता है। तेलिन
के नयन फट गये हैं आश्चर्य से।

नाग ! भयानक नाग को नागनाथ ने पकड़ लिया है।

अब वह मंत्र पढ़ कर उसको बांध रहा है। बाँये हाथ से
उसने नाग को पकड़ रखा है ....

'चल !' नागनाथ उठ खड़ा हुआ है।

'क्या करोगे नाग का ?'

'गूगा पीर की सौगंध ! इसे एक राजपूत को देना है।
मैं इसकी चर्पटनाथ से कुछ दवा बनवाऊँगा।'

'काहे की दवा !'

'उसके पाँच स्त्रियाँ हैं। और वह अकेला है। उससे
अपार बीरज पैदा होगा।'

स्त्री के नेत्र आश्चर्य, संकोच और लज्जा से फैल जाते हैं
और कहती है: 'अरे वह कुछ भी करले। मैं जानती हूँ पाँचों
किस किस घाट जाकर लगती हैं।'

नागनाथ कहता है: अलेस को लेसूँ....

२

झंगरनाथ को गिरनार की यात्रा से आने पर भी अभी
तक याद है।

गुहा में वृद्ध गैनीनाथ ध्यान में तल्लीन थे।

बाहर बैठे थे—निवृत्तिनाथ, ज्ञानेश्वर, सोपानदेव, मुक्ता
बाई, चाँगदेव, गोरा कुम्हार, विसोबा खेचट, नामदेव दर्जी

सांवता माली, चोखा मेला मेहार, सेना नाई, जनाबाई दासी, कूर्मदास ब्राह्मण, और न जाने कितने थे वे····

ब्राह्मण वत्सगोत्री त्र्यम्बक पंत देशाधिकारी था। अकाल में लोक सेवा में अपना सब कुछ लुटा बैठा। आपे गाँव में उसका पुत्र हरिपन्त राजा सिंघण देव वाले युद्ध के बाद नाथ पंथ में दीक्षित हुआ। उसका पुत्र विठ्ठलपंत संन्यासी होगया और श्रीपाद स्वामी की आज्ञा से गृहस्थ धर्म में लौट आया। उसी की संतान थी यह—निवृत्तिनाथ, ज्ञानेश्वर, सोपानदेव और मुक्ताबाई। उपनयन नहीं हुआ–समाज से तिरस्कृत के पुत्र थे न? ब्राह्मणों ने पुनः गृहस्थाश्रम में लौटने वाले को त्याग दिया। विठ्ठलपंत और पत्नी रुक्मिणी ने दुःख से प्रयाग में नदी में कूद कर आत्महत्या करली। सिद्ध गैनीनाथ ने बच्चों को संभाला। सिद्ध की करुणा जागी। अब यह चारों अत्यंत प्रसिद्ध थे।

ज्ञानेश्वर ने ब्राह्मणों को योग का गौरव दिखाया, गीता का भाष्य लिखा। वे सब तीर्थ यात्रा पर गये थे। वहीं मिला था भामदेव दर्जी और वहीं मिले चांग देव···

पण्ढरपुर, उज्जैन, प्रयाग, काशी, गया, अयोध्या, गोकुल, वृन्दावन, द्वारका, गिरनार····

वहीं मिले थे वे झंगरनाथ को····

यह थी मुक्ताबाई। एक बार नंगी नहा रही थी। चांग-देव ने देखा तो मुँह ढंक कर लौट चला। मुक्ताबाई ने फट-कारा: 'वृद्ध होगये, आत्मतत्त्व नहीं जाना। स्त्री पुरुष का व्यक्ति-भेद है ही क्या?' चांगदेव को फिर तत्व बोध

हुआ'''×

चाँगदेव भी कम नहीं था । शुक्लयजुर्वेदीय ब्राह्मण पुणतांबे क्षेत्र का ? योगी । सिद्धियों का गर्व था उसे''''सिद्धि से ऊपर मिली भक्ति·······

गोरा कुम्हार था । दो पत्नी थीं । दोनों को हुआ भी नहीं''''कच्चा घड़ा और कच्चा संत उसने परखा था । संत का रोष उसका कच्चापन था'''

द्वादश ज्योर्तिलिंगों में से एक का स्थान औंढिया नागनाथ का था । विसोवा खेचर, यजुर्वेदी ब्राह्मण था''''काम करता था सराफी का''''ज्ञानेश्वर ने खेचरी मुद्रा दी'' वृद्ध होगया था''''

यह नामदेव था । गृहस्थ । ब्राह्मण इसके विरुद्ध थे, परंतु यह दर्ज़ी दबा नहीं''''

इसी को ब्राह्मण परिसा ने घृणा से देखा था, अब वैठा था शिष्य बनकर परिसा भागवत्''''

नामदेव ने भँगरनाथ से पूछा था—पंजाव में तुर्कों का अत्याचार वहुत है, होसका तो वहाँ जाऊँगा'''शायद आयेगा वह''''उसी ने तुर्कों की गोहत्या की तृष्णा देखकर विद्रोह किया था और तुर्कों को हराया था'''

अरणभेंडी का साँवता ''माली'''''''ज्ञानदेव ने उसे जगाया था·······

मुर्दा जानवर उठाने वाला मेहार चोखा मेला'''इसे पण्ढर-पुर के विट्ठल के मँदिर में प्रवेश कराया गया था''''

सेना नाई जिसने राजा को उपदेश दिया था''''हजामत

× नाथपंथ में एक और परिवर्त्तन ।

हुआ...×

चाँगदेव भी कम नहीं था। शुक्लयजुर्वेदीय ब्राह्मण पुणतांबे क्षेत्र का ? योगी। सिद्धियों का गर्व था उसे....सिद्धि से ऊपर मिली भक्ति........

गोरा कुम्हार था। दो पत्नी थीं। दोनों को हुआ भी नहीं....कच्चा घड़ा और कच्चा संत उसने परखा था। संत का रोष उसका कच्चापन था...

द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक का स्थान औंढिया नागनाथ का था। विसोवा खेचर, यजुर्वेदी ब्राह्मण था....काम करता था सराफी का....ज्ञानेश्वर ने खेचरी मुद्रा दी.. वृद्ध होगया था....

यह नामदेव था। गृहस्थ। ब्राह्मण इसके विरुद्ध थे, परंतु यह दर्ज़ी दवा नहीं....

इसी को ब्राह्मण परिसा ने घृणा से देखा था, अब बैठा था शिष्य बनकर परिसा भागवत्....

नामदेव ने भँगरनाथ से पूछा था—पंजाब में तुर्कों का अत्याचार बहुत है, होसका तो वहाँ जाऊँगा...शायद आयेगा वह....उसी ने तुर्कों की गौहत्या की तृष्णा देखकर विद्रोह किया था और तुर्कों को हराया था...

अरणभेंडी का सांवता माली.......ज्ञानदेव ने उसे जगाया था........

मुर्दा जानवर उठाने वाला मेहार चोखा मेला...इसे पण्ढरपुर के विट्ठल के मँदिर में प्रवेश कराया गया था....

सेना नाई जिसने राजा को उपदेश दिया था....हजामत

× नाथपंथ में एक और परिवर्त्तन।

जीवन् मुक्त होगये थे। उसी का प्रयोग इस व्यभिचारी के लिये मैं करूँ ? असंभव ! नाथ मंदिर में तुम ऐसा व्यापार प्रारंभ कर रहे हो नागनाथ। गुरुदेव के आने पर इसका निर्णय किया जायेगा।'

नागनाथ का मुख रोष से तप्त हो जाता है। वह क्रुद्ध सा चला जाता है।

'तू जा !' चर्पट चिल्लाता है।

राजपूत भयभीत सा चला जाता है।

जैसे कुछ नहीं हुआ चर्पट कहता है : 'आ अवधूत ! तू योग्य पात्र है। तुझे मैं रससिद्ध कराऊँगा।'

झंगरनाथ दण्डवत् करके कहता है : 'जीवन सफल हुआ। आज से आप ही मेरे गुरु हुए ! गुरुदेव ! किंतु एक बात कहूँ ?

चर्पट देखता है।

'नागनाथ क्रुद्ध होगया है।'

'तो क्या हुआ ?'

'आप यहाँ की बातें जानते नहीं। मै यहाँ पहले भी रह चुका हूँ।'

'क्यों ?'

'नागनाथ गुरुदेव का मुँह चढ़ा है।'

'नाथ मंदिर के महंथ का ?'

झंगरनाथ कुछ लज्जित सा सिर झुका लेता है।

'तुम चिंता न करो। चर्पट किसी से नहीं डरता। गुरु गोरक्ष का शिष्य है वह ! और किसी का उसे भय नहीं। तुम बैठ कर मुझे सुनाओ कि नाथों ने दक्षिण में क्या किया

है ? मैं तुर्कों के अत्याचार से विक्षुब्ध हो उठा हूँ, मैंने जीवन्मुक्त रस पाया है। मैं संसार का दुख मिटा सकता हूँ, परंतु मुझे इस बर्बरता का अंत नहीं मिल सकता। जिधर जाता हूँ उधर ही मुझे हाहाकार दिखाई देता है। गोरक्षनाथ स्वयं शिव के अवतार हैं। अत्याचारियों का उन्होंने भी दमन किया था, और पथ भूल जाने पर गुरु तक को मार्ग पर वापिस ले आये थे।'

झंगरनाथ बैठता है।

दुपहर ढल चली है। ओटकनाथ मठ में आया है। उसके पीछे एक भंगिन आई थी, जो बाहर के पेड़ों के पीछे ही बैठ गई थी।

चर्पटनाथ झंगरनाथ को जड़ीबूटी दिखाने वन की ओर ले जा रहा है। भंगिन को देखता है तो पूछता है : 'कौन तू ? योगिमठ के पास क्यों आई है ?'

भंगिन मुस्कराती है।

झंगरनाथ धीरे से कहता है :' ओटक वामारगी है। वही इसे लाया है।'

घृणा से चर्पट का मुख विकृत हो गया है। वह कहता है : 'सिखवंती लौट जा। पतिवंती है ?'

'हाँ अवधू।'

'फिर क्यों आई है ?'

स्त्री सिर नीचा कर लेती है।

'कौन जाति है ?'

'भंगी !'

'ओटक ने धन का लोभ दिया है ?'

'हाँ अवधू ! मैं बहुत गरीब हूँ ।'

चर्पट कहता है : 'अच्छा, कल दिन में अपने पति के साथ आना। मैं तुम्हें धन दूँगा। योगी के पास अधिक नहीं है। परंतु एक गुणी का इलाज़ किया था। वह दे गया था। सोचा था उसे मठ को देदूँ। पर वह मैं तुझे दे दूँगा। जा। पति से बढ़कर तेरे लिये कुछ नहीं। वामारगी साधु आये तो उसे दण्ड देना न भूलियो।'

स्त्री रोती हुई दूर से ही दण्डवत प्रणाम करती है और चली जाती है। ओटक आता है तब देखता है स्त्री नहीं है।

'झंगरनाथ !'

'क्या है, अवधू !'

'एक स्त्री आई थी !'

'हाँ।'

'कहाँ गई ?'

'घर !' चर्पट कहता है।

'घर ! कैसे ?'

'मैंने भेजदी !'

'वह बहुत गरीब थी। मैं उसे दया से कुछ देना चाहता था।'

'किस कीमत पर ?'

'अवधू ! तुम साधना का मखौल उड़ा रहे हो ?'

'साधना ! यही है यतिराज गोरक्ष की साधना ? पाप मुँह खोलकर पुकारता है और उसे लज्जा नहीं आती।'

'गुरुदेव के आने पर
'तुम्हारे पाप को दण्ड दिया जायेगा।'
चर्पट निर्भीक है।

ओटकनाथ फुफकारता हुआ चला जाता है। चर्पट कहता है 'क्या होरहा है। नाथ पथ को! तुर्क सब नष्ट किये देरहे हैं। केवल ब्राह्मण लडते हैं उनसे! योगिमार्ग ही हिंदू और मुसलमानो मे भेद नही करता। दक्षिण के इन सतो ने अलख जगाई है भगरनाथ! समस्त प्रजा के लिये यदि यह त्रिशूलधारी योगी नही उठेंगे तो शीघ्र ही यह बर्बर तुर्क नाथ मदिरो को भी धूल मे मिला देंगे। वे योगी और हिंदू का कोई भेद नहीं करते। क्या आदिनाथ का बताया मार्ग, यह जीवन्मुक्त सिद्धियाँ यो ही नष्ट हो जायेंगी?

भंगरनाथ देखता है। वही दिव्य चमक है चर्पट के मुख पर जो गैनीनाथ के मुख पर थी जब सब जातियो ने एक साथ भोजन किया था।

५

भरथरी के शिष्य रतननाथ मुसलमानो में प्रिय योगी थे। उनकी काबुल और जलालाबाद में बडी मानता थी। उन ही के पथ के एक व्यक्ति के साथ महत लौट आये हैं।

चर्पट नाथ प्रणाम करता है।

'आदेश अवधू! नागनाथ और ओटक नाथ तुम्हारे विषय में कहते थे कि तुम साधना मे अडगा डालते हो।'

चर्पट कहता है 'गुरुदेव! नागनाथ ने कहा था कि मैं एक व्यभिचारी को औषधि दूँ और ओटक ब्रह्मचर्य पर

व्याघात करने को एक स्त्री को लाया था।'

गुरु कहते है : 'सांसारिक गृहस्थ तो माया और विषय में फँसे ही रहते हैं। योगियों को उन पर दया करनी चाहिये चर्पट नाथ ! जानते हो वह नाथों का कितना श्रद्धालु भक्त है ! मठ को कितना दान करता है ?'

चर्पटनाथ को लगता है कि धरती पर नहीं खड़ा है।

गुरु कह रहे हैं : 'साधना के अनेक स्तर हैं जिनके विभिन्न अधिकारी हैं। वज्रोली के लिये मध्यम अधिकारी को स्त्री की आवश्यकता पड़ भी जाती है। उससे ब्रह्मचर्य नहीं बिगड़ता। आदिनाथ स्वयं पार्वती के साथ रहते हैं। जाओ ! अब ऐसी बात हमारे कान में न आये।'

चर्पट चलता है। तभी भंगिन आकर चरणों में प्रणाम करती है। साथ है उसका पति।

गुरु देखते हैं और माथे पर बल पड़ जाता है।

'यह कौन हैं ?'

'दीन दुखी हैं गुरुदेव !'

'क्यों आये हैं ?'

'मेरा एक भक्त आया था। मैंने उसका रोग दूर किया था। वह गुणी मुझे मठ के लिये कुछ सोना दे गया था। वही उनकी दरिद्रता देख कर मैंने इन्हें देने को बुलाया था।'

हठात् गुरु का स्वर उठता है : 'चर्पटनाथ ! यह दया तो गृहस्थ के लिये है। नाथों का मन्दिर दान लेता है, देता नहीं, क्यों कि यहाँ सांसारिक विषयों को छोड़ने वाले त्यागी रहते हैं। वह धन तुम्हारा नहीं, मन्दिर का है। उसे देने

वाले तुम कौन होते हो ?'

'गुरुदेव ! यह अत्यंत दरिद्र है।'

'वह विधाता का लेख है चर्पट ! उसे तुम मिटा सकते हो ?'

गुरु देखता है अपने साथी की ओर। वह उदासी है। कहता है—'सब विषय है। मोह है। योग साधना ही मुक्ति का मार्ग है। उसके बिना कोई उपाय नहीं।'

चर्पट देखता है और सहसा ही वह कहता है : 'कितने ही व्यक्ति विकारो में नष्ट हो चुके है। विषया की डोरी जगत की फांसी बनी हुई है। कितने ही कच्चे घड़े उदासी बने फिरते है। असली अर्थ को नही खोजते और चौरासी लाख योनियो मे भटकते फिरते हैं। बार बार वे यम को फांसी मे बांधे जाकर नरक को भेजे जाते हैं।'

उदासी का मुख तमतमा जाता है।

गुरु चिल्लाता है : 'चर्पट बंद कर यह बकवास !'

उस कठोर स्वर को सुन कर दो चार तगडे जोगी आ जाते हैं और गुरु की ओर उत्सुकता से देखते हैं।

निकाल दो इस नीच भंगी को और इसकी इस स्त्री को।

भंगी और भंगिन कांपते हुए भागते है। वे आर्त्त से चिल्ला रहे हैं। हवा मे स्तब्धता छागई है।

भंगरनाथ पास आरहा है।

चर्पट हट जाता है।

गुरु का क्रोध भभकता रहता है।

रात होगई है।

व्याघात करने को एक स्त्री को लाया था।'

गुरु कहते है : 'सांसारिक गृहस्थ तो माया और विषय में फँसे ही रहते हैं। योगियों को उन पर दया करनी चाहिये चर्पट नाथ ! जानते हो वह नाथों का कितना श्रद्धालु भक्त है ! मठ को कितना दान करता है ?'

चर्पटनाथ को लगता है कि धरती पर नहीं खड़ा है।

गुरु कह रहे हैं : 'साधना के अनेक स्तर हैं जिनके विभिन्न अधिकारी हैं। वज्रोली के लिये मध्यम अधिकारी को स्त्री की आवश्यकता पड़ भी जाती है। उससे ब्रह्मचर्य नहीं बिगड़ता। आदिनाथ स्वयं पार्वती के साथ रहते हैं। जाओ ! अब ऐसी बात हमारे कान में न आये।'

चर्पट चलता है। तभी भंगिन आकर चरणों में प्रणाम करती है। साथ है उसका पति।

गुरु देखते हैं और माथे पर बल पड़ जाता है।

'यह कौन है ?'

'दीन दुखी हैं गुरुदेव !'

'क्यों आये हैं ?'

'मेरा एक भक्त आया था। मैंने उसका रोग दूर किया था। वह गुणी मुझे मठ के लिये कुछ सोना दे गया था। वही इनकी दरिद्रता देख कर मैंने इन्हें देने को बुलाया था।'

हठात् गुरु का स्वर उठता है : 'चर्पटनाथ ! यह दया तो गृहस्थ के लिये है। नाथों का मन्दिर दान लेता है, देता नहीं, क्यों कि यहाँ सांसारिक विषयों को छोड़ने वाले त्यागी रहते हैं। वह धन तुम्हारा नहीं, मन्दिर का है। उसे देने

वाले तुम कौन होते हो ?'

'गुरुदेव ! यह अत्यत दरिद्र है ।'

'वह विधाता का लेख है चर्पट ! उसे तुम मिटा सकते हो ?'

गुरु देखता है अपने साथी की ओर । वह उदासी है । कहता है—'सब विषय हैं । मोह है । योग साधना ही मुक्ति का मार्ग है । उसके बिना कोई उपाय नही ।'

चर्पट देखता है और सहसा ही वह कहता है 'कितने ही व्यक्ति विकारो में नष्ट हो चुके हैं । विषया की डोरी जगत की फांसी बनी हुई है । कितने ही कच्चे घडे उदासी बने फिरते हैं । असली अर्थ को नही खोजते और चौरासी लाख योनियो में भटकते फिरते हैं । बार बार वे यम की फांसी मे बाँधे जाकर नरक को भेजे जाते हैं ।'

उदासी का मुख तमतमा जाता है ।

गुरु चिल्लाता है · 'चर्पट बद कर यह बकवास !'

उस कठोर स्वर को सुन कर दो चार तगडे जोगी आ जाते हैं और गुरु की ओर उत्सुकता से देखते हैं ।

निकाल दो इस नीच भ गी को और इसकी इस स्त्री को ।

भगी और भगिन कांपते हुए भागते हैं । वे आर्त्त से चिल्ला रहे हैं । हवा मे स्तब्धता छागई है ।

झ गरनाथ पास आरहा है ।

चर्पट हट जाता है ।

गुरु का क्रोध भभकता रहता है ।

रात होगई है ।

अंधकार में चर्पट गारहा है—

साधो आवहि से घरि बारी !

सेवा करहिगे हमारी !

हेठि बिछावहिगे तुलि तुलाई ।

ऊपर ऊचा करि बैठाई ।

स्वर अंधेरे में फैल रहा है । गुरु जाग रहा है । भंगरनाथ अपनी मृगछाला पर करवट बदल रहा है । उसका कंथा सिरहाने है ।

चर्पट गारहा है—

जति कति की माइआ लइ आइआ ।

फूलि बैठा निरंजनु पाइआ ।

सिखि की घरिनी लागे पाइ ।

उस का रूप देखि उसका कामु ढलि जाइ ।

गुरु के कानों में वे शब्द पड़ते हैं । शिष्य की स्त्री पाँवों से लगती है और गुरु का काम उसका रूप देखकर ढल जाता है । किस पर है यह आक्षेप ! उसी राजपूत पर ! जो अपनी पाँचवी स्त्री को संतान के लिये लाकर गुरु के चरणों पर बैठा था । गुरु को क्रोध आरहा है । स्वयं गुरु से !

गुरु ने उसके लिये एकांत में मन्त्र किया था । उसी पर आक्षेप !

और चर्पट गारहा है—

सिखि की घरनि का मुख ले चचोलै ।

जैसे कुत्ता हाडिकिउ बिरौले ।

वह शिष्या का चुंबन ऐसे करता है जैसे कुत्ता हड्डी

छिछोंडता है। झंगरनाथ घवरा रहा है। क्या कर रहा है चर्पट यह !

परन्तु चर्पट गारहा है—

सिखि मरें गुरु रोवै,
निर अपराधि सोगीहोवै।
एक घरू तिआगिआ
सि घरि लिआ इआ,
छुटिकिया सा परू
वहुरि भरमाइया !

गुरु नही बैठ सकता। यह नही सहा जा सकता। यह स्पष्ट आक्रोश है। त्याग पर लाछन है। यह गुरुमार्ग पर प्रहार है। सीधे गुरु ही भरमा गया है। यदि यह नही रोका गया तो पन्थ ही नष्ट हो जायगा।

परन्तु चर्पट गारहा है—

दइया न उपजा अरु गुरू कहाइआ।
प्रणिवै चरपटु ते नरकि सिधाइआ।

दया नही उपजी और गुरु कहलाता है। चर्पट विनम्र कहता है कि वह नरक ही जायेगा।

नागनाथ धीरे से कहता है : 'सुना गुरुदेव !'

गुरू अवरुद्ध क्रोध मे है, बोल नही पाता।

इसे दण्ड दें गुरुदेव !

श्रोटक झांक कर देखता है और कहता है . 'नही। समय नहीं है। चर्पट के पास तो तरुण जोगी मस्त होकर बैठे सुन रहे हैं।'

]

'इसे बाहर निकाल दो। आज से यह पंथ से वहिष्कृत
ा।'

'पंथ से वहिष्कृत !' झंगरनाथ पुकार उठता है—'गुरुदेव !
क्रोध न करिये। चर्पट अभी नादान है।'

परन्तु चर्पट ठठा कर हँसा है। तरुण योगी उसके साथ
हैं। कहते हैं—'चलिये गुरुदेव ! चलें।'

चर्पट हँसता है। झंगरनाथ कहता है: 'चर्पटनाथ ! तुम
सचमुच गुरु होने के योग्य हो। तुम्हें पंथ से कौन निकाल
सकता है। चलो। आदिनाथ के मार्ग को फिर से शुद्धि की
आवश्यकता है। उसके लिये जीवन की बलि देनी होगी।'

द्वार बन्द हो गया है। बाहर त्रिशूल धारी जोगी अंधकार
में गा रहे हैं और बढ़ रहे हैं एक ओर....

चर्पट गा रहा है और फिर वे समवेत स्वर उठाते हैं—

सरिवाना नादि रागि नहीं जाहि,
नेत्रि रूपु ना देखि लुभाहि।
नासिका गंध परसु नहीं होइ,
खटि रसि को जिहिवा मरै न रोई....

तो क्या अब योगियों में जिह्वा षट्रस के लिये रो रो
कर मरती है ? नयन रूप के लोभी हो गये हैं ?

दूर से मंदिर तक स्वर पहुँचता है—

जीती नहीं काइआ
अरु सिध कहाइआ
चरपटु प्रणवै ते नरकि सिधाइआ....

काया नहीं जीती और सिद्ध कहलाते हैं, वे क्या न

अतिरिक्त कहीं और जा सकते हैं ?···

वह स्वर गूँजता जारहा है वन में····

भंगरनाथ कहता है : 'गुरुदेव ! किस ओर !'

'उधर चलो भंगरनाथ, जिधर लोगों को जोगियों की आवश्यकता है। यहाँ बैठे बैठे नहीं रहना है। मन को बांधने से मणि प्राप्त होगी अन्यथा सब ही श्रम है। मनसा नागिन है। उसे ही ठहराना होगा। मणि की गति उसी से जानी जाती है। मनसा मन के आगे ही बसती है और सर्पिणी वन वन कर वह मणि को डसा करती है।'

भंगरनाथ आत्मविश्वास से विभोर हो उठता है।

—६—

भोर हो गई है।

वन के किनारे गाँव है जहाँ चर्पट नाथ की धूनी लगी है। शिष्य पास बैठे हैं। भंगरनाथ आग सुलगा रहा है।

चर्पट कह रहा है : 'आत्मब्रह्म बाहर नहीं भीतर है अवधू ! बाहर संसार में परमात्मा नहीं मिलता। जो वन वन फिर कर कन्द आहार करते हैं, तप में जलते हैं, और शरीर को क्षीण करते हैं, हठ से निग्रह करते हैं वे मणि को भूल कर यह सब बातें करते हैं।'

'तो गुरुदेव !' भंगरनाथ कहता है—'फिर मुक्ति कैसे हो ?

'पावन को सिद्ध करो अवधू ! पवन को ! पवन और रससिद्ध से ही मुक्ति होती है। खा पीकर जोग करना तो योग को बिगाड़ना है। तत्त्ववेत्ता बनो ! मान अपमान का अहंकार छोड़ कर इन्द्रियजित बनो। यही सिद्धमत है।

फटकनाथ, तरुण जोगी है । पहले मुसलमान मनिहार
। बाद में पंथ में आगया । कहता है—'गु देव ! मैं भिक्षा
ग लाता हूँ ।'

'भिक्षा !' चर्पट कहता है–'नहीं फटकनाथ । भिक्षा मत
माँगो । मैं तुम्हें रससिद्धि दूँगा । योग्य, दुखी और सज्जन का
उपकार करो और जो श्रद्धा से दे उससे पेट भरो । जीभ की
तृष्णा छोड़ दो । रस का व्यापार मत करो । जो कमण्डलु में
जो कुछ दे जाये, वही खाओ । संग्रह मत करो । जो अधिक हो
वह दरिद्रों को बाँट दो ।'

और चर्पट गाता है—

फोकिटि फोकिटि कथै ज्ञान ।

फोकट में ज्ञान कहाँ ?

ऐसा तो सदा मडी धरे ध्यान । अरे ऐसा साधु तो कलि
का साधु है । स्वारथ छोड़ो । यह लोक स्वारथ में जंजाल है ।
काया एक वृक्ष है और चित्त मानिक है । दस दिशा में भटकते
मत फिरो । इससे सिद्धि नहीं मिलेगी । ढीला कछोटा न पहनो ।
घर घर नैन न पसारो । उससे तो न खाया पचता है और न
वाणी स्फुरित होती है । फोकट रहना और ज्ञान यह दोनों
साथ कैसे रह सकते हैं ? यह तो कलयुग के चिन्ह हैं ।

शिष्य मस्त होकर गाते हैं—

कथै ज्ञान अरु फोकुट रहिना,

चरपट कहे कलिजुगि के चिहिना…

संध्या हो गई है ।

...फिर मिले हैं । इस समय वे गुरु गोरख और

की पवित्र कथाएँ कह सुन रहे हैं।

चर्पट कहता है–'जिसका जो काम है वह उसी को सुन्दर लगता है। और कोई करे तो वह ठगाई है। कनक और कामिनी के मेल में जो रहता है, उस योगी का सब कुछ ऐसा समझो जैसे फोकट में आया, फोकट में गया। फोकट में जो बैठा विवाद करता है, उसे मैं उपाधी कहता हूँ। केवल नाम धारण है वह। गुरु गोरख कह गये हैं कि तृष्णा और लोभ का परित्याग करो। सहज युक्ति से आसन करो। तन मन और पवन को दृढ़ करो। तन्त्र, मन्त्र, जन्त्र, गुटिका और धातु के पाखंडों को छोड़ दो। भैरूँ मंत्र वीर वेताल इत्यादि की सिद्धि का अंधकार छोड़ डालो। जड़ी बूटी का नाम मत लो। इनसे सिद्धि नहीं मिलती। यह तो लोकोपकार मात्र कर सकती हैं। राजद्वार में मत जाओ, वहाँ योगी को सुवर्ण बाँध लेगा, स्तंभन, मोहन और वशीकरण और उच्चाटन निंदित कर्म हैं। पवन के टूटने से काया छीजती है। तीर्थों और व्रतों से कोई लाभ नहीं। गिरि पर्वत पर चढ़ चढ़ कर इस तरह अपने प्राणों का नाश मत करो। बनिज व्योपार मत करो। मांस और मदिरा मत छुओ। नारी की चोरी मत करो। सुरापान और भङ्ग को पास न आने दो।'

चर्पट कहता है। भंगरनाथ सुन रहा है, सुन रहे हैं शिष्य।

अँधेरे में धूनी जल रही है।

और चर्पट धीरे-धीरे गा रहा है—

तत् बेली लो, तत बेली लो,

अवधू गोरषनाथ जांणीं
डाल न मूल, पुहुप नहीं छाया
विरधि करै बिन पाँणी····

किंतु दूर ग्राम में अब कोलाहल सुनाई दे रहा है। योगी उठ बैठते हैं।

कोलाहल भयानक होता जा रहा है। चीत्कार सुनाई दे रहे हैं। योगी समझ नहीं पा रहे हैं।

फटकनाथ कहता है : 'लगता है गाँव पर किसी ने आक्रमण कर दिया है।'

'कौन करेगा इस समय ?'

'वही तुर्क होंगे। कोई सुन्दर स्त्री होगी। उसे पकड़ने आये होंगे। और गाँव वालों ने रोका होगा।'

चर्पटनाथ नहीं बोल रहा। स्तब्ध बैठा है। झंगरनाथ कहता है : 'नासिक से आते में देखा था, जहाँ जहाँ इनके पाँव गये हैं, वहाँ इन्होंने मन्दिरों को भग्न कर दिया है। गाँव-गाँव उजाड़ दिये हैं। जगह जगह स्त्रियों को छीन ले गये हैं।

'क्या महमद (मुहम्मद) ने ऐसा कहा है ?' फटकनाथ विक्षुब्ध सा पूछता है।

'नहीं,' चर्पटनाथ कहता है। 'काजी मुला कहते हैं। मैंने देखा है वे ग्रंथों का नाश करते हैं।'

'नाथों से नहीं बोलते।'

चर्पट धूनी की अग्नि को देखता रहता है। और कह उठता है : 'जो दूसरे के मन्दिर और धर्म ढहाता है वह अच्छा आदमी नहीं है। महमद मनुष्य ही तो था। वह क्या योगी

था ? नहीं । घरगिरस्ती था। वह क्या सहजानन्द, ब्रह्मानन्द प्राप्त कर सका था ? क्या योगी जो कि ब्राह्मण से भी श्रेष्ठ है, वह अपना योग छोड़ देगा ? जैसे हिंदू माया ग्रस्त हैं वैसे ही मुसलमान भी ससारी है। योगी के लिये दोनों पशुभाव में बद्ध हैं। क्या योगी अब इनसे पराधीन होकर रहेगा ?'

'नहीं !' झंगरनाथ कहता है।

हाहाकार शांत हो चला है। शायद लुटेरे चले गये हैं।

'झंगरनाथ !'

'गुरुदेव !'

'अब गांव में लाशें पड़ी होंगी ?'

'हां गुरुदेव !'

'उनका रक्षक कौन है ?'

'कोई नही गुरुदेव !'

'योगी का काम क्या है ?'

'दया गुरुदेव !'

'रुद्र को क्रोध क्यो आता है ?'

'राक्षसों और असुरो को मदाघ देखकर।'

'तो चलो ! फिर गुरु गोरक्ष की यही आज्ञा है।'

योगियो का दल उठ पड़ता है।

गांव लुटा पड़ा है। गांव वाले देखते हैं। त्रिशूलधारी योगी आगये हैं और तब चर्पटनाथ कहता है : 'अलख निरजन का ध्यान करो संसारियो ! गुरु की आज्ञा है, अत्याचार से युद्ध करके लोक की रक्षा करो'''

गांव वाले त्रिशूलों को देखते हैं और पास आजाते हैं।

भाग-२

ऐसा चर्पटनाथ के सिद्धिकाल के प्रथम चरण में देखा और देख रहा है—

—१—

सुल्तान बलबन की मृत्यु के उपरान्त साम्राज्य में झगड़े प्रारंभ होगये। १७ वर्ष का कैक़ोबाद, दिल्ली के कोतवाल फख़रुद्दीन के षडयन्त्रों के फलस्वरूप सम्राट घोषित हुआ। आजीवन कठोर देखरेख में पला बुगराखाँ हठात् अब नासिरुद्दीन महमूद बुगराशाह वन बैठा और कैंकोबाद और बुगराखाँ दोनों सुरा सुन्दरियौ के ढेर में डूब गये। फख़रुद्दीन का भतीजा निजामुद्दीन दिल्ली में राजकाज संभालता था। बलबन द्वारा राज्यसिंहासन के निर्वाचित उत्तराधिकारी क़ैखुसरू को निजामुद्दीन ने रोहतक में छल से मरवा डाला। मलिक घबरा गये। फिर निज़ामुद्दीन ने सुल्तान के पुराने वज़ीर ख्वाजा खतीर को गधे पर बिठा कर राजधानी में निकलवाया। फिर मंगोलों के सरदारों पर राजद्रोह का लांछन लगा कर प्रासाद में क़त्ल कराके नदी में फिकवा दिया। उसने भीतर ही भीतर पलते असन्तोष को नहीं देखा। खिलज़ियों ने तुर्कों के विरुद्ध संगठन किया और आरिजेममालिक जलालुद्दीन फीरोज़ खिलजी को अपना नेता बना लिया। किन्तु खिलज़ियों ने ऐयाश क़ैकोबाद

को शीशमहल मे मारकर नदी में फेंक दिया और जलालुद्दीन फिरोज़ खिलजी की गद्दी पर चढा। कुछ ही दिन में वह अपने शत्रुओं को मिटा कर सुल्तान बन गया। किंतु वह सादगी से रहता था, जिसके कारण उसके सर्दार दुखी थे। बल्बन के भतीजे छज्जूखाँ ने विद्रोह भी किया किन्तु वह पराजित हुआ।

हाथ पाँव बँधे हुए छज्जूखाँ को देखकर वृद्ध जलालुद्दीन रोने लगा। उसने काँपते शब्दो में कहा : 'यह है उस सुल्तान का कुल ! आज इसकी ऐसी अवस्था ? यह मुसलमान रक्त है। इसे मैं नही बहा सकता।'

सुल्तान जलालुद्दीन का भतीजा अलाउद्दीन अपने कमरे में बैठा था। उसके पास एक व्यक्ति और था।

अलाउद्दीन एक सुदृढ व्यक्ति था। अन्त में उसने कहा : 'तो यह सुल्तान कमजोर है। फिर ?'

'उन्होने चोरो को सजा नही दी।'

'तो क्या किया ?'

'उन से कसम ले ली कि वे आयन्दा चोरी नही करेंगे।'

अलाउद्दीन मुस्कराया। दूसरे व्यक्ति ने कहा : 'और शायद आपने भी सुना हो ?'

'क्या ?'

'ठगो को ले जाकर नावों में भेजा गया और बगाले में आज़ाद कर दिया गया।'

'तो यो बागियो को एक जगह से दूसरी जगह भेजने से क्या कोई हल निकल आयेगा ?'

'सुल्तान से डरता ही कौन है ?'

'क्यों ?'

'आये दिन सरदारों के यहाँ सुल्तान के खिलाफ़ नयी नयी बातें सुनाई देती हैं।'

'वह मुझे बताओ।'

अभी एक महफ़िल में लोग शराब पीते हुए सब भूल गये। एक ने कहा : 'सुल्तान तो अहमद छाप ही होने के लायक था। उन्होंने सुल्तान न कह कर फ़िरोज़ कहा !'

'अच्छा !'

'हाँ। शराब के नशे में एक कह उठा कि वह ककड़ी की तरह सुल्तान के टुकड़े-टुकड़े करके ताजुद्दीन कूची को तख़्त पर बिठा देगा। इसका पता सुल्तान को चल गया।'

'तब तो सज़ा दी होगी !'

'सुनिये तो।'

'अच्छा ! फिर भी नहीं ?

'सुल्तान बहुत नाराज़ हुए। उन बाग़ी सरदारों को बुलाकर सुल्तान ने अपनी तलवार उनके सामने डाल दी और कहा—'हिम्मत है तो उठा लो और मुझे मारो !'

अलाउद्दीन आश्चर्य्य से देखता रहा।

'किसी ने साहस नहीं किया। वे सब चुप खड़े रहे। आखिर मलिक नुसरत शाह ने सुल्तान के गुस्से को ठंडा किया और उन लोगों को माँफी दिलायी। और यह डर दिखाया गया कि आयंदा अगर कोई बात सुनी गई तो उन्हें अरक़ाली खाँ की मातहती में रखा जायेगा। अरक़ाली को तो आप खूब जानते हैं। बड़ी ज़बरदस्त सज़ा देता है।'

'हुआ यह कि काज़ी ने षडयंत्र रचा कि नमाज़ में सुल्तान को मारा जाये। इरादा था कि सिदीमौला को खलीफ़ा घोषित किया जाये और काज़ी को सुल्तान की हुकूमत मिल जाये। लेकिन भेद खुल गया। सारे षडयंत्रकारी पकड़े गये। सुल्तान ने कहा कि इन्हें आग छुला कर इनकी सचाई की सनद ली जाये। पर मौलवियों ने कहा कि यह इस्लाम के खिलाफ़ था। शेख अबू बक्र तुसी के मुरीदों की मौजूदगी में सुल्तान के सामने सिदी मौला पकड़ कर लाया गया। सुल्तान ने उन मुरीदों की तरफ देखकर कहा: 'आप दरवेशो! क्या इस मौला से मेरे लिये तुममें से कोई बदला नहीं ले सकता?' सुनते ही एक दरवेश ने मौला पर उस्तरा लेकर हमला किया और उसे कई जगह ज़ख्मी कर दिया।'

'उस्तरा लेकर!' अलाउद्दीन मुस्कराया।

'हाँ हुज़ूर! अरक़ाली खाँ को चैन कहाँ! फ़ौरन एक फ़ीलवान को हुक्म देकर हाथी मँगवाया और मौला को उसके पैरों तले कुचलवा दिया। काज़ी चुपचाप भाग निकला और बदाओं में जा छिपा। उसके साथियों को चुन चुन कर मारा गया। पर मौला के मरने से रिआया बहुत नाराज़ रही। उस रोज़ एक तूफ़ान भी आया। बड़ा भयानक था वह!'

'वह सब चलता है।'

'उसके बाद अकाल पड़ा हुज़ूर!'

'और गेहूँ एक जीतल का सेर तक मिलने लगा।' अलाउद्दीन ने व्यंग्य से कहा।

'तो सुन चुके हैं?' अलप खाँ ने कहा।

'सुन तो यह भी चुका हूँ कि बहुत से हिंदू सिवालिक [
दिल्ली आकर जमुना में डूब कर मर गये क्योंकि वे भूखे म
रहे थे !'

'यह दुरुस्त है।'

'अच्छा रणथभौर की घटना का खुलासा सुना है कुछ ?'

'झाँई में सुल्तान ने बुतों को तोड़ा, मन्दिरों को गारत किया और रथभँवर घेर लिया। वहाँ का राय अपने रावतों को लेकर किले में जा घुसा। राजपूतों की बहादुरी के सामने सुल्तान की एक न चली !'

'राजपूत बहुत बहादुर होते है ?' अलाउद्दीन ने ठंडे स्वर से पूछा।

'हां सुल्तान को तो हार कर लौटना पड़ा !' अलय खां ने कहा।' अहमद छाप ने तो लौटने का विरोध किया, लेकिन सुल्तान ने कहा—मै बुड्ढा हूँ। क्या करूँ ? मैं मुसलमानों का खून बेकार नहीं बहाऊँगा।'

अलाउद्दीन ने कहा : 'अजीब बात रही ! इससे तो काफ़िरों का हौंसला बहुत बढ़ गया होगा !'

'अभी आपने हाल की बात नहीं सुनी।'

'कहो।'

'हलाकू के नाती अब्दुल्ला के हमले को तो आप
ते है ?'

'न क्यों जानूँगा ?'

ह डेढ़ लाख फौज लेकर दिल्ली की तरफ बढ़ा। सुनम में
की फ़ौज ने उसे घेर लिया। सधि हुई ! अब्दुल्ला तो

घूरने लगा।

चंपा ने कहा : 'हो कोई ! मुझे क्या ! मुझे तो तब भी यही गंदी ज़िंदगी बितानी थी, अब भी बितानी है। तुम लोग तो मुसलमान हो ?'

अलाउद्दीन ने गर्व से कहा : 'हम काफ़िरों को हराकर दीन के झंडे को उड़ाते हैं।'

चँपा ने हँस कर कहा : 'दीन के झंडे से मेरी ज़िंदगी बदल जायेगी ? मुझे मुसलमान बना लो ! फिर मैं तवायफ़ नहीं रहूँगी !'

अलाउद्दीन की भौं सँकुचित होगईं।

'तू बड़ी चंचल है।' शराब के नशे ने कहा।

स्त्री ने कहा 'राजा ऐसे ही जीतते हैं, हारते हैं। तलवार की लड़ाई में धरम की आँट क्यों लगाते हो तुम लोग !'

अलाउद्दीन ने देखा। वह निर्भीक थी।

स्त्री ने फिर कहा : 'तुम सचमुच अपने को विजेता समझते हो ?'

अलाउद्दीन के माथे पर बल पड़ गये।

'अकेली स्त्री से बलात्कार करने वाले लोग विजेता होते हैं ?'

अलाउद्दीन चिलाया : 'चुप रह औरत ! तू जानती है तू किससे बातें करती है ? तू पराजित है। तू लूट का माल है। फ़तह हमारी है। हमारे साथ खुदा है।'

'और हमारे साथ ?'

'कुफ़ !'

लाई गई थी। बाहर सैनिक अनेक स्त्रियों के साथ नगर में बलात्कार करते घूमते थे। आग लगाई जारही थीं। अलाउद्दीन उन सर्वश्रेष्ठ सुंदरियों को बलपूर्वक अपने आनंद का साधन बना रहा था।

खेमे के बाहर अलपखाँ के विश्वस्त सेवक पहरा दे रहे थे और अन्यत्र अलप खाँ भी व्यभिचार में मत्त था।

दीपालोक में जब अलाउद्दीन ने तातारी दासियों द्वारा नंगी की हुई सुकुमारी चंपा को देखा, चंपा मुस्करा दी। निर्लज्ज सी थी वह।

एक दासी ने कहा : 'मलिक ! यह नाचती अच्छा है। यह मेलसा की मशहूर तवायफ़ है।'

अलाउद्दीन ने उसे देखा। वह दूध में धोई सी लगती थी।

उसने दासी को बाहर भेज कर शराब से भरा प्याला मुँह से लगा कर कहा : 'तेरा नाम क्या है ?'

चंपा ने मोतियों से दाँत दिखाते हुए हँसते हुए कहा : 'चंपा !'

'तू हँसती क्यों है ? तुझे हम लोगों से डर नहीं लगता ?'

'डर ? क्यों ? तुम लोगों में क्या ख़ास बात है ?'

'हम विजेता हैं।'

चंपा खिलखिला कर हँस पड़ी।

अलाउद्दीन को आश्चर्य हुआ।

'क्यों ? क्या बात है ?' उसने पूछा !

'तुम समझते हो तुम विजेता हो !'

अलाउद्दीन ने आश्चर्य से प्याला रख दिया। वह उसे

घूरने लगा।

चंपा ने कहा : 'हो कोई ! मुझे क्या ! मुझे तो तब भी यही गंदी ज़िदगी बितानी थी, अब भी बितानी है। तुम लोग तो मुसलमान हो ?'

अलाउद्दीन ने गर्व से कहा : 'हम काफिरों को हराकर दीन के झंडे को उड़ाते हैं।'

चंपा ने हँस कर कहा : 'दीन के झंडे से मेरी ज़िंदगी बदल जायेगी ? मुझे मुसलमान बना लो ! फिर मैं तवायफ़ नहीं रहूँगी !'

अलाउद्दीन की भौं सँकुचित होगईं।

'तू बड़ी चंचल है।' शराब के नशे ने कहा।

स्त्री ने कहा 'राजा ऐसे ही जीतते हैं, हारते हैं। तलवार की लड़ाई में धरम की आंट क्यों लगाते हो तुम लोग !'

अलाउद्दीन ने देखा। वह निर्भीक थी।

स्त्री ने फिर कहा : 'तुम सचमुच अपने को विजेता समझते हो ?'

अलाउद्दीन के माथे पर बल पड़ गये।

'अकेली स्त्री से बलात्कार करने वाले लोग विजेता होते हैं ?'

अलाउद्दीन चिलाया : 'चुप रह औरत ! तू जानती है तू किससे बातें करती है ? तू पराजित है। तू लूट का माल है। फ़तह हमारी है। हमारे साथ खुदा है।'

'और हमारे साथ ?'

'कुफ्र !'

नग्न कंधों को सहलाया। स्त्री उठकर बैठ गई और उसने अपनी कुहनी तकिये पर टेक कर अपनी हथेली पर अपना गाल रख लिया। उसने उसकी आँखों में आँखें डालकर कहा : 'मलिक ! तुम तो सुल्तान नहीं हो ?'

'नहीं !'

'अभी तक सुल्तान भी नहीं ?' स्त्री हंस पड़ी।

अलाउद्दीन के मर्म को जैसे किसी ने छू लिया। उसने धीरे से बुदबुदा कर कहा : 'मैं ही सुल्तान बनूँगा। मै ही बनूंगा।'

'बनूंगा !' चंपा ने व्यंग से कहा।

'क्यों ?'

'क्या है तुम्हारे पास ! भेलसा तो भूखा नगर है।'

अलाउद्दीन ने अपनी लूट को बहुत बड़ा समझा था। उसको धक्का लगा।

चंपा ने कहा : 'इस छोटे से राजा को जीत कर तुम मदमस्त हो रहे हो ? अभी तुमने देवगिरि के राजा को देखा नहीं। वह तो मुसलमानों को भुट्टे की तरह काट कर फेंक देगा। उसकी दौलत इतनी है कि तुम्हारी सारी फौज़ को तो वह रुपयों के बोझ में गाड़ कर मार डालेगा।'

अलाउद्दीन ने होंठ चबाया। पर उसके भीतर अब दुधारा चल रहा था। एक ओर महत्वाकांक्षा इतना सिर उठा चुकी थी कि वह और भी जानना चाहता था।

उसने कहा : चंपा !'

'क्या है मलिक !'

'तू मेरे साथ चलेगी ?'

'कहाँ ?'

'देवगिरि !'

वह हँसी। उसने कहा : 'वह देवगिरि का राजा है न ? वह सारा दोन भुला देगा। उसकी तलवार इतनी लंबी है, इतनी !'

चंपा ने हाथ से दिखाया।

इसी समय बाहर मारपीट का कोलाहल सुनाई दिया। अलाउद्दीन उठकर शिविर द्वार पर गया। तभी कोई भीतर घुसा। हठात् एक छुरा उस आगंतुक के वक्ष में गड़ गया। अलाउद्दीन चंपा के फेंके छुरे से बाल बाल बच गया था।

अलाउद्दीन ने क्रोध से होंठ काट लिया। नंगा खड्ग चमका और उसने बढ़कर चंपा को दो टुकड़े कर दिया। बाहर शत्रुओं ने आक्रमण किया था। युद्ध होरहा था।

अलाउद्दीन शिविर से निकला। उसको देखकर उसके सेनापति एकत्र होने लगे।

विद्रोह कुचल दिया गया।

धरती रक्त से भींग गई।

अलाउद्दीन ने तलवार म्यान में रखी।

भेलसा खूब लूटा गया।

३

अलाउद्दीन लूट का माल देख रहा था।

अलपखाँ पास खड़ा था।

उसने प्रसन्न होकर कहा : 'भेलसा अच्छा रहा। कितना माल है ! यह काफ़िर होते हैं पैसे वाले। खुदा इन्हें इतना क्यों देता है ?'

'ताकि यह लोग जमा करें और हम लोग उस इकट्ठा हुए माल को जीत कर ला सकें।'

अलपखाँ हँसा। अलाउद्दीन मुस्कराया।

'इसको खजाने में भेज दूँ ?' उसने पूछा।

'नहीं,' अलाउद्दीन ने कहा।

'तो ?'

'इसे सुल्तान को भेज दो।'

अल ाँ समझा नहीं। उसने पूछा : 'सब ?'

'हाँ, बचत नहीं है।'

क्यों ?'

'क्योंकि मलिका जहान इस सबको देख चुकी हैं।'

'मलिका जहान !' अलपखाँ ने दाँत भींच कर कहा।

अलपखाँ चला गया।

रात को अलाउद्दीन जब सोने गया शीशे के बर्त्तन में उसने अपनी पत्नी को कुछ देखते हुए पाया। वह निकट जा खड़ा हुआ। उसने देखा। बर्त्तन में चंपा का कटा हुआ सिर था। उसे आश्चर्य हुआ।

पत्नी मुस्कराई। कहा : 'देखती थी मलिक को जो स्त्री पसंद आई थी, वह कैसी थी !'

अलाउद्दीन खीझ उठा।

पत्नी ने फिर कहा : 'इसी स्त्री ने मेरे पति की जान लेने की कोशिश की थी क्योंकि वे उस समय शराब के नशे में थे।'

अलाउद्दीन सिर झुकाये लौट आया।

कई दिन बीत गये।

अलपखाँ ने एक खलीता अलाउद्दीन के हाथों में पेश किया। और कहा : 'मुहर तोड़ कर देखें हुज़ूर !'

अलाउद्दीन ने पढ़ा और मुस्करा दिया।

दूसरे दिन उत्सव मनाया जाने लगा। सुल्तान ने भतीजे की बहादुरी से खुश होकर उसे अवध का प्रांत दे दिया था।

उत्सव समाप्त होगया।

अलाउद्दीन और अलप खाँ अपने उसी कमरे में बैठे थे जहाँ पहली बार बातें हुई थीं।

'अवध मुबारक !' अलपखाँ ने कहा : 'भेलसा की जीत रंग लाई !'

'लेकिन भेलसा में था ही क्या ?' अलाउद्दीन ने लंबी साँस लेकर कहा।

'क्या कहते है ?' अलपखाँ चौंका।

'देवगिरि में दौलत है, देवगिरि में।'

'मरहठों के पास ?'

'हाँ।'

'लेकिन देवगिरि के राजा के पास ताक़त बहुत है। उसे

जीतना आसान नहीं है।'

अलाउद्दीन ने तलवार निकाल कर कहा : 'कहते हैं देवगिरि के राजा का खाँडा इससे भी बड़ा है।'

'क्या वह इतनी ही तेज़ी से भी चलता है ?'

'यह मैं नहीं जानता।'

अलपखाँ का हृदय सुलग उठा, किंतु अलाउद्दीन का हृदय तो भीतर महत्त्वाकांक्षा की तपिश से पिघलने लगा था। उसने कहा : 'अलपखाँ ! मेरी जिंदगी बेकार है।'

'मलिक !' अलप खाँ ने फूत्कार किया।

'सच कहता हूँ।'

'लेकिन क्यों ?'

'इसलिये कि यह औरत मलिका जहान मेरे रास्ते का रोड़ा है।'

'मलिका जहान ?'

'हाँ, वह सुल्तान की जासूस ही है। मैं उससे दूर हो जाना चाहता हूँ।'

'मगर यह हार है।'

'मैं जानता हूँ। लेकिन जीत के लिये पीछे हटना ज़रूरी है।'

अलपखाँ ने स्वीकार किया।

कई दिन फिर बीत गये।

अलपखाँ ने नया खलीता अलाउद्दीन के सामने खोला। उसने पढ़ा।

सुल्तान ने कैफ़ियत माँगी थी कि कड़ा और अवध की

फौज चिल्लाई : 'जिहाद बोलो ! जिहाद बोलो।'

अलाउद्दीन घोड़े से उतरा। उसने काज़ी से कहा : 'हुक्म दें। खुदा के बंदों की आँखों से बँधी पट्टी उतारें।'

काज़ी आगे आया। उसे देख सैनिकों ने श्रद्धा की दृष्टियाँ उसके चरणों पर अर्पित करदीं।

काज़ी ने कहा : 'इस्लाम के बंदो ! काफ़िरों के पास दौलत है, ताकत है, सबकुछ है और तुम्हारे पास कुछ नहीं है। लेकिन यह सारी दुनिया असल में मुसलमानों के लिये है। चंदेरी पर हमला ख़ामोशी से करना होगा ताकि दुश्मन चौकन्ना न हो जाये। दिल्ली के खज़ाने में मालगुज़ारी भरने के लिये यह ज़रूरी है कि काफ़िरों से रुपया वसूल किया जाये। लेकिन यह काफ़िर इतने शरीफ़ नहीं कि अपने आप ही दे जायें। वे मुसलमानों से नफ़रत करते हैं। वे उनको गंदा समझते हैं।'

अलाउद्दीन भीतर चला गया।

अलपखाँ ने कहा : 'शुरू होगया !'

अलाउद्दीन ने उसका हाथ पकड़ कर कहा : 'लेकिन जानते हो चंदेरी के साथ और क्या करना है ?'

अलपखाँ की आँखों में कौतूहल था।

उसी समय द्वार पर मलिका जहान दिखाई दी। उसने कहा : 'मेरी राय मानों तो देवगिरि भी लगे हाथों ले डालो !'

अलाउद्दीन ने सुना तो दाँत भींच लिये। वह औरत फिर जीत गई थी।

अलपखाँ ने कहा : 'घास मिलने में जरूर परेशानी हुई लेकिन मैंने किसी को भी रास्ते में कुछ लूटने नहीं दिया वर्ना लोगों को शक हो जाता।'

'ठीक किया !' अलाउद्दीन ने सिर हिलाया। उनसे कहदो कि लौटते वक्त वे सब इन खेतों को खाते चलेंगे जिन्हें ये काफ़िर बोकर बड़ा कर रहे हैं।'

'अभी नहीं हुजूर। सुबह कूच होगा तब।'

अलाउद्दीन रात को सो नहीं सका। उसे नींद नहीं आ रही थी। जैसे देवगिरि निकट आता जारहा था उसकी तृष्णा हृदय में समा नहीं पाती थी। उसे लगता था सबकुछ एक खुला मैदान था जिस पर वह घोड़ा दौड़ाता चला जा-रहा था। कब वह सोगया, वह नहीं जान सका।

उसकी नींद तो तब खुली जब पाँच दिन बाद अलपखाँ ने कहा : 'हुजूर। यही है देवगिरि !'

अलाउद्दीन चौंक उठा। उसने धीरे से कहा : 'देवगिरि!'

८००० घुड़-सवार बढ़ने लगे।

नगर के बाँई ओर से कुछ अश्वारोही बढ़ आये। वे लगभग ३००० थे।

अलाउद्दीन रुक गया।

'अलपखाँ ! देखो यह कौन हैं ?'

अलपखाँ कुछ अश्वारोहियों के साथ उनके पास जा पहुँचा। अलाउद्दीन पाँच हजार अश्वारोहियों के साथ वहीं रुक गया और तीन हजार अश्वारोही नगर के भीतर घोड़ा दौड़ाते हुए घुस गये। जब तक द्वारपाल सचेत होते शत्रु

भीतर घुस चुका था।

अलपखाँ ने उनके नेता के पास जाकर कहा : 'तुम कौन हो ? और क्या चाहते हो ?'

सामने का व्यक्ति नहीं बोला। उसके साथ के आदमी ने पूछा : 'महाराज रामचंद्र देवगिरि के स्वामी पूछते हैं कि तुम कौन हो ?'

'हम ?' अलपखाँ ने कहा—'मुसाफ़िर हैं।'

'यह किसकी सेना है !' वह व्यक्ति चिल्लाया।

'अल्ला हो अकबर !!' मुसलमान सेना चिल्लाई और जब तक रामचंद्र सचेत होता अलाउद्दीन के अश्वारोही खड्ग लेकर टूट पड़े थे। युद्ध प्रारंभ हुआ। शीघ्र ही तीन हज़ार अश्वारोही तितर-बितर होगये। राजा रामचंद्र ने भाग कर दुर्ग में शरण ली और दुर्ग द्वार बंद करवा दिये।

अलाउद्दीन अपने बाकी अश्वारोहियों के साथ नगर में घुस गया। पथों पर घोड़ों के सुम बजने लगे। राहें खाली होने लगीं। लोग भागने लगे। सैनिकों ने दूकानों को लूटना शुरू कर दिया। सेना-विहीन नागरिक चिल्लाने लगे। सैनिकों ने कई प्रमुख ब्राह्मणों और नगर श्रेष्ठियों को पकड़ लिया और उनके घर-द्वार सब लूट कर जला दिये। चारों ओर हाहाकार मचने लगा। सेना दक्खिन गई थी। राजा रामचंद्र गुस्से से हाथ काटता हुआ घायल चीते की तरह दुर्ग में बंद था।

अलपखाँ ने दुर्ग के सामने ही शिविर गड़वा दिये। हज़ारों मुसलमान सैनिकों ने खुले मैदान में नमाज पढ़ी। चारों ओर

आतंक छागया ।

रात को गाय का गोश्त खाते हुए अलाउद्दीन ने कहा : 'क्यों ! गाय काटने पर काफ़िरों ने शोर नहीं किया ?'

'किया हुज़ूर ।' उसी दस्तरखान पर बैठे अलपखाँ ने कहा : 'लेकिन मैंने उनका कत्ल कराके आग लगवा दी ।'

'मराठे खतरनाक हैं ।'

'हैं, लेकिन वे बिना फौज के हैं और मैंने आपके हुक्म की तामील की है। खबर बड़े जोरों से उड़ रही है कि सुल्तान जलालुद्दीन पीछे से २०००० घुड़सवार लिये चढ़े आते हैं । इसलिये या तो हथियार डाल दो या फिर देवगिरि में कत्लेआम होगा ।'

अलाउद्दीन ने शराब का प्याला मुँह से लगाकर थोड़ी सी पी और फिर गोश्त चबाते हुए कहा : 'शाबाश ! मुझे इतनी जल्दी की तो उम्मीद नहीं थी ।'

'फ़तह बेमिसाल है । अपने कुल डेढ़ दो सौ आदमी मरे होंगे ।'

'फ़तह नहीं, अलपखाँ !' अलाउद्दीन ने सहसा आँखें मिचमिचा कर कहा : 'यह काम तुमको करना होगा ।'

'क्या हुज़ूर !'

'सुबह ही तुम रामचंद्र के पास जाओ ।'

'हुक्म !'

'उससे सुलह करलो !'

'क्या कहते है आप ?'

'ठीक कहता हूँ । सुल्तान के आने का खौफ़ कुछ ही दिन

चलेगा। फिर हमें शंकरदेव के फौज लेकर लौट आने के पहले ही लौट जाना चाहिये। वर्ना जानते हो! यहां से हार कर भागने के वक्त खान देश, मालवा और गोण्डवाना है। एक भी बचकर कड़ा तक नहीं पहुँच सकेगा।'

अलपखाँ थर्रा उठा। उसने कहा 'ठीक कहते हैं।'

'देखो!' अलाउद्दीन ने फिर कहा 'घुड़सवारों में से तीन हजार को शहर में कत्ल, जिना, और आग लगाने भेजदो ताकि रिआया डरे और खूब डरे। बाकी जो फौज हो वह दो हिस्सों में बारी बारी से सोये। किसी बड़े सर्दार के खेमे में रात को कोई काफिर औरत न घुसे।'

अलपखाँ उठ खड़ा हुआ। उसने कहा 'यही होगा।'

अलाउद्दीन लेट गया। नगर में चीत्कार उठ रहे थे। जगह जगह नागरिक सेना पर आक्रमण करते थे, किंतु सेना के सगठित प्रहार से पीछे हट जाते थे। आज देव-मंदिरों में आराधना भी नहीं हुई थी। केवल दुर्ग में मंदिर का घंटा बजा था।

अलाउद्दीन उसे सुनकर चौंक कर उठ बैठा।

'यह किसकी आवाज है?' उसने खेमे के द्वार पर पहरा देते तुग़रिल से पूछा। पास खड़े महमूद ने कहा 'हुजूर! किले में शायद घड़ियाल बज रहे हैं।'

अलाउद्दीन ने धीरे से कहा 'तो फिर कल शायद यह भी न बजे।' किंतु उसको विश्वास नहीं हुआ। कल! और शंकर देव लौट आया तो।

सारी रात बेचैनी से कटी। कभी कभी आगजनी की

]

रें सुनाई देती थीं । अंधेरी हवाएं उनसे उठती लपटों को दूर तक तक फैला रही थीं ।

तीसरा पहर ढल रहा था । सितारे जैसे एक ओर आगये लगते थे । अलपखाँ ने पूछा : 'मलिक सोरहे हैं !'

'नहीं !' भीतर से आवाज़ आई—'भीतर आजाओ !'

अलपखाँ ने प्रवेश करके कहा : 'सिपाहियों ने एक मंदिर तोड़ दिया है ।'

अलाउद्दीन ने उठ कर कहा : 'जल्दी होगई ।'

'लेकिन अब !'

अलाउद्दीन ने खड्ग उठाकर कहा : 'अब यह !'

५

प्रभात की किरणें खंडहरों से उठते धूंए को पकड़ने की चेष्टा करने लगीं । सैनिक घोड़ों पर सवार गश्त करने लगे । द्वार वंद किये नागरिक भीतर पड़े थे । चार हज़ार सैनिक पंक्ति वना कर दुर्ग द्वार पर खड़े थे ।

अलपखाँ आगे वढ़ा ।

उसने पुकारकर कहा : 'हम सुल्तान जलालुद्दीन खिल
के भतीजे मलिक अलाउद्दीन खिलजी की तरफ़ से र
रामचंद्र से किले का दरवाज़ा खोलने की प्रार्थना करते
मलिक संधि करना चाहते हैं ।

ह्मणों को वापिस करिये।'

अलाउद्दीन ने कहा : 'आप हमें क्या देंगे ?'

राजा सोच में पड़ गया।

एक वृद्ध ब्राह्मण निकट आया। उसने संस्कृत में कहा : 'राजा ! म्लेच्छ बर्बर है। लोलुप है। इसे धन देकर प्राणरक्षा कर। युवराज के आने का कुछ पता नहीं है।'

राजा ने कहा : 'मै आपको पचास मन सोना, सात मन जवाहिरात, चालीस हाथी, १००० घोड़े दूँगा।'

अलपखाँ ने कहा : 'और जो हमारे सिपाही लूट चुके हैं अगर वह उनसे माँगा जायेगा तो वे बग़ावत करेंगे।'

राजा रामचंद्र ने सिर झुका कर कहा : 'स्वीकार है, लेकिन मेरे ब्राह्मणों को छोड़ दिया जाये !'

अलाउद्दीन ने इंगित किया।

ब्राह्मण छोड़ दिये गये। वे राजा के पास आगये।

'और श्रेष्ठि !'

'वे संधि के बाद छोड़े जायेंगे।' अलाउद्दीन ने कहा '

'आप किले में जायें और जल्दी इंतजाम करें।'

राजा भारी हृदय लेकर दुर्ग में चला गया।

अलाउद्दीन अपने खेमे में जाकर बैठ गया। उसने प में शराब उंडेली। गुलाम पास खड़ा था। खूबसूरत छरहरा, हिजड़ा।

अलपखाँ ने आकर कहा : 'यह आपने क्या किया ?'

'क्यों ?'

'राजा को किले में क्यों जाने दिया ?'

अलाउद्दीन ने नहीं सुना।

अलपखाँ ने फिर कहा : 'राजा रामचंद्र का संवाद आया है।'

अलाउद्दीन ने सिर उठाया।

'वे कहते हैं कि जो माल दिया है और जो सिपाहियों ने लूटा है उस सबको यहीं छोड़ दो और चुपचाप चले जाओ वर्ना यहाँ से एक भी बच कर नहीं जायेगा।'

अलाउद्दीन खेमे से निकला और तुर्की में उसने गरज कर कहा : 'मुसलमानो ! काफ़िर अपने लफ़्जों को पलट गया है। वह कहता है कि जो तुम्हें मिला है उस सबको छोड़कर चले जाओ। अगर हम इस तरह जायेंगे तो सुल्तान का गुस्सा हम सबको तबाह कर देगा। काफ़िरों के हाथों से इस तरह पिटकर जाने से मुसलमान हमें कभी भी माफ़ नहीं करेंगे। बोलो ! आज गाज़ी होने का मौका है। लौटोगे कि इस्लाम का झण्डा उड़ाओगे !'

लूट का माल इस्लाम की आड़ पाकर लोभ को धर्म में बदल गया। अंधविश्वासों ने उनकी बर्बरता को उकसाया। सैनिक चिल्लाये : 'नहीं ! हम मर जायेंगे, मगर लौट कर खाली हाथों नहीं जायेंगे। काफिर दग़ा कर रहा है।'

उस समय यह किसी ने भी नहीं कहा कि वे स्वयं लुटेरे और आक्रमणकारी थे।

अलाउद्दीन घोड़े पर चढ़ गया। उसने अलपखाँ से कहा : 'एक हज़ार घुड़-सवार भेजकर क़िले के दरवाजे को तोड़ने पर लगादो। हम लोग चलकर इन काफ़िरों को मारते

ौज पर छापे मारने लगे। हाहाकार मचने लगा। अला-
उद्दीन ने बाकी सैनिकों को लेकर किला फिर घेर लिया।

७

अलाउद्दीन ने खड्ग उठाकर पुकारा:'और ज़ोर से मारो।' सैनिक लंबा शहतीर लेकर बार बार दुर्ग-द्वार पर मारने लगे। नगर में अभी तक हाहाकार मच रहा था। मुसलमान सेना भागते हुए लोगों को काटती फिर रही थी। कोई सुंदरी मिलती तो मुसलमान उसे पकड़ लेते। मराठों की सेना तितर-बितर थी।

राजा रामचंद्र दुर्ग के प्रकोष्ठ में आटे के बोरे लगवा रहा था। दुर्ग के ऊपर से सैनिक बाण-वर्षा कर रहे थे। एक सैनिक नीचे के बाण से घायल होकर गिरा। गिरते समय उसका कमान पर चढ़ा हुआ बाण पीछे छूट गया और तेज़ी से वातायन से होकर आटे के एक बोरे में धँस गया। जब ए सैनिक ने उसे खींचकर निकाला तो सफ़ेद सफ़ेद चूर्ण गिरने लगा। राजा रामचंद्र ने देखा तो कहा: 'आटा रहा है। उसे बंद कर।'

सैनिक ने कहा: 'देव! यह आटा नहीं यह नमक

'नमक!' राजा जैसे आकाश से गिरा। 'नमक

गया ?'

सैनिक ने कहा : 'देव ! लगता है सेना में भूल पड गई। जल्दी में एक सा रंग देखकर आटे की जगह नमक के बोरे आगये।'

राजा सिर पकड़ कर बैठ गया। उसने कहा : 'अमात्य को बुला।'

वृद्ध ब्राह्मण कार्तिक आगया। उसने कहा : 'महाराज !'

'सर्वनाश होगया अमात्य !' राजा ने कहा।

'क्यों देव !'

'देखो !'

'नमक आगया है, आटे की जगह।' सैनिक ने कहा।

'फिर ?' अमात्य ने कहा— 'ऐसे दुर्ग कितने दिन बचेगा ? लोग भीतर क्या खायेंगे ?'

सैनिक ने कहा : 'शीघ्र ही युवराज की सेना बाहर से आ जायेगी।'

राजा रामचंद्र प्रकोष्ठ के बाहर गया। उस समय अला-उद्दीन स्वयं गरज रहा था। मुसलमान सेना बड़े वेग से आक्रमण कर रही थी।

रामचंद्र ने अमात्य से कहा : 'अमात्य ! युवराज नहीं आये।'

अमात्य ने देखा। दूर नगर के विशाल भवनों पर से झण्डे गिर रहे थे।

'वह देखो !' राजा ने कहा—'यदि युवराज की विजय होती तो क्या वे झंडे, वे पवित्र जयध्वज नीचे गिरते।'

अमात्य का हाथ काँप उठा। उसने कहा : 'और वह भी!'
वह सबसे बड़े मंदिर की पताका का पतन था।

रामचंद्र ने कहा : 'द्वार खोलदो, अमात्म ! अब सब व्यर्थ है।'

द्वार खुल गया। मुसलमान सैनिकों में से कुछ दुर्ग के भीतर घुस आये।

८

एलिचपुर में मुसलमान फ़ौज पड़ी थी, जिसमें तुर्क, मंगोल, तातार और अन्य ऐसे ही लोग थे।

अलाउद्दीन शैय्या पर लेटा था।

अलपखाँ प्रसन्न था। उसने कहा : 'हुजूर ! एलिचप
हमारा है। हम यहाँ कितने घुड़सवार छोड़ चलें ?'

'चार हजार।'

'मुझे तो लगा था रामचंद्र ऐलिचपुर नहीं देगा। ले
काफ़िर तो बहुत कमजोर है। अभी तक तो हिंदुस्तान
मगर अब पता चला कि दकन भी इसी तरह फूट
हुआ है।'

'अलपखाँ !' अलाउद्दीन ने कहा—'सारा दकन
तो फ़तह के लिये बहुत कुछ पड़ा है।'

याद है, भेलसा की लूट का सारा माल उसने ख़ुद ही आपकी खिदमत में पेश कर दिया था !

'वही तो मैं सोचता था !' जलालुद्दीन ने दाँत निकाल कर कहा—पहले भी तो वह ऐसा ही कर चुका है।'

इसी समय बाहर से एक व्यक्ति आया। उसने कहा : 'आलीजाह ! कड़ा से मलिका तशरीफ़ लाई हैं।'

'कौन ! मलिका जहान !' सुल्तान ने कहा : 'अहमद देखो तो।' उसे आश्चर्य्य हुआ ?

अहमद चला गया।

बुर्का ओढ़े जब मलिका ने प्रवेश करके सलाम किया, सुल्तान ने कहा : 'कहो मलिका ! सीधी दिल्ली क्यों न गईं? इधर क्यों आईं ? तुम तो बेटी को देखने गई थीं न ?'

'आपकी क़दमबोसी को आई हूँ।'

'कैसे ?'

'आपने सुना अलाउद्दीन ने देवगिरि को जीत लिया।

'हाँ क्यों ?'

अहमद खड़ा था। मलिका ने उसकी ओर देखा।

अहमद समझ कर बाहर चला गया।

'अलाउद्दीन !' मलिका ने कहा— 'शायद आप
पता नहीं, कड़ा से जाने के पहले ही अलपखाँ से यह तय
चुका था कि वह आपसे चँदेरी का नाम लेकर जायेगा, ले
देवगिरि जीतेगा।'

सुल्तान ने उसकी बात को स्त्री को बात समझा। व
हीं जानतीं, मलिका ! मेरा भतीजा है वह !

उठते हुए देख कर लोग दरबार में जानते हैं। इसीलिये उसने ऐसा किया। अलावा इसके उसे यकीन ही क्या था कि वह जाकर जीत जायेगा। उस हालत में ऐसा कह देने में हर्ज ही क्या था! फिर तुम्हारा भी तो वह दामाद है!'

मलिका जहान तीक्ष्ण और कुटिल बुद्धि की स्त्री थी। उसने कहा: 'बेटी के ज़रिये ही तो मुझे सब मालूम हुआ सुल्तान! मैं यही तो आपसे कह रही थी कि वह बड़ा दिलेर है। जब एक बात को ठान लेता है, तब करके रहता है। आपका भतीजा है, तो मेरा भी तो दामाद है!'

उसकी बात सुनकर सुल्तान हँसा।

मन ही मन मलिका जहान ने कहा: बूढ़ा सठिया गया है। अब इसका वक्त आगया। अपने पति की यह अवस्था उसे दुख देने लगी।

'कद्र कहाँ हैं?' सुल्तान ने पूछा, 'तुम्हारे साथ गया था!'

'आपकी खिदमत में मैंने कद्र को राजधानी भेज दिया है।।' मलिका ने कहा।

उसके दो पुत्र थे—अरकाली खाँ और कद्रखाँ। समय से पहले जागरूक रहने वाली स्त्री ने इसको पहले ही दिल्ली पहुँचा दिया था।

अहमद ने प्रवेश किया। सुल्तान ने उसकी ओर देखा।

'अब लश्कर कब कूच करेगा?' अहमद ने पूछा।

'तैयारी करदो, आज ही!' सुल्तान ने कहा: 'दिल्ली पहुँचना जरूरी है।'

मलिका ने कहा: 'दिल्ली गये भी काफ़ी दिन हुए।'

उसे दिल्ली पहुँचने की जल्दी होरही थी; क्योंकि वह समझ रही थी कि बुड्ढा न जाने कब टपक पड़े। उस समय उसका वहाँ रहना आवश्यक था, क्योंकि अरकाली और कद्र को ही वह गद्दी पर बिठाना चाहती थी। उसे एक ही चिंता थीं कि अरकाली मुल्तान में था। उसे वह दिल्ली बुलाना चाहती थी। अहमद मन ही मन मलिका की चाल को समझ रहा था। पर वह क्यों बुरा बनता। उसे हवा ही पलटती दिखाई देरही थी।

दिल्ली पहुँचते न पहुँचते सुल्तान को अलाउद्दीन का पत्र मिला, जिसमें लिखा था—मैंने सुना है कि सभासदों ने आपको मेरे विरुद्ध भड़काया है। दकन की लूट का माल मै आपकी भेंट करने आना चाहता हूँ। लेकिन मुझे इस बात का पूरा आश्वासन मिलना चाहिये कि मेरी रक्षा आप करेंगे !

सुल्तान ने मुस्करा कर कहा—'लिखो अहमद, हम तुम्हारी हिफाजत करेंगे।'

अलाउद्दीन इतना भयभीत है, यह सोचना जरा अहमद के लिये कठिन था।

'इसे हमारे खास आदमी लेकर जायें !' सुल्तान ने कहा : 'हम जानते हैं कि हमारा ख़त शायद लोगों की जलन से ठीक वक्त पर न पहुँचे।'

अहमद ने कहा : 'जो हुक्म।'

सुल्तान ने मलिका की ओर देखा। मलिका का हृदय भीतर ही भीतर ऐंठकर जैसे टूट गया था। उसने कहा : 'जी हाँ, जीहाँ............'

क़द्र पास खड़ा था। उसने माँ की तरफ़ भेद-भरी दृष्टि से देखा जो अहमद ताड़ गया। उसी समय इल्यास बेग़ ने प्रवेश करके सुल्तान की क़दम-बोसी की।

'अरे इल्यास!' वृद्ध ने कहा : 'तुम कब आये?'

'अभी अभी पहुँचा हूँ चचा!' इल्यास ने बच्चे की तरह कहा। इल्यास बेग़ अलाउद्दीन का भाई था।

'कहाँ से आरहे हो?'

'कड़ा से।'

'और अलाउद्दीन तो खैरियत से है।'

'वे तो बड़े डरे हुए हैं।' इल्यास ने कहा।

'डरा हुआ है?' सुल्तान ने कहा—'क्यों? क्या बात हुई? किससे डरता है वह?'

'आपसे!' इल्यास ने कहा और सिर झुका लिया।

'मुझसे?' सुल्तान चौंका।

'जो हाँ वे कहीं खुदकशी न कर डालें। या फिर अपने हाथियों और खजाने को लेकर किसी नयी जगह ही अपनी किस्मत आजमाने न चले जायें।'

'लेकिन आखिर क्यों?' सुल्तान ने कहा।

'इसलिये कि उन्होंने सुना है कि सुल्तान उनसे नाखुश हैं। वे कहते हैं कि जब खास चचा जान ही नाराज़ हैं तो फिर रह कर भी क्या होगा?'

सुल्तान गद्गद हुआ, हिल उठा। उसने अहमद की तरफ़ देखकर कहा : 'उसे लिखदो, हम उससे खुद ही कड़ा जाकर मिलेंगे। लड़का इतना डरा दिया है लोगों ने इधर को उमर

लगाकर !'

अहमद ने सिर झुकाकर फिर कहा : 'जो हुक्म !'

१०

इल्यास बेग़ ने कहा : लीजिये गंगा आगई।

गंगा की प्रशस्त धारा अब भी अविराम बही जारही थी। किनारे पर एक बहुत सजा सजाया बजड़ा खड़ा था। दूसरी ओर कुछ नावें थीं।

सुल्तान ने बजड़े पर सवार होते हुए कहा : 'आओ ! इल्यास बेग़ ! तुम भी यहीं आजाओ !'

'जो हुक्म !' कहकर इल्यास भी चढ़ गया।

सुल्तान बहुत प्रसन्न था।

उसने कहा : 'वो तुझसे डरता है ?'

और यह कहकर वह एक सरल हंसी हंसा। उसने फिर कहा : 'लेकिन क्यों ? इल्यास ! सुल्तान लोगों के कच्चे कान होते हैं ऐसा मशहूर है। वे अपने बाप और बेटे पर भी एतवार नहीं करते। लेकिन क्या अलाउद्दीन ने मुझे भी ऐसा ही समझा है ?'

वह फिर हंसा और कहा : 'बताओ, बताओ'।

इल्यास बेग़ ने कहा : 'यही बात होती तो वे आपको ही ना सबकुछ क्यों समझते !'

'अरे सब लोग आगये ?' सुल्तान ने कहा।

उसके साथ लगभग पचास आदमी थे जो बजड़े के भीतर और साथ की नावों में समा गये थे।

मल्लाह गंगा की धारा को पतवारों से काटने लगे। बजड़ा धीमी धीमी फूल में था। हवा बड़ी प्यारी चल रही थी।

'क्यों इल्यास !' सुल्तान ने कहा—'यह तो सच ही है कि दरबारी एक दूसरे से जलते हैं। लेकिन मुझे भी देखा ! मैं कभी ग़लत बातों पर अमल नहीं करता। मुझे दूध और पानी अलग करना आता है, इसलिये कि मैं एक बुनियादी उसूल लेकर चलता हूँ कि जिसके साथ अच्छा करोगे, वह हमेशा तुम्हारे साथ अच्छाई करेगा। और फिर हम लोग मुसलमान हैं। हम लोग आपस में कैसे लड़ सकते हैं ?'

इल्यास बेग़ ने कहा : 'नहीं लड़ सकते सुल्तान ! और फिर मजाल किसकी कि आपकी तरफ़ निगाह भी उठाकर देखे। कहीं राई का ढेर पहाड़ से टक्कर ले सकता है ?'

सुल्तान हँसा। उसने कहा : 'ठीक कहते हो, ठीक कहते हो। मुझे ही देखो। ज़रा अलाउद्दीन से मिलने दो। जब सारी ग़लत-फ़हमियाँ दूर हो जायेंगी तब बात करेंगे। तब बड़े बड़ों की कलइयाँ खुलेंगी।'

'सुल्तानेआला !' इल्यास बेग़ ने कहा—'आपसे भी बड़ा कौन हो सकता है ? आप सच्चे मुसलमान हैं कि झुकना ही आपने अपना काम बनाया है, जैसे फलों से लदा पेड़ होता है।'

सुल्तान की आँखें सुख के कारण कुछ छोटी सी दिखाई
ने लगीं और होठों की चौडाई बढ़ गई।

जब बजड़ा रुका और वे लोग किनारे पर उतरे सुल्तान
ने देखा पास ही फौज के डेरे पड़े थे।

उसने भौं सिकोड़ कर कहा : 'अलाउद्दीन हमारे इस्तक़बाल
को नहीं आया।'

अभी वह कह ही रहा था कि कुछ दूर खड़े चार पाँच
सिपाही अपने हथियार फेंक कर भागने लगे। वे चिल्लाये :
'आगये। सुल्तान आगये कोई न बचेगा।'

सुल्तान नहीं समझा।

'अरे रुको, रुको!' चिल्लाते हुए एक व्यक्ति आगे आया
और उसने सुल्तान की क़दमबोसी की।

इल्यास बेग ने कहा : 'यह है इख्तियारुद्दीन हुद, फौज में
है भाई की। क्यों इख्तियारुद्दीन! भाईजान कहाँ हैं?'

'वे तो सामान बांधबूंध कर भागने को तैयार हैं।'
इख्तियार ने बड़े भोलेपन से कहा : 'वो तो आप मुझ से कह
गये थे इसलिये मै क़िसी तरह रुका रहा।' यह कहते हुए वह
सचमुच काँप उठा। उसने फिर कहा : 'ज्योंही उन्हों
सुना कि सुल्तान हथियार-बंद फौज के साथ हैं उनकी
हिम्मत ही टूट गई। बोले : चचाजान ने तो कहा था
हम मुहब्बत से मिलने आरहे हैं। फ़िर वे हथियार-बंदों
ला रहे हैं तो ज़रूर ख़तरा है। भाग जाना ही ठीक है क
सुल्तान से लड़कर मैं खाक में मिल जाना नहीं चाहता

'तुश!' सुल्तान ने कहा : 'इल्यास' अलाउद्दीन तो

सुल्तान की आँखें सुख के कारण कुछ छोटी सी दिखाई देने लगीं और होठों की चौडाई बढ़ गई।

जब बजड़ा रुका और वे लोग किनारे पर उतरे सुल्तान ने देखा पास ही फौज़ के डेरे पड़े थे।

उसने भौं सिकोड़ कर कहा : 'अलाउद्दीन हमारे इस्तक़बाल को नहीं आया।'

अभी वह कह ही रहा था कि कुछ दूर खड़े चार पाँच सिपाही अपने हथियार फेंक कर भागने लगे। वे चिल्लाये : 'आगये। सुल्तान आगये कोई न बचेगा।'

सुल्तान नहीं समझा।

'अरे रुको, रुको !' चिल्लाते हुए एक व्यक्ति आगे आया और उसने सुल्तान की क़दमबोसी की।

इल्यास बेग़ ने कहा : 'यह है इख्तियारुद्दीन हुद, फौज में है भाई की। क्यों इख्तियारुद्दीन ! भाईजान कहाँ हैं ?'

'वे तो सामान बांधबूंध कर भागने को तैयार हैं।' इख्तियार ने वड़े भोलेपन से कहा : 'वो तो आप मुझ से कह गये थे इसलिये मै क़िसी तरह रुका रहा।' यह कहते हुए वह सचमुच काँप उठा। उसने फिर कहा : 'ज्योंही उन्होंने सुना कि सुल्तान हथियार-वंद फौज के साथ हैं उनकी तो हिम्मत ही टूट गई। वोले : चचाजान ने तो कहा था—हम मुहब्बत से मिलने आरहे हैं। फ़िर वे हथियार-वंदों को ला रहे हैं तो जरूर खतरा है। भाग जाना ही ठीक है क्योंकि सुल्तान से लड़कर मैं खाक में मिल जाना नहीं चाहता।'

'तुश !' सुल्तान ने कहा : 'इल्यास' अलाउद्दीन तो बड़ा

डरपोक है ! इसने कैसे देवगिरि जीत लिया। वहाँ शायद इसान हैं ही नहीं, घास फूस है। तो हम हथियार छोड़ देते हैं।' फिर उसने अपने सैनिकों से कहा : 'देदो तुम लोग भी। फेंक दो नीचे। इल्यास ! तुम यहीं रहो। हम खुद जाते हैं। ऐ इख्तियार ! उन्होंने अस्त्र फेंक दिये।'

'आलीजाह !' इख्तियार नें डरते डरते कहा।

'तू आगे चल कर हमें राह दिखा।'

वह बोला : 'चलें आलीजाह।'

सुल्तान बढ़ चला। उसके विश्वस्त सेवक भी निःशस्त्र होकर पीछे चल पड़े। वे लोग खेमों की आड़ में आगये।

इल्यास ने इशारा किया। पेड़ों के पीछे से कई छिपे हुए सैनिक निकल आये जिन्होंने वे धरती पर पड़े शस्त्र उठा लिये। तभी कोई चिल्लाया : 'हाय हाय ! सुल्तान के आदमियों ने तो मार ही डाला।'

सुल्तान ने रुककर मुड़कर देखा और अपने विश्वस्त अनुचर से कहा : 'देख ! कौन मार रहा है।'

अनुचर मुड़े। जब उन्होंने लौटकर देखा सुल्तान का धड़ धरती पर गिरने वाला था और धड़ के ऊपर सिर नहीं था, गर्दन की जगह से खून का पनाला बह रहा था और कुछ दूर पर इख्तियारुउद्दीन सुल्तान का कटा सिर लिये भागा जारहा था, जिससे अभी तक खून की बूंदें टपक रही थीं और उसके दूसरे हाथ में खून से भीगी तलवार थी। सुल्तान के गले से आवाज तक नहीं निकल सकी थी, क्योंकि इख्तियार ने पीछे से बड़ी सफाई से सिर काट लिया था। जब वे लोग

कुछ जागे उन्होंने देखा उनको लंबे भाले वालों ने चारों तरफ़ से घेर लिया था। भयानक चीत्कार उठी और वे लोग एक एक करके मारे गये।

इख्तियारुद्दीन जब निकला तब इल्यासबेग़ अलाउद्दीन के खेमें घुस रहा था। दोनों ने एक दूसरे की ओर मुस्करा कर देखा। इल्यास ने पूछा : 'सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी भीतर हैं?'

'हैं।' इख्तियार ने हँसकर कहा।

'तुम कहाँ जाते हो ?'

उसने हाथ में लटका सुल्तान का सिर उठाकर दिखाते हुए कहा : 'कड़ा मानिकपुर की सारी फौज में इस सिर को सुल्तान अलाउद्दीन के हुक्म से दिखाने जारहा हूँ ताकि लोगों को सुल्तान जलालुद्दीन के मरने का ऐतबार हो जाये। तुम एक काम करो। सारे अमीरों को फ़ौरन बुलाओ। सुल्तान अलाउद्दीन को अभी ही सुल्तान घोषित करना आवश्यक है।'

"मैं जाता हूँ।' कह कर इल्यासबेग भी लौट गया।

इसके कुछ देर बाद ही जब इल्यास अमीरों के बीच में था, इख्तियार घोड़े पर सर लटकाये फौजों में घूमता फिरता था। तातार, मंगोल, और नौमुस्लिम बड़े ठहाके लगाकर हंस रहे थे।

११

मलिका जहान ने सुना तो घबराकर खड़ी होगई। क़द्र खां गुस्से से कांपने लगा। उसने कहा : 'कत्ल साज़िश।'

उसके बाद सन्नाटा छागया।

जलाली अमीर बाहर विशाल प्रकोष्ठ में एकत्र हो रहे थे। उनमें विक्षोभ भरा हुआ था।

मलिका जहान ने खत लिखने वाले को बुलाया और अपने पुत्र अरक़ाली को तुरंत लौट आने को लिखा। हरकारा पत्र लकर मुल्तान की ओर चल दिया।

वर्षा ऋतु आगई। मलिका जहान की नींद हराम होगई थी। उसने कहा: 'अहमद आप कहाँ है ?'

'वह अपने घर में घुसा बैठा है।' कद्र ने कहा।

मलिका ने सिर हिलाया।

जासूस ने कहा: 'मलिका ए आज़म! अलाउद्दीन बराबर मन्जनिकों से सबके सामने ही शाही खेमों के सामने आमतौर पर अमीरों को पाँच पाँच मन सोना बाँट रहा है

मलिका को लगा उसका सिर फट जायेगा। आज ही क़द्र खाँ दिल्ली के सिंहासन पर बैठा था। उसने अपना नाम रुक्नुद्दीन इब्राहीम घोषित किया था। इसी नाम से उसने अरक़ाली खाँ को मुल्तान से लौटने को पत्र लिखा था, किंतु पत्र का उत्तर विचित्र आया था कि अमीरों के फ़रेब की वजह से उसका लौटना असंभव था।

जासूस ने फिर कहा: 'मलिकाए आज़म! इस वक्त अलाउद्दीन के पास ५६००० घुड़सवार और ६०००० पैदलों की फौज है। उसने लूट का माल खूब बाँटा है और अमीरों को खरीद लिया है।

मलिका जहान का चेहरा पीला पड़ गया। बोली: 'अब

वह कहाँ है ?'

'अब वह दिल्ली की तरफ़ बढ़ता चला आरहा है ।'

'अल्लाह रहम कर!' मलिका ने आस्मान की तरफ़ देखकर कहा, जहाँ बिजलियाँ चमक रही थीं। वह उस चिड़िया की तरह बैठी थी जिसने अभी नया घोंसला बनाया था ।

'तू जाकर अहमद को मेरे पास ला ।' मलिका ने कहा ।

जासूस चला गया ।

लेकिन अहमद नहीं आया । वह देख रहा था कि अला. उद्दीन का धन धरती फोड़ कर साँपों की तरह निकलता था और बड़े बड़े ईमानदारों को डस कर मूर्छित किये देरहा था।

आखिर वह दिन आ पहुँचा जब अलाउद्दीन सेना सहित दिल्ली के द्वार पर आगया । मलिका रात भर प्रार्थना करती रही । प्रातःकाल होते ही सुलतान रुक्नुद्दीन इब्राहीम उर्फ़ क़द्र खां की सेना नगर के बाहर आगई । दोनों सेनाएँ टक्कर लेने को तैयार खड़ी थीं । दिन बीत गया । आधी रात के समय हवा तेज़ होगई ।

जासूस ने मलिका के कमरे का द्वार खटखटाया ।

'कौन है !' मलिका ने पूछा ।

'मैं हूँ, जल्दी दरवाज़ा खोलिये ।'

मलिका हड़बड़ाई सी बाहर आई ।

'क्या हुआ ?'

'भागिये मलिका भागिये, मैं बाहर सवारी का इंतज़ाम करके आया हूँ ।'

मलिका के मुँह से बोल नहीं निकल सका ।

'हाँ।' जासूस ने कहा :' सुल्तान रुक्नुद्दीन इब्राहीम की फौज को अलाउद्दीन के सोने ने खरीद लिया। आधी फौज दुश्मनों से मिल गई। सुल्तान मुल्तान की तरफ़ भाग रहे हैं, आप भी मुल्तान निकल चलिए। यह न समझिएगा कि वह आपका दामाद है। तभी क़द्रख़ाँ कुछ टके और थोड़े से घुड़सवारों के के साथ भाग निकले हैं।'

'हाय अल्ला!' मलिका रो पड़ी और अपने जवाहिरातों के बक्स को उठाने लगी। वे लोग पिछवाड़े के दरवाज़े से निकले और सवारी पर चढ़े। घोड़े भागने लगे।

जासूस ने कहा : 'आप कमालुद्दीन के साथ चलें। मैं खबरें लेकर आता हूँ। मेरा अरबी घोड़ा है, मैं आपको पकड़ लूँगा।'

जासूस मुड़ गया।

कई महीनों बाद जब मलिका जहान और क़द्रख़ाँ मिले तब जासूस ने सुनाया : 'सिरी के मैदान में अलाउद्दीन ने ठाठ से जलसा किया। सारे राज्यकर्मचारी, कोतवाल सबने उसके सामने वहाँ जाकर सिर झुकाया। उसी दिन उसके नाम का खुतबा पढ़ा गया और सिक्का ढाला गया।' वह रुका।

'फिर वह लाल महल में तख़्त पर चढ़ा,' उसने फिर कहा : 'बड़ा भारी जशन मनाया गया। बेहद रिश्वत बाँटी गईं, इनाम देकर लोगों को खरीद लिया गया। ख्वाजा खातीर को वज़ीर बनाया गया और कड़ा और अवध का इलाका मलिक अल उल् मुल्क को दिया गया। मुय्यिद उल् मुल्क को...

वह कहाँ है ?'

'अब वह दिल्ली की तरफ़ बढ़ता चला आरहा है।'

'अल्लाह रहम कर!' मलिका ने आस्मान की तरफ़ देखकर कहा, जहाँ बिजलियाँ चमक रही थीं। वह उस चिड़िया की तरह बैठी थी जिसने अभी नया घोंसला बनाया था।

'तू जाकर अहमद को मेरे पास ला।' मलिका ने कहा।

जासूस चला गया।

लेकिन अहमद नहीं आया। वह देख रहा था कि अला. उद्दीन का धन धरती फोड़ कर साँपों की तरह निकलता था और बड़े बड़े ईमानदारों को डस कर मूर्छित किये देरहा था।

आखिर वह दिन आ पहुँचा जब अलाउद्दीन सेना सहित दिल्ली के द्वार पर आगया। मलिका रात भर प्रार्थना करती रही। प्रातःकाल होते ही सुलतान रुक्नुद्दीन इब्राहीम उर्फ़ क़द्र खां की सेना नगर के बाहर आगई। दोनों सेनाएँ टक्कर लेने को तैयार खड़ी थीं। दिन बीत गया। आधी रात के समय हवा तेज़ होगई।

जासूस ने मलिका के कमरे का द्वार खटखटाया।

'कौन है !' मलिका ने पूछा।

'मैं हूँ, जल्दी दरवाज़ा खोलिये।'

मलिका हड़बड़ाई सी बाहर आई।

'क्या हुआ ?'

'भागिये मलिका भागिये, मैं बाहर सवारी का इंतज़ाम करके आया हूँ।'

मलिका के मुँह से बोल नहीं निकल सका।

'हाँ।' जासूस ने कहा :' सुल्तान रुक्नुद्दीन इब्राहीम की फौज को अलाउद्दीन के सोने ने खरीद लिया। आधी फौज दुश्मनों से मिल गई। सुल्तान मुल्तान की तरफ़ भाग रहे हैं, आप भी मुल्तान निकल चलिए। यह न समझिएगा कि वह आपका दामाद है। तभी क़द्रख़ाँ कुछ टंके और थोड़े से घुड़सवारों के के साथ भाग निकले हैं।'

'हाय अल्ला!' मलिका रो पड़ी और अपने जवाहिरातों के बक्स को उठाने लगी। वे लोग पिछवाड़े के दरवाज़े से निकले और सवारी पर चढ़े। घोड़े भागने लगे।

जासूस ने कहा : 'आप कमालुद्दीन के साथ चलें। मैं ख़बरें लेकर आता हूँ। मेरा अरबी घोड़ा है, मैं आपको पकड़ लूँगा।'

जासूस मुड़ गया।

कई महीनों बाद जब मलिका जहान और क़द्रख़ाँ मिले तब जासूस ने सुनाया : 'सिरी के मैदान में अलाउद्दीन ने ठाठ से जलसा किया। सारे राज्यकर्मचारी, कोतवाल सबने उसके सामने वहाँ जाकर सिर झुकाया। उसी दिन उसके नाम का ख़ुतबा पढ़ा गया और सिक्का ढाला गया।' वह रुका।

'फिर वह लाल महल में तख़्त पर चढ़ा,' उसने फिर कहा : 'बड़ा भारी जश्न मनाया गया। बेहद रिश्वत बाँटी गई, इनाम देकर लोगों को ख़रीद लिया गया। ख़्वाजा ख़ातीर को वज़ीर बनाया गया और कड़ा और अवध का इलाका मलिक अल उल् मुल्क को दिया गया। मुय्यिद उल् मुल्क को…

'इस सवको जाने दो,' क़द्र खाँ ने कहा, जासूस चुप रहा।

'मुई रियाया को क्या होगया!' मलिका ने कहा : 'सुल्तान के क़ातिल को देख कर भी कुछ न कहा!'

इसी समय बाहर से संवाद-वाहक आया। उसने कहा। 'मलिका!'

और वह हाँफते हाँफते मूर्च्छित होगया।

सब देखते रह गये।

४

अहमद छाप ने सुना : तख्त पर बैठने के वाद सुल्तान अलाउद्दीन ने उलुगु खाँ और ज़फ़र खाँ को ३० से ४०००० घुड़सवारों तक की फौज के साथ मुल्तान भेजा। फौज ने शहर घेर लिया। अरक़ाली खाँ, क़द्र खाँ उर्फ़ रुक्नुद्दीन इब्राहीम और मलिका जहान को गिरफ्तार कर लिया गया। रास्ते में हांसी के पास दोनों शहजादों और उनके साले उल्घू खाँ की आँखें निकाल ली गईं। सब की जायदाद को ज़ब्त कर लिया गया और एक दूसरे से अलहदा कर दिया गया।

'और मलिका जहान!' उसने पूछा।

'वे क़ैद हैं। उन्हें हर किसी से मिलने की इजाज़त भी नहीं।'

अहमद ने आकाश की ओर देखा और कहा : 'अल्लाह! तेरा शुक्र है कि इस नाक़िस की तूने इतनी हिफाज़त की,

वर्ना ...'

वह इतना गद्गद था कि आगे बोल ही नही सका।

दिल्ली मे रहना और ज़िंदा रहना !' उसने सोचा, 'कितना बड़ा काम था !'

फिर उसने पूछा : 'और शहर के क्या हाल हैं !'

'अभी तक बागियों को सज़ा मिल रही है।'

'रोज़ कितने आदमी मारे जाते हैं।'

'मैं गिनती नही रख सकता।'

'अल्लाह !' अहमदशाह ने कहा : 'क्या वे सब बागी हैं !'

'नही, उनमें से ज्यादातर बेगुनाह हैं।'

'इन बेगुनाहो के ख़ून का कौन जवाब देगा ?'

'और तो और मुसलमानो को भी हिंदुओं की तरह कत्ल किया जारहा है।'

अहमद ने विक्षोभ से मुट्ठियाँ भीचली। खबर देने वाले ने देखा कि शीघ्र ही अहमद की बँधी मुट्ठियाँ फिर खुल गईं थी।

१२

सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी अपनी बहुमूल्य शैय्या पर लेटा हुआ सोच रहा था। उसे एक एक चित्र सा याद आरहा था।

× × ×

वह रात थी। अंधेरा छा रहा था,

जासूस सामने खड़ा था।

उसने पूछा था: 'क्या बात है?'

'सुल्तान गजब होने वाला है।'

'कैसे!'

'जलाली अमीर भीतर ही भीतर साजिश कर रहे हैं।'

'अच्छा! तू जा! नुसरत खाँ को मेरे पास भेज दे।'

जिस समय नुसरत आया था सुल्तान ने उससे कहा था: 'नुसरत! क्या तुम्हें मंजूर है।'

'आलीजाह! बस हुक्म देदें।'

'मंजूर है।'

'एक इल्तिजा और है।'

'अर्ज़ करो।'

'मेरी कोई शिकायत न सुनी जाये।'

'नहीं,' सुल्तान ने कहा—'बागियों से कोई रहमदिली दिखाना गुनाह करार दिया जायेगा।'

नुसरत चला गया था।

× × ×

वह रात नहीं थी, दिन था।

जलालुद्दीन सुल्तान के बेटे अंधे से तहखानों में घूमा करते थे। अलाउद्दीन ने कहा था: 'सुल्तान रुक्नुद्दीन इब्राहीम की कदमबोसी को हम आरहे हैं।'

रुक्नुद्दीन इब्राहीम ने टटोल कर कहा था: 'कौन? कौन

बोल रहा है ?'

'मेरा हाथ पकड़िये' 'अलाउद्दीन ने कहा : 'मैं आपको कैद से छुड़ाने आया हूँ।'

'क्यों, अलाउद्दीन का क्या हुआ ?'

'वह मर गया। आप ही पुराने सुल्तान के बेटे हैं। अमीरों ने आपको ही वारिस चुना है।'

अंधे ने हाथ पकड़ कर कहा था : 'माँ कहाँ है ?'

'वह भी कैद थी। अब छूट जायेंगी।'

'अल्लाह बड़ा है ! ईमानदारी ही जीतती है।'

'अलाउद्दीन अच्छा आदमी न था ?'

'वह कातिल भेड़िया था।'

अलाउद्दीन ने हँसकर कहा 'मैं वही अलाउद्दीन हूँ।'

डर से कांपकर रुक्नुद्दीन बेहोश होकर गिर पड़ा था।

अलाउद्दीन के ठहाकों से तहखाने गूँजने लगे थे।

× × ×

नुसरत खाँ ने कहा था . 'सुल्तान, आज जलाली अमीरों की बगावत खत्म होगई।'

'हम तुमसे खुश हैं, नुसरत !' अलाउद्दीन ने कहा था।

'आलीजाह ! बागियों को अंधा कर दिया गया है। उनकी जायदादें छीनली गई हैं। वे कहने लगे—हम मुसलमान हैं हम पर जुल्म क्यों किये जारहे हैं। मैंने उनकी जागीरें को खालसा के तहत रक्खा हैं और उनके बच्चे अब भूखे मरेंगे। जिन्होंने पुराने सुल्तान के नाम पर बहुत ज्यादा वफादारी दिखाई थी वे मार डाले गये। वृद्ध को कैद कर दिया है।'

'अच्छा किया ! कुल कितना रुपया मिला इस सबसे ?'

'जुर्मानों और जब्तगियों से करीब एक करोड़ का मुनाफ़ा हुआ है।'

सुल्तान ने प्रसन्न होकर उसे मदिरा ढालकर पिलाई थी। नुसरत खाँ पाँवों पर लेट गया था।

× × ×

'उलुगुखाँ !' एक दुपहर सुल्तान ने कहा था : 'गुजरात के राजा के पास बेशुमार दौलत है।'

और उस बात ने कमाल किया था। उलुगु खाँ और नुसरत खाँ ने अनहिलवाड़ा, गुजरात की राजधानी को जा घेरा था और वहाँ के राजा रामकरन के भाग जाने पर उन्होंने उसकी रानी कमला देवी को गिरफ़्तार कर लिया था। फ़िर सारे मुल्क को लूटा था। महमूद गज़नवी ने जिस जगह से मूर्त्ति उठाकर सोमनाथ में तोड़ दी थी, उसी जगह फिर से जो मूर्त्ति स्थापित करदी गई थी उसे उन्होंने लूटकर दिल्ली भेजा था, सुल्तान के पास तोहफ़ा बना कर। राम करन देवगिरि भाग गया था और राजा रामचंद्र के यहाँ अपनी बेटी देवलदेवी के साथ जा छिपा था।

नुसरत खाँ ने खम्मात में जाकर हिंदू सौदागरों से बेशुमार रुपया ऐंठा था। कितने जवाहिरात दिये थे उन्होंने !

× × ×

'यह कौन है ?' सुल्तान ने पूछा। उसकी आँखें भटक गई थीं। वह एकटक देख रहा था।

नुसरतखान ने कहा था : 'यह गुलाम है। इसका नाम

कोई हक़ नहीं। यह हमारा है और हमारा ही रहेगा।'

उस रात कितना खौफ़नाक मंज़र था। बाग़ियों ने नुसरत खां के भाई मलिक इज़्ज़ुद्दीन और अमीर हाजिब उलुगुखाँ पर हमला कर दिया। उलुगु तो किसी तरह भाग निकला, लेकिन इज्जुद्दीन का क़त्ल होगया। उसके बाद बागियों ने ख़ास सुल्तान के ही एक भतीजे का क़त्ल कर दिया।

× × ×

नुसरत खाँ ने कई दिनों की मेहनत के बाद फ़ौज को काबू में किया। मीर मुहम्मद शाह भाग गया। मीर गभरू भी। अपने बीबी बच्चे भी यह लोग बचा लेगये। लेकिन कहाँ जायेगे यह लोग ! राव हम्मीर इनको बचा लेगा ! बेवक़ूफ़ ! उसके सिर पर भी मौत नाच रही है। चलो। हमला करगे का एक बहाना तो है।

भाग गया, कोई ग़म नहीं, लेकिन सपरिवार निकल गया वर्ना जैसे दूसरों के भागने पर उनके बीबी बच्चों को क़त्ल करके बदला लिया गया उनसे भी लेलिया जाता।

× × ×

नुसरत को भाई के मरने का गुस्सा था। वह इतना क्रुद्ध था कि उसने बाग़ियों की औरतों को पहले बेइज्जत करवाया और तब उनकी इज्जत जब ग़ारत करवा चुका तो उसने उन्हें सड़क के गलीज़ से गलीज़ लुच्चों को रंडियाँ बनाकर देदिया। उन औरतों के सिरों पर रखवा कर उसने उनके बच्चों के टुकड़े टुकड़े करवा दिये। दिल्ली में आतंक छागया था। उस वक्त हिंदू ही नहीं, मुसलमान भी दाँतों

[illegible] है पर गया।

[illegible] ने कहा : 'हज़ारों का नाश कर देने वाली बग़ा-[illegible] के लिये मैं ऐसे हुक्म निकालता हूं जिन्हें मैं [illegible] के लिये [illegible] समझता हूं, जिन्हें मैं रिश्राया के [illegible] हैं। [illegible] लोग लापरवाही करते हैं, बेग्रदबी [illegible] करते हैं और मेरे हुक्मों को नहीं मानते बल्कि हुक्म-[illegible] करते हैं तब उन्हें [illegible] के लिये मुझे कड़ी सजायें [illegible] को मजबूर होना पड़ता है।'

[illegible] ने हाथ उठाकर कहा : 'मैं नहीं जानता यह [illegible] के अनुकूल है या प्रतिकूल। जो राज के लिये अच्छा [illegible] करता हूं। जो मौके पर काम दे जाये वही [illegible] है। और [illegible] के दिन जो इस सबका जवाब देना [illegible] नहीं [illegible]।'

[illegible] सुन कर क़ाज़ी चुप होगया क्योंकि यही [illegible] के लिये फ़तह की थी। आज [illegible] के [illegible]!

[illegible] तड़ चुका था।

× × ×

[illegible]

[illegible]!' सुल्तान सोचता।

[illegible] पर!

[illegible] का ख्वाब कब देखा!

[illegible] की दौलत पाकर!

[illegible] है।

सेना राज्य की है।

तब सम्पत्ति का स्वामी राजा है और सुल्तान ने सोचा : मैं सबकी जागीरें जब्त कर लूंगा । मैं सबकुछ राज्य का बना दूंगा और राज्य मेरा रहेगा।

उसके बाद!

मिल्क, वक्फ, इनाम सब राज के होंगे। लोगो को सिर्फ तनख्वाहें मिलेंगी और फिर बगावत नही होगी। मैं जासूसों का जाल बिछा दूंगा। इंसान कमीना होता है। जिस हाथ को रोटी डालते देखता है उसी को काटता है। मैं किसी पर विश्वास नही करूंगा। मैं जिन पर विश्वास करता हूं, उन्हें दिखाता रहूंगा, किंतु उन पर भी जासूस रखूंगा। एक एक की गहराइयां जांचता रहूंगा। असल में सब अपने अपने मतलब से चिपके रहते हैं। जब इनको टुकडा डालना बद किया जाता है तभी ये फुफकारने लगते हैं।

× × ×

बुदायूं दरवाजे पर शराब उंडेली जाने लगी। शाही शराब जिसमें से तेज बू आती थी।

सुल्तान अपने कांच के पात्र तुड़वा चुका था। शराब के प्याले टुकडे टुकडे कर दिये गये थे।

वह पीता था, मगर अकेला।

दावतें बद थीं, छिपकर पीने की इजाजत थी।

बुदायूं दरवाजे पर शराब इतनी बही, इतनी बही थी कि मिट्टी भीग भीग कर कीचड़ होगई थी।

आम जलसे बंद थे। हुक्म नहीं था कि लोग खुले आम शराब पियें।

रिआया में जशन मनाना उठ गया। ज़िंदगी एक बोझ होगई।

× × ×

सब से बड़ा सर दर्द था हिंदू !

वह कुचला जाता था, दबता था, कटता था, मरता था, पैसे से खरीदा जाकर अपनों से दगा करता था, वह एक नहीं था, उसको एक बनाने वाला कोई मज़हब नहीं था। मंगोल, तुर्क, तातार, अफ़गानी, और अरब, यह सब अलग अलग थे, लेकिन जब जरूरत पड़ती थी, राज्य के लिये, धन के लिये इस्लाम उन्हें एक कर देता था। लेकिन हिंदू हज़ार ऊँच नीच पर झुका था, उठा था, फिर भी वह अपनों से नफ़रत करता हुआ भी अपने को सभ्य मानता था, वह कहता था हम दूसरों की सुनते हैं। इस्लाम में दिमाग़ बंद हैं। यहाँ न सोचने की गहराइयाँ हैं, न जिंदगी की गहराइयाँ। यह एक कठोर नियमावली है, जिसमें हमारी नीच जातियों को भी आनंद नहीं। तुम हमें काफ़िर कहते हो? लेकिन तुम घृणित हो।

सुल्तान ने कहा : 'सच है। यह काफ़िर बड़े 'घमंडी हैं। वे अपने हुक्मरानों को अछूत समझते हैं। वे उनके हाथ का खाते नहीं, पीते नहीं। वे उन्हें नीच समझते हैं।'

सुल्तान को विक्षोभ हुआ।

सुल्तान ने काज़ी से पूछा था : 'मुसलमान राज्य में हिंदू

की क्या औकात है !'

काजी ने कहा 'ऐ सुल्तान ! हिंदुओं को खिराज़-गुजार कहा गया है और जब उनसे मालगुजारी में चाँदी माँगी जाय तो उन्हें निहायत अदब और नर्मी के साथ सोना पेश करना चाहिये। अगर कर इकट्ठा करने वाला मुहस्सिल हिंदू के मुँह में थूकना चाहे तो उसे बिना किसी हिचकिचाहट के अपना मुँह खोल देना चाहिये। इस प्रकार हिंदू अपना अदब, अपनी नर्मी, अपनी गुलामी का इजहार करता है। इस्लाम का गौरव बढ़ाना ही मनुष्य का कर्तव्य है, उसका विरोध करना व्यर्थ है। अल्लाह् ने स्वयं हिंदुओं के पूर्ण पतन की आज्ञा दी हैं, क्योंकि यह हिंदू ही पैगम्बर के सबसे बड़े दुश्मन हैं। पैगम्बर ने कहा है कि या तो वे इस्लाम को स्वीकार करलें या वे फिर मारे जायें या गुलाम बनाकर रखे जायें और उनकी जायदाद को राज छीन ले। अबू हनीफ जैसे दानिशमन्द तक ने कहा है कि हिंदुओं से जजिया लेना उचित है। जबकि बहुतेरे विद्वानों का मत है—मौत या इस्लाम !'

अलाउद्दीन ने प्रसन्न होकर कहा था 'मुझे इसी मज़हब की जरूरत थी। आपके फतवे ने मदद दी है। किसी ने मुझ से कहा था, हिंदू अहले किताब हैं। इसलिये इन पर जुल्म नहीं करना चाहिये। शायद किसी ने पैगम्बर को ग़लत समझा होगा। जो मतलब आपने बताया है, मेहरबानी करके इसे फौज में फैला दीजिये।'

काज़ी चला गया था।

× × ×

दोआब के हिंदू—गंगा और यमुना के बीच के हिंदू।

उनको अपनी जमीन की पैदावार का आधा राज्य को देना होगा। काफ़िर राजा पैदावार का १।६ भाग लेते थे। इस्लाम का बंदा किसान से आधा तक ले लेगा! कुछ घटेगा नहीं। कुछ नहीं। एक बिस्वे की भी छूट नहीं।

चरागाहों पर कर था।

घरों पर कर था।

खूत और बलाहरों (जमींदार) पर भी कर था ताकि गरीबों की कुछ रक्षा होसके।

इस कर ने लोगों को निचोड़ा।

चौधरी, खूत, और मुकद्दमों तक में इतनी हैसियत नहीं थी कि वे घोड़ों पर चढ़ सकते, वे घोड़े ही नहीं रख सकते थे, उनके पास हथियार, अच्छे कपड़े, पान और ऐसी चीजें खरीदने को पैसे ही नहीं थे। यह हालत तो चौधरियों की थी। और रिआया की ?

चौधरियों, खूत और मुकद्दमों की औरतें मुसलमानों के घर जाकर नौकरी करके किसी तरह घर के खर्चे को पूरा करती थीं।

शरफ़ कायिनी, नायब वज़ीर ने सारी सल्तनत पर आय का एक ही कानून लागू कर दिया था।

× × ×

राज्य सर्वोपरि था।

एक चपरासी राज्य का प्रतिनिधि था : अतः एक चपरासी की इज्जत किसी भी हिंदू जमींदार से ऊँची थी।

जो लगान नहीं देता था उसे चपरासी पकड़ लाता, एक कया वह बोस को पकड लाता। वह उन्हें जूते मारता। लातें मारता।

× × ×

लेकिन न्याय न्याय था :

सुल्तान न्याय की मूर्त्ति था। सुल्तान रिश्वत लेने वाले को कडी सजा देता। अगर पटवारी सरकारी अफसर के नाम अपने खाते में एक जीतल का भी हवाला देता तो कड़ी सजा दी जाती। अफसर को न हिंदू से रिश्वत लेने का अधिकार था, न मुसलमान से।

× × ×

सुल्तान सोचता रहा। सोचता रहा।

उसने फौजो के सिपाहियों के लिये सस्ती क़ीमत तय करदी थी। नाज सरकारी खालसा गाँवों में इकट्ठा होजाता। लगान रुपयों के रूप मे नही, नाज के रूप मे लिया जाता। दोग्राब के किसानो की साँस में बग़ावत थी। फौजें और सरकार एक किसान के पास दस मन से ज्यादा नाज ही नहीं छोड़ते थे।

और इस प्रकार प्रजा को जकड कर सुल्तान सब पर हावी होगया था। वह स्वतंत्र, निरकुश और सर्वेसर्वा था। अमीर खुसरो की पहेलियाँ, शेखनिजामुद्दीन औलिया और शेख़ रुक्नुद्दीन उसके साम्राज्य का वैभव फैला रहे थे। अमीरखुसरो भारतीय सगीत में ईरानी सगीत मिलाता जारहा था।

× × ×

सुल्तान प्रसन्न था। जिधर देखता था उधर ही उसे यंत्र की भाँति चलता हुआ जीवन दिखाई देता था।

× × ×

सुल्तान शैय्या से उठ खड़ा हुआ। उसने हाथ बढ़ाकर डंके पर चोट दी। वह चोट साम्राज्य में गूँजने लगी। व्यक्ति की तृष्णा सर्प की भाँति अपने आप फुफकार उठी। किंतु वह इंसान की हविस थी, उसने अपने आपको डसना चाहा और यहीं उसकी विषज्वाल नंगी होकर लपलपाने लगी।

उसके हाथ दक्षिण और पश्चिम को जकड़ने के लिये लालायित हो उठे थे।



भाग--३

चर्पटनाथ का क्रोध : चर्पट बदल गया है

१

घोडो पर योगियो की एक टुकडी जारही है । नगे बदन, देह पर भस्म लगी है । कछोटा बाँधे हैं । हाथो में त्रिशूल और लगाम हैं । पीठ पर ढाल लगी है और कमर मे खड्ग । दूसरी ओर कटारें लटकी हैं । माथो पर त्रिपुण्ड् लगे हैं । चौडे वक्षो पर रुद्राक्ष की मालाए है और कोई कोई लोहे का कवच भी बाँधे हैं ।

वे गारहे हैं । उनका गीत निर्जन पथ मे गूँज रहा है—

झूझति सूरा, बूझति पूरा
अमर पद ध्यावत गुरू ग्यान बका,
दल को मारि जजाल को जीति ले,
निर्भय होइ मेटि ले मन की सका ।

मोटा स्वर, भारी है और अब दोनो ओर के अनगढ़ पत्थरो से टकरा रहा है । घोडे कद्दावर और ऊँचे कूल्हे वाले हैं । उनके चलते वक्त उनकी लबी पूछो और अयाल के बाल हिलते हैं क्योंकि मोटी और टेढी गर्दनो के नीचे ऊँचे मासल वक्ष हैं । लगता है घोडे भी सन्नद्ध हैं । नगी पीठो पर कबलो पर बैठे वे योगी निर्भीक शीश उठाये हैं ।

सुल्तान प्रसन्न था। जिधर देखता था उधर ही उसे यंत्र की भाँति चलता हुआ जीवन दिखाई देता था।

× × ×

सुल्तान शैय्या से उठ खड़ा हुआ। उसने हाथ बढ़ाकर डंके पर चोट दी। वह चोट साम्राज्य में गूँजने लगी। व्यक्ति की तृष्णा सर्प की भाँति अपने आप फुफकार उठी। किंतु वह इंसान की हविस थी, उसने अपने आपको डसना चाहा और यहीं उसकी विषज्वाल नंगी होकर लपलपाने लगी।

उसके हाथ दक्षिण और पश्चिम को जकड़ने के लिये लालायित हो उठे थे।



भाग--३

चर्पटनाथ का क्रोध : चर्पट बदल गया है

१

घोडो पर योगियो की एक टुकडी जारही है। नगे बदन, देह पर भस्म लगी है। कछोटा बांधे हैं। हाथो में त्रिशूल और लगाम हैं। पीठ पर ढाल लगी है और कमर मे खड्ग। दूसरी ओर कटारें लटकी हैं। माथो पर त्रिपुण्ड् लगे हैं। चौडे वक्षो पर रुद्राक्ष की मालाए हैं और कोई कोई लाहे का कवच भी बांधे हैं।

वे गारहे हैं। उनका गीत निर्जन पथ मे गूंज रहा है—

झूझति सूरा, बूझति पूरा
अमर पद ध्यावत गुरू ग्यान बका,
दल की मारि जजाल को जीति ले,
निर्भय होइ मेटि ले मन की सका।

मोटा स्वर, भारी है और अब दोनो ओर के अनगढ पत्थरों से टकरा रहा है। घोडे कद्दावर और ऊंचे कूल्हे वाले हैं। उनके चलते वक्त उनकी लबी पूछा और अयाल के बाल हिलते हैं क्योंकि मोटी और टेढी गर्दनो के नीचे ऊंचे मासल वक्ष हैं। लगता है घोडे भी सन्नद्ध हैं। नगी पीठों पर कबलो पर बैठे वे योगी निर्भीक शीश उठाये हैं।

आगे वाला गाता है, जिसके स्वर को पकड़ कर सब गाते है। संभवतः यह गीत सबको याद है : लो वह गा उठता है

अभूझि झूझि लै पैस दरिया,
मूल बिन वृक्ष अमीरस भरिया।
तन मन लै करि शिवपुर मेला,
ग्यांन गुरु जोगी संसार चला :

और यह पंक्ति बोलते ही उनमें असीम साहस और विश्वास भर जाता है। ज्ञांनवान गुरु जोगी है, संसार चेला है।

फिर उठता है गीत—

मन राइ चंचल थान थिति नांहीं,
बांधि ले पंचभूत आत्मा मांही,
अलष अकथ चक्षु बिन सूझिया,
सिद्ध का मारग साधकै बूझिया....
बूझियाऽऽऽ बूझियाऽऽऽ बूझियाऽऽऽ

विभोर है इस मार्ग की कल्पना। एक आदर्श है जिस
एक दिन मनुष्य की रम्मत होगी।

और आगे वाला फिर हाथ उठाकर गाता है
त्रिशूल आकाश में उठ जाता है—

उलटि यंत्र धरै
सिषर आसण करै,
कोटिसर छूटतां घाव नाहीं,

निर्भय को कैसा भय ! अरे करोड़ों तीरों
नहीं लगता। ऐसा है वह आनंद ऊर्ध्व चेतना का

और भी उन्नद्ध स्वर है—

सिलहट मध्ये काँवरू जीतले,
निर्मल घुनि गगन माही…

और आकाश मानों उस गभीर घोष से प्रतिध्वनित होने लगता है…

मन की भ्रमना तव छूटत होइ जो गीद्र
जब विचारत निहसब्द की वाणी,
नँण के दांता सार घरि पीसिवा
तव योग पद दुर्लभ सत्य करि जाणी…

योग पद ! इसे कौन छीनेगा इनसे ! कौन छीनना चाहता है साधना का अधिकार ! किसमें साहस है जो कुचल सके ! किसका धर्म सत्य के इस महान् सूर्य्य को भी ग्रस लेगा !

उलटि गंगा चलै,
धरणि ऊपर मिलै,
नीर में पैसि करि अग्नि जालै,
घटहि में पैसिकर
कूप पानी भरै
तद पाइ परि पुरुपा भाय उजालै

उस निराकार पुरुप की प्राप्ति होगी इन्हीं योगमार्ग से न ? इसे कैसे छोड़ा जाये !

ग्यान के प्रगटे
श्रीस्यंभूनाथ पाया…
अकल अकथ जती

गोरखनाथ ध्याया……*
ध्यायाऽऽऽ ध्यायाऽऽऽ ध्यायाऽऽऽऽ
स्वर गूँजता चला जारहा है।
ढालों पर त्रिशूलों की रगड़ से झनझनाहट आती है।
मज़बूत जांघों के नीचे घोड़े दबे हैं। शृंगी झूलती जारही हैं
और शंख पीठों पर पड़े हैं।……
आगे वाला पुकारता है—अलख……
योगिदल गरजता है : निरंजन !!
दूर तक स्वर फैलता है……
फिर कोई चिल्लाता है : गुरू गोरखनाथ की
भीमस्वर उठता है……जय……
आगे वाला घोड़ा रोक देता है।
सब पास आजाते हैं।
आगे वाला कहता है : धंगरनाथ !
आज्ञा गुरुदेव ! आदेश !
गोरखपुर कितनी दूर होगा ?
अभी सौ कोस और !
तो रात को कहाँ रुका जाये ?
आदेश गुरु ! यहीं उधर वन है। उस ओर चल
उचित होगा। पास ही गाँव है। वहाँ से भोजन भ
जायेगा। और वहीं का इंगित है कि सिद्ध चर्पटना
धंगरनाथ भी आयेंगे।
आगे वाला धूर्मनाथ है। घोड़े से उतर पड़ता है

…रिये कबीर की कविता से—काल की रेख पर मे

उसके उतरते ही वे भी उतरते हैं और सामने के घने पेडो की आड मे चले जाते हैं।

घूर्मनाथ के लिये धंगरनाथ कंबल बिछाता है :

घूर्मनाथ बैठ कर पांव फैलाता है। मोटी और लोहे की सी जंघाए हैं। नयनो मे निर्भीकता है। यह ब्रह्मचारियो का दल है।

घूर्मनाथ कहता है : 'गांव कौन जायेगा ?'

'मैं ही जाता हूं।'

'तो वह लूटा हुआ सोना उन्हें ही दे दो, और मत बोझ डालो उन पर। तुरको ने छोडा ही क्या है ? तुरको से जो हम लेते हैं, उन्ही को देने दो।'

'यही मैंने सोचा था गुरुदेव !'

गुरु के नयन स्निग्ध हो जाते हैं। कहता है : 'मैं तो योगी भी नही। किंतु यदि महायोगी गोरखनाथ को ऐसी जान हथेलियो पर लेकर चलने वाला योगिदल मिलता तो यह बर्बर नही रहते !'

'गुरुदेव ! उन्होने क्या सिंध के पीर को दण्ड नहीं दिया था ?'

'जाओ वत्स ! गुरुदेव गोरख तुम्हारी रक्षा करें।'

२

रात घना चली है।

धूर्मनाथ कहता है : 'धंगरनाथ अभी नहीं आये।'

'आगया गुरुदेव !' पेड़ों के पीछे सुनाई देता है।

वे देखते हैं। और पीछे मशालें जल रही हैं।

धंगरनाथ आकर खड़ा है। असंख्य ग्रामीण आये हैं। स्त्रियाँ भी, पुरुष भी।

अरे !

यह तो खाने पीने की चीजें आरही हैं। आटा। घी। तेल ! दाल, बूरा। दूध, दही।

लोग धूर्मनाथ के पाँव छूते हैं। 'स्त्रियाँ ढोक देती हैं। बच्चे धरती पर लेट कर दण्डवत कर रहे हैं। फिर वे जोगियों को सबको प्रणाम करते हैं।

'मूल्य देदिया धंगर नाथ ?' धूर्मनाथ का स्वर गूँजता है।

'कोई नहीं लेता गुरुदेव !' धंगर कहता है। 'कहते हैं एक तो जोगी परमात्मा के प्यारे हैं, इस देश में भगवान शंकर के गण हैं। उनसे मूल्य लेकर क्या नरक में जाना है ? फ़िर जब वह भैरव की सेना आई है हमारी रक्षा करने, धर्म की स्थापना करने, तब क्या हम ऐसे कृतघ्न बन जायेंगे।'

एक बयोवृद्ध राजपूत है यह।

आगे आता है। साथ में है गाँव का पूज्य पंडित

राजपूत हाथ जोड़ता है। ब्राह्मण हाथ उठाकर आशीस

देता है। और कहता है : 'जोगियों की वंदना करता हूँ। ब्रह्मचारी नारायण और शिव का रूप होता है। क्या हिंदुत्व मर गया है कि म्लेच्छ से युद्ध करने वाली यह भगवान कल्कि की सेना हमारी सेवा बिना प्राप्त किये चली जाये ?'

योगी गद्गद होते हैं।

घूर्मनाथ उठ कर कहता है : 'पंडित महाराज ! यह धन हमें तुर्कों से लड़ते में मिला। जिनका धन है वही लें। योगी संचय करके क्या करेगा। मूल्य नही लेंगे तो परंपरा बिगड़ेगी। जब है तो लें, जब न होगा तब न लें। योगी घी दूध क्या करेगा ? वह तो चाहिये साधना के समय। इस समय चने काफी होंगे।'

'साधना कहाँ होगी पंडित महाराज !' भंगरनाथ कहता है : 'तुरक तो इस भूमि से यह रूप ही मिटा देना चाहते हैं।'

वृद्ध राजपूत कांपते स्वर से कहता है : 'योगी! योगिराज कृष्ण ने असुरों को मारा था। गुरु गोरखनाथ की सेना भी विधर्मियो का विध्वंस करेगी। यदि यह नीच जातियाँ और शाक्त और बौद्ध मुसलमान न होते तो इस देश में यह विदेशी थे ही कितने ?'

घूर्मनाथ कहता है : 'मुसलमान होकर वे भूल कर रहे हैं ठाकुर ! योगिमार्ग में सबके लिये जगह है। किंतु इस देश से धर्म नष्ट नही होने पायेगा, क्योंकि

वृक्षों के पीछे घोड़ों की टाप सुनाई देने लगती है।

घूर्मनाथ चिल्लाता है : 'सावधान !'

तुरंत योगी घोड़ों पर कूद कर सवार होते हैं और भंगर-

नाथ त्रिशूल उठाकर चिल्लाता है : 'अलख····

वृक्षों के पीछे से प्रचण्ड स्वर आता है : निरंजन !!'

फिर कोई चिल्लाता है वृक्षों के पीछे से—आदिनाथ नाती मछिंद्र ना पूता···

इधर से जोगी गरजते हैं : 'गुरू गोरखनाथ की जय !'

मशालें फरफराती हैं।

'कौन ?'

'गुरुदेव चर्पटनाथ !'

धूर्मनाथ उतर कर चर्पट के पाँव पकड़ कर कहता है : 'आदेश गुरुदेव ! सिद्ध चर्पटनाथ के चरणों में प्रणाम करता हूँ। वीरभद्र कहाँ हैं ?'

'झंगरनाथ !' सिद्ध चर्पट घोड़े से उतर कर कहता है—'पीछे है।'

अब असंख्य होगये हैं वे जोगी। कुछ रोटियाँ सेकने में लग गये हैं। जगह जगह चूल्हे बन गये हैं और कोई पानी ले आया है, तो किसी ने आटा गूँध लिया है और लपटें उठ रही हैं। एक धूनी बीच में रमा दीगई है। उसके पास धंगरनाथ, झंगरनाथ, धूर्मनाथ, चर्पटनाथ, फटकनाथ, पंडित और वृद्ध ज़मींदार राजपूत बैठ गये हैं। बाकी ग्रामीण और उनके परिवार कौतूहल और श्रद्धा से हट कर बैठे हैं।

लपट खेलने लगी है। उसका प्रकाश मशालों के प्रकाश के साथ अब अंधकार में फरफराने लगा है।

'इस गाँव में तो तुर्क नहीं आये ?' पूछता है चर्पटनाथ।

'गाँव में क्या छोड़ा है ? पंडित कहता है—'हनुमान का

मदिर था, उसे नष्ट कर गये। पन्द्रह स्त्रियां छीन लेगये। बलपूर्वक आठ आदमियो को मास खिलाया। और जैन मदिर की सब पुस्तकें जला डाली।'

भंगरनाथ कहता है : 'वह अलख जगाने की आवश्यकता है जिसे नामदेव ने पंजाब मे जगाया है। गुरुदासपुर के घोमान गाँव में नामदेव ने ठाकुर-द्वारा बना के ही छोडा। तुर्कों ने पूरा जोर लगा लिया पर नामदेव ने ऐसा यत्न लोगो में भरा कि लोगों की भीडें टूट पडी। जहाँ मदिर मठो की शखध्वनि बंद होगई, वहाँ अब दिनदहाडे कीर्तन प्रारभ होगये हैं। यह देश मत्स्येंद्र और गोरखनाथ का देश है। यही आदिनाथ ने योगमार्ग प्रवर्त्तित किया था। यही शिव, विष्णु और ब्रह्मा का देश है। यही देवी ने लोक में अनेक दर्शन दिये हैं। जो जोगी मुसलमान होगये हैं, पहले तो वे इसके विरुद्ध थे कि जोगियो पर मुला (मुल्ला) आक्रमण करें। किंतु अब उन्हें मुलाओ ने लालच देकर बहका लिया है। वे गुरु गोरखनाथ के शिष्य अब महमद को ही गुरु से भी ऊँचा मानने लगे हैं। काजी महमद महंमद करता है। ऐसे १ लाख ८० हजार पैंगबर (पैगबर) हो चुके हैं। जीव और जीव साथ रहते हैं। वे हत्या करके रक्त मांस का सेवन करते हैं? सबको अपने ही गोत्र का क्यो नही समझते? अपने पुत्र को क्यो नहीं देखते?'

भंगर का स्वर भर्राने लगा है।

चर्पट कहता है - 'शरीर धारी! तुम जीव हत्या करते हो! उस पचभूत के मनमृग को मारो जो तुम्हारी बुद्धि

रूपी बाडी को चर रहा है। योग का तो मूल ही दयादान है। गोरख ने तो कहा है कि हे मनुष्य ! मुक्ति चाहता है तो मन को मार, जिसके न शरीर है, न माँस, न रक्त और न वर्ण है।

और फटक कह उठता है—

सबद हमारा परतर साँडा
रहणि हमारी साथी
लेपै लिपी न कागदमाडी
सो पत्री हम वाची।

चर्पट गंभीर स्वर से कहता है : उत्पत्ति से हम हिंदू हैं और जरणाँ से हुए हैं योगी, वैसे हम पीर भी हैं किंतु हम किसी के दास नहीं हैं। सब वर्णों के अलग अलग कर्म है—

तटि तीरथ ब्रह्मणि के करमा,१
पुंनु दान खत्री२ के धरिमा३
वाणिज विउपार,४ वैसनो५ के करिमा,
सेवा भाउ सूध्रि६ के धरमा,
चारों वरनि इहु चारो धरमा,
चरपट प्रणवै सुणिहो
सिधु मनु वसि कीए जोगी के धरमा।

१ कर्म
२ क्षत्रिय
३ धर्म
४ व्यापार
५ वैश्यों
६ शूद्र

चर्पट की बात सुनकर पंडित पुलक उठा है। वह कहता है : 'ठीक कहते हैं योगी। यही धर्म है। और इसी धर्म का यदि कोई नाश कर रहा है तो वह यह विदेशी तुर्क हैं और पीछे डोल रहे हैं यह नीच जो धर्म बेच चुके हैं। योगिराज कृष्ण ने कहा है—

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावह।'

'अपने धर्म में मर जाना अच्छा है, पर दूसरे का धर्म भयानक है। क्या सचमुच अब कोई मार्ग नहीं? क्या वेद पुराण और यह योगियों, संतों और परमात्मा के भेजे हुओं की पवित्र वाणियाँ नष्ट होजायेंगी? नष्ट हो जायेंगे यह गहन दर्शन-शास्त्र? केवल एक किताब कुरान ही बच रहेगी?'

'नहीं पंडित महाराज!' चर्पट कहता है— यह काजी बुरे हैं।

मैंने तो कह दिया था काजी से—

महमद महमद न करिकाजी
महमद का विषय विचार
महंमद हाथ करद जे होती
लोहै घड़ी न सारं।
सबदै मारी सबदै जिलाई
ऐसा महमद पीरं
ताके भरिम न भूलो काजी
सो बल नहीं सरीरं!
नाथ कहता सब जग नाथ्या
गोरख कहता गोई

कलमा का गुरू महंमद होता
पहलें मूवा सोई ।
सारमसारं गहर गंभीरं
गगन उछलिया नादं ।
मानिक पाया फेरिलुकाया
झूठा वाद विवादं । *
किंतु वह बोला यह कुफ्र है ।

तब मैंने स्पष्ट कहा—

उतपति हिंदू, जरणाँ जोगी,
अकलि पीर मुसलमांनीं
ते राह चीन्हो हो काजी
मुलां ब्रह्मा विस्नु महादेवमांनीं ।×

* ओ काजी मुहम्मद मुहम्मद मत कर। मुहम्मद के विचार पर विचार कर। मुहम्मद के हाथ में जो छुरी थी वह न लोहे की थी न इस्पात की। वह तो वचन की मार मारता था, उसीसे जिला देता था, ऐसा पीर था मुहम्मद। इसलिए ओ काजी ! भ्रम में न भूल ! वह बल तुझमें कहाँ है ? नाथ अर्थात् लोक को वश में रखने वाला नाम होने पर भी लोक को नाथ डाला गया है। गोरख कहकर भी अध्यात्मिक जीवन छूट गया है। इसी तरह कलमा के शब्द दुहरा लेने से क्या होता है ? कलमा देने वाला गुरु मुहम्मद ही मर गया है पहले। जब ब्रह्मरन्ध्र पर अनाहत नाद सुनाई दिया तो गहन गम्भीर सार का भी सार मिल गया, वह मानिक मिल गया पर तुम्हारे लिए छिपा रह गया, यह वाद-विवाद सब झूंठा है। उसी तत्त्व को पकड़ो।

× उत्पत्ति से हम हिंदू हैं, जरुणां से जोगी हैं। अकल से मुसलमान पीर। हे मुल्ला काजी ! वह राह पहंचानो जो ब्रह्मा विष्णु और महादेव ने मानी थी।

'धन्य है।' वृद्ध राजपूत विभोर स्वर से कहता है।

'किंतु उसका परिणाम क्या हुआ जानते हो ?'

सब ही देखते हैं।

'युद्ध !'

'फिर !'

'लोग उठ खड़े हुए हमारे साथ। हमने लुटेरों को काट डाला।'

'जय गुरू गोरखनाथ !' भ्रमरनाथ चिल्ला उठता है।

सब पुकार उठते हैं आवेश छागया है।

उसी समय एक व्यक्ति आकर कहता है—'जोगी महाराज !'

वे देखते हैं।

रक्त से भीगा है वह !

'कौन हो तुम !'

'तीन कोस पर हमारा गाँव लुट रहा है।'

'क्यों ?'

'फौजी आये हैं। राज्य ने फौजियों के नये भाव कर दिये हैं। टके का अस्सी मन नाज लेने हैं। पर अब जबरन करके अंधेरे में मांगा १०० मन। नहीं दिया तो कत्ल होगया।'

'अलख !' चर्पटनाथ उठकर उछल कर घोड़े पर बैठता है।

और जोगियों की भीड़ घोड़ों पर चढ़ती चढ़ती पुकारती है 'निरंजन !!'

देखते ही देखते पकी अधपकी रोटियाँ छोड़कर वे जोगी

दौड़ा देते हैं ।

और पंडित कह रहा है : 'ठाकुर ! फिर भारत भूमि में

...य छायेगा, फिर धर्म लौटेगा !'

२

ऐसे न जाने कितने छोटे छोटे युद्ध होते हैं, और उत्तर भारत में पंजाब से बिहार तक घोड़ों पर सवार योगियों के दल घूमा करते हैं। जब समय मिलता है तब वे आसन इत्यादि कर लेते हैं, अन्यथा ब्रह्मचर्य्य ही उनका योग साधन है। उनकी कट्टरता किसी भी तरह तुर्कों से कम नहीं है।

चर्पटनाथ कहता है : 'मुसलमान बुरे नहीं। महंमद स्वयं पीर था। लेकिन यह काजी बुरे हैं जो हमारे सबकुछ को नष्ट कर देना चाहते हैं। बाकी कुछ नहीं छोड़ना चाहते।'

और मुसलमान जोगी दुविधा में पड़े हैं। अब भी उनके घरों में देवी पूजा चलती है, वे गोरखबानी गाते हैं, भगवान शंकर की बरात का वर्णन गाते हैं, *

और योगी कहते हैं कि हम तो धर्म की सेना हैं, ह... तो धर्म के रक्षक हैं....

धर्म है भारतीय संस्कृति...

* जिसका रूप अब तक मुसलमान जोगियों के यहाँ क्रम ल... रूप में विद्यमान है।

श्रौर जितना ही वे प्रजा की श्रोर से तलवार उठाते हैं, तना ही शासक वर्ग उनके विरुद्ध होता जारहा है। शासक विदेशी, किंतु उनकी राज्य की प्यास इस्लाम की श्राड लेती है श्रौर इसमें ईरानी संस्कृति के संरक्षक मुल्ला घी डालकर श्राग को भड़काते हैं श्रौर धर्म की श्राड से विदेशी सेना को न्याय प्राप्त होता है · लूटने का, बलात्कार का साम्राज्य विस्तार का, क्योंकि श्रब इस न्याय से काफिर को मारना एक न्याय-संगत विषय बन जाता है, साम्राज्य की तृष्णा धर्म की श्राड मे जागती है उधर प्रजा प्राय हिंदू है, उसका शासकों के विरुद्ध विद्रोह कहलाता है मुसलमानो के विरुद्ध विद्रोह ', श्रौर ईरानी संस्कृति जब भारतीय संस्कृति को कुचल डालना चाहती है, तब भारतीय संस्कृति सिर उठाती है श्रौर उसका नाम बनता है हिंदुत्व—शासकों के शब्दों में—कुफ्र श्रौर इस तरह गोरख के शिष्य—योगी जो ब्राह्मणवाद के विरुद्ध हैं, संस्कृति की रक्षा के प्रयत्न में कहलाने हैं···हिंदू श्रौर जैनो की भाँति वे भी हिंदुश्रों के निकट श्राते जारहे हैं क्योंकि विदेशी मुसलमान दोनो मे भेद नही करते तुर्क तोडते हैं मंदिर वे नाथ मठ श्रौर श्रन्य हिंदू मंदिरो का भेद नही करते

कुरश्रान का लेख कहना है कि जिन जातियों के पास धर्म ग्रंथ है वे काफिर नही है, भारत में अनेक धर्म ग्रंथ हैं श्रब नी सबसे पूज्य है वेद श्रत शासकों का जजिया लेन कुरश्रान के हिसाब मे अनुचित है किंतु साम्राज्य अपनी भू है इसलिए काजी मुल्ला श्रौर शासक कहते है

]

अनेक देवता हैं····अनेक संप्रदाय हैं····यह मूर्त्तिपूजक हैं····
काफ़िर हैं····और संघर्ष बढ़ता जाता है···
बढ़ती जाती है राज्य की सीमा···बढ़ती जाती है लूट····
र प्रजा का विद्रोह बढ़ता है····एक होरहे हैं सब····वेद की
छाया में सब एक होरहे हैं····संस्कृति के लिये होरहे हैं एक····
खेतों और पेट के लिये होरहे हैं एक···प्रजा का हाहाकार एक
किये देरहा है····योगी खड्ग लिये घूमते हैं····और सुनते हैं
शासक···और दिन दिन टक्कर होती है····तुर्क निकलते हैं
जिहाद करने····मरे तो मीर, और गाज़ी, जिये तो बादशाह
होकर····जोगी हैं····मरे तो अलख निरंजन····और जिये तो
आदिनाथ के मार्ग की स्थापना···दो संस्कृतियों की मुठभेड़
है····दोनों कट्टर हैं···दोनों भयानक हैं····एक है शोषक···एक
है शोषित····

और अब गाँव गाँव में विद्रोह उठ रहा है, उठ रहा है,
उठ रहा है प्रचण्ड निर्घोष····
स्त्रियाँ गाती हैं····
जोगियों के ठठ घूमते हैं····
लहू बोलता है धरती पर गिरकर····
तब जोगी की तलवार आकाश की ओर उठती है···
और गूँजती है प्रतिध्वनि···
खेत ललकारते हैं उन घोड़ों को जो उन्हें रौंदने आते हैं
धरती में से अंगारों की पाँति सी चमकती हैं कटे · ि
की लहूलुहान शहादत····
उधर नामदेव जगा रहा है सोये हुओं को—भ

समेटे ले जारहा है'''नीचो को उठा रहा है'''इधर सशस्त्र जोगी दहाड रहे है "सिंध से गंगा तक विक्षोभ उमड़ रहा है" जोगियो के घोड़े जब दौड़ते हैं तब लगता है महाकाल जाग उठा है'''

एक ओर तुर्क वीर अपने साथ असंख्य उत्तर पश्चिम की विदेशी और सन्नद्ध जातियो के साथ गरजते हैं—अल्लाहो अकबर

दूसरी ओर वीर योगी कुचली हुई जनता के साथ दहाड़ते है—अलख निरंजन

खांडे पर खांडा गिरता है, जैसे बिजलियां टकरा गईं।

दोनो ओर अपना अपना विश्वास है, दोनो ओर धर्म के नाम पर मर मिटने वाली तृष्णा है, परन्तु एक ओर की तलवार गिरती है धन की प्यास में, और दूसरी ओर की तलवार उठती है उस धन की रक्षा के लिये।

कठोर मुद्रा वाले तुर्क भीम शक्ति से प्रचण्ड गर्जन करते हैं....

और कठोर आकृति वाले जोगी उन्मद्ध स्फूर्ति से ललकारते फिरते हैं आततायी को

दुपहर का समय होगया है
घोडे भाग रहे हैं
उनके पीछे धूल उड रही है....

यह घोडे भी बगावत के निशान हैं, क्योंकि अलाउद्दीन का स्वप्न है कि प्रजा को इतना गरीब बनादो कि वह घोड़ा तक न रख पाये और जोगी देख रहे हैं महादेव, देवी,

अनेक देवता हैं····अनेक संप्रदाय हैं····यह मूर्त्तिपूजक हैं····
ः काफ़िर हैं····और संघर्ष बढ़ता जाता है···
बढ़ती जाती है राज्य की सीमा···बढ़ती जाती है लूट····
धर प्रजा का विद्रोह बढ़ता है····एक होरहे हैं सब····वेद की
छाया में सब एक होरहे हैं····संस्कृति के लिये होरहे हैं एक····
खेतों और पेट के लिये होरहे हैं एक···प्रजा का हाहाकार एक
किये देरहा है····योगी खड्ग लिये घूमते हैं····और सुनते हैं
शासक···और दिन दिन टक्कर होती है····तुर्क निकलते हैं
जिहाद करने····मरे तो मीर, और गाज़ी, जिये तो बादशाह
होकर····जोगी हैं····मरे तो अलख निरंजन····और जिये तो
आदिनाथ के मार्ग की स्थापना···दो संस्कृतियों की मुठभेड़
है····दोनों कट्टर हैं···दोनों भयानक हैं····एक है शोषक···एक
है शोषित····

और अब गाँव गाँव में विद्रोह उठ रहा है, उठ रहा है,
उठ रहा है प्रचण्ड निर्घोष····
स्त्रियाँ गाती हैं····
जोगियों के ठठ घूमते हैं····
लहू बोलता है धरती पर गिरकर····
तब जोगी की तलवार आकाश की ओर उठती है···
और गूँजती है प्रतिध्वनि···
खेत ललकारते हैं उन घोड़ों को जो उन्हें रौंदने आते हैं···
धरती में से अंगारों की पाँति सी चमकती हैं कटे सि
की लहूलुहान शहादत····
उधर नामदेव जगा रहा है सोये हुओं को—भक्ति

भैरव, हनुमान····सबके मन्दिर इरादतन तोड़े गये हैं····वे जिधर जाते हैं उधर उन्हें हाहाकार सुनाई देता है। तब उनकी मांस पेशियों में लहू मचलता है उमड़कर उसे फाड़ निकलने को····

प्रयाग की छाती पर जहाँ गंगा और यमुना मिली हैं, जहाँ लोग कहते हैं कि एक अदृश्य सरस्वती भी है···सरस्वती यानी वाणी यानी संस्कृति का ज्ञान····वहाँ मेला जुड़ रहा है ····पर्व स्नान के लिये स्त्री पुरुष आरहे हैं—हजारों वर्षों से आते रहे हैं तब भी आते थे जब नागों का यहाँ राज्य था··· तब भी आते थे जब नाग और आर्य्य मिलकर एक होगये और तब इसी तीर पर वेद मंत्रों के साथ लोग नहाते रहे····तब भी आते थे जब जैन, बौद्ध और ब्राह्मण तथा अवैदिक शैव और शाक्त···सब अलग अलग थे, और आज भी आये हैं····वे नहीं जानते वे कब से आते हैं—वे समझते हैं कि जब आदि काल में कभी समुद्रमंथन हुआ था, वे उससे भी पहले से यहाँ आते रहे है····यहाँ धुर दक्खिन रामेश्वरम् से काश्मीर तक और कामरूप से कच्छ तक के विभिन्न रूपों, आकृतियों और भाषाओं के लोग न जाने कब से आते रहे हैं····यहाँ न जाने कितने इतिहास करवट बदल चुके हैं····यहीं वासुकि ने धर्म चक्र का प्रवर्त्तन किया था; यहीं अक्षयवट है जिस पर मार्कण्डेय को नारायण ने शाश्वत जन्म मरण सृष्टि और प्रलय दिखाया था, यहीं सिद्धों ने अमर गीत गाये थे, यहीं आदिनाथ के नाती मछिन्द्र के पूत ने धूनी रमाई थी, यहीं शंकर और कुमारिल भट्ट ने तर्क किये थे····ऐसी है यह सनातन पृथ्वी, यहाँ की पवित्र धारा में आते हैं नहाने भील,

मुण्डा, सथाल, ब्राह्मण, जैन, शैव, योगी और न जाने कौन कौन किंतु अब तुर्क इसे रोकना चाहते हैं, वे इसे कुफ्र मानते है। जल मे नहाने से मुक्ति नही होती, कौन नही जानता कि तीर्थ है, किन्तु तुर्क कैसे रोक सकते है इसे ? वे भी तो मक्का जाते हैं। वहाँ क्या वे पत्थर पर ही सिर नही रगडते ? परब्रह्म कहाँ नही है ? फिर वे उसे पूज्य क्यों कहते है ?

अतः घोडे दौड रहे है और प्रयाग की रक्षा के लिये ठट्ठ के ठट्ठ टूट रहे है तूफान की तरह, आँधी की तरह उनके घोडो के दौडने मे धूल उडती है, मार्ग में गाँव वाले जय जयकार करते हैं ··

चर्पटनाथ का पसीना अब बहने लगा हैं।

'भ्रमरनाथ !'

'गुरुदेव !'

'प्रयाग कितनी दूर है ?'

'दूर नही है गुरुदेव !'

'आज त्रिवेणी में योगी स्नान करेंगे। योगियों का झंडा धारा में नहायेगा। यह वही त्रिवेणी है न जहाँ सिद्धों ने अमर काया ग्रहण की थी ?'

'गुरुदेव ! इसी गंगा को भागीरथ लाया था। स्वय महादेव ने पतितपावनी को अपने सिर पर झेला था, एक स्त्री को धारते देखकर साक्षात् शक्ति भी ईर्ष्यालु हो उठी थी। तभी त्रिपुर भैरवी को अपना हृदय दिखाया था महादेव ने और भैरवी ने उनके हृदय में देखी थी त्रिपुर सुदरी अपना ही

प्रतिबिंब !

'तो झंगरनाथ अब तुर्क वहाँ लूटेंगे ?'

फटकनाथ कहता है : 'गुरुदेव वहाँ बच्चे भी जायेंगे।'

धूर्मनाथ कहता है : 'स्त्रियाँ भी जायेंगी।'

धंगर पुकारता है : 'गुरुदेव ! वहाँ प्रजा वे आज उत्पीड़न करेंगे।'

झंगरनाथ का स्वर तीखा हो उठता है : 'मन्दिरों में घंटे और झालरें नहीं बजतीं। ग्रंथों का सस्वर पाठ नहीं होता। जिन चौराहों पर ज्ञान विज्ञान की चर्चा होती थी वहाँ अब कुत्ते घूमते हैं, जिन घरों की स्त्रियों को सूर्य्य नहीं देखता था. वे अब नौकरियाँ करती हैं, जिस भूमि के किसान अतिथियों का सत्कार करते थे, वे अब अपने खंडहरों में सिर धुनते है, जहाँ कवि और सन्त गाते थे, वहाँ अब सियार चिल्लाते हैं, जहां आयुर्वेद की औषधियाँ धन्वंतरि के काल से बनती आ-रही थीं, वहाँ पुस्तकें जला दी गई हैं, जहाँ अमरकाव्य थे, वहाँ हरहर महादेव कहने का भी अधिकार नहीं है....

'और तेज़ करो घोड़ों को,' चर्पट चिल्लाता है और धरती मानों हिलने लगती है...प्रतिध्वनित होता है पिसे हुओं का हृदय....

अब वे घोड़ों को जांघों से दाबे झुक गये हैं क्योंकि घोड़े लंबी उछालों के साथ सरपट दौड़ रहे हैं...

और उस तेज़ी पर भी धंगर बोलता है : 'माता जगदम्बा के पीठस्थान नष्ट होरहे हैं, स्वयं आदिनाथ के ज्योर्तिलिङ्गों का विध्वंस किया जारहा है, जैसे एक दिन गजवनी (गज़नी)

के तुर्क ने सोमनाथ का मंदिर लूटा था....

हुंकार फूट निकलती है....

मेला लग रहा है। लोग नहा रहे हैं, कोई जप कर रहा है, कहीं खेल होरहे हैं....सब ही हैं...न जाने कौन कौन सा संप्रदाय है....

हठात् कोलाहल हो उठता है....

गूंजता है स्वर...प्रचण्ड स्वर....अल्लाहो अकबर....

भगदड़ मच जाती है....घोड़े चढ़ आये हैं...कुफ्र का विध्वंस होरहा है....हाहाकारों पर अट्टहास मचल उठते हैं....और तब विस्फोट की तरह प्रतिध्वनित होता है...अलख-निरंजन....फिर भीम शंखनाद...

और तब वीरों के घोड़े वीरों के घोड़ों से टकराते हैं....अल्लाह और निरंजन के वीरों की तलवारें चलती हैं....प्रजा में साहस लौटता है....दलित प्रजा लौटती है....और साम्राज्य और प्रजा में टक्कर होती है....

त्रिवेणी में तीसरी अदृश्य सरस्वती की धार बह कर मिलती है....गंगा के श्वेत और यमुना के नीले जल में जाकर मिलता है लाल लाल रंग—लोहू का रंग....

बहुत तुर्क मारे जाते हैं, शेष भाग जाते हैं। योगियों के वक्षस्थलों पर घाव लगे हैं, ग्रामीण अब मुक्त होकर नहा रहे हैं, ग्राम वधुएं योगियों के पराक्रम के गीत गा रही हैं, लोग उनके चरणों पर लाकर बच्चों को ढोक दिला रहे हैं, गंगा में दीप बह रहे हैं...

जय....

जय माता गंगे...

आदिनाथ ने तुझे शीश पर धारण किया है...

तूने पवित्र किया है इस वसुंधारा को...

जोगी उत्पत्ति से हिंदू हैं और हिंदू ही सिद्ध होरहे हैं....

उनका वेश ही साक्षात् महादेव का है....

चर्पटनाथ त्रिवेणी में उतर कर झंडा डुबाता है...

और भीड़ें चिल्लाती हैं....जय

गुरु गोरखनाथ की जय....

जय जय कार हवा पर सिंहों की तरह दहाड़ता दिल्ली की ओर भाग रहा है....

और एक योगी भागा आता है घोड़े पर ...

'कौन ?' चर्पट कहता है—'प्राणनाथ ! तू कैसे आया ! गोरखपुर से ?'

'गुरुदेव का बनाया मंदिर खतरे में है योगी ।' प्राणनाथ कहता है । सुल्तान ने गोरखपुर में नाथों का मंदिर नेस्तनाबूद करने की आज्ञा देदी है, क्योंकि वही योगियों का सर्वमान्य पीठ है, और वहीं से विद्रोह का संचालन होता है....

चर्पट घोड़े पर चढ़ता है और गरजता है—'गोरखपुर की ओर वीरो ! सूरमाओ ! गुरुदेव के मंदिर के लिये....

'यम को भी काट देंगे !' चिल्लाते हैं योगी ।

और घोड़े भागते हैं...

पूर्व की ओर...वहाँ जहाँ आदिनाथ के नाती मछिन्द्र के पूत आदिनाथ के अवतार महायोगी गोरक्षनाथ ने धर्म की स्थापना की थी....

अलख निरंजन...जय महादेव....हर हर महादेव...गोरख-नाथ की जय....म्लेच्छों का नाश हो....

प्रतिध्वनि....प्रतिध्वनि....अब जगह जगह आग की तरह संवाद फैल रहा है और योगियों की सारी लपटें उमड़ चली हैं गोरखपुर की ओर जहाँ वे सब महारुद्र के तीसरे नयन की भाँति खुल कर महावह्नि से धू धू करके धधक उठेंगे....

४

जंगल। बियाबान।

झंगरनाथ चर्पटनाथ के मुँह पर पानी के छींटे देता है।

चर्पटनाथ नहीं जागता।

वह हवा करता है....

एक बार उनींदी सी आँखें खुलती हैं....

झंगर पानी पिलाता है...

चर्पट जागता है....

उसका हाथ झंगर के चौड़े कन्धे पर लगता है। लहू से भीग जाता है। उस कन्धे से बहते लहू को चर्पट अपने माथे पर लगाता है, और फिर मूर्च्छित हो जाता है....

झंगर उसे लिटा कर खड़ा होजाता है। पास में घोड़ा चर रहा है। उसके बांये भाग से खून बह रहा है। झंगर उसे पुचकारता है। घोड़ा कान खड़े करके देखता है और पास

आजाता है। झंगर उसे सहलाता है और कहता है : पवन ! मैं जंगल से रूखड़ियाँ लाने जाता हूँ। तू गुरुदेव के पास .। चौकसी करता रह। दूर नहीं जाऊँगा। कोई खतरा हो तो मुझे पुकार कर बुलाना।

घोड़ा फरफराता है।

झंगर जंगल में घुस जाता है।

साँझ होगई है। झंगर की दवा से घोड़ा स्फूर्ति पा रहा है। और चर्पट नाथ जाग उठा है....

'कौन ? झंगर !'

'गुरुदेव !'

'झंगर युद्ध का क्या हुआ ?' वह उठने लगता है....

'लेटे रहिये गुरुदेव ! लेटे रहिये, नहीं तो घाव फिर फट जायेगा....

'फट जाने दो झंगर....मुझे बताओ....

'सुल्तान की विशाल सेना और आगई थी।'

'फिर आप घायल होकर घोड़े से गिर पड़े थे...'

'फिर,'

'योगी समुदाय अन्त तक लड़ता रहा...किंतु...

'किंतु....'

'अन्त में सब कट गये....मैं भी गिर पड़ा....

'तब...'

'मुझे याद नहीं....'

'फिर....'

'जब मुझे होश आया, मैंने एक मलवे का ढेर देखा....

'किसका मंगर...

'उसी मन्दिर का जिसकी नींव आदिनाथ के नाती मछिंद्र के पूत ने रखी थी

चर्पट की आँखें भर आई हैं...

'मगर क्या प्रलय होगया '

'हाँ गुरुदेव ! तीन बार जब जोगियों ने सुल्तान की विराट वाहिनी के दाँत खट्टे कर कर दिये और वीरवश से जोगियों ने उसे उखाड उखाड कर लौटा दिया तब उसने सारी शक्ति लगादी और

'और

'उन्होंने मन्दिर की नींव तक उखाड कर फेंक दीं

चर्पट रोने लगा है।

'रोयें नहीं गुरुदेव ! मन्दिर फिर उठेगा,' मगर कहता है—'कहते हैं एक दिन नरकासुर पृथ्वी को ही लेगया था, परतु विष्णु उसे फिर निकाल लाये थे '

अवरुद्ध कण्ठ, आँखों में पानी और पानी में अंगार, फिर भी घायल और कुचले हुये का विक्षुब्ध विद्रोह

आह चर्पट की कराह।

मगर पानी डालता है मुँह में।

चैतन्य होकर चर्पट कहता है 'फिर ?'

'जब मुझे होश आया मैंने देखा चारों ओर जोगियों की लाशें पड़ी थीं। सियार, कुत्ते और चील गिद्ध उन्हें फाड फाड कर खा रहे थे। देखा मैंने। मेरे पास ही पवन खड़ा था न जाने कब से खड़ा मुझे जागने देख हिनहिनाया तब

मैं उठा और और आपको ढूँढा....फटकनाथ का सिर कटा पड़ा था....धंगर का धड़ अलग था....परन्तु वह चार तुर्कों की लाशों पर था और पांचवें के शरीर में घुसा उसका त्रिसूल अब भी उसके कटे धड़ के हाथ में मौजूद था...मैंने देखा धूर्म-नाथ...मन्दिर के हाथी की लाश के सामने चार टुकड़ों में पड़ा था, परन्तु उसके सामने तुर्कों की लाशें थीं....मैं गिन नहीं पाया....दस बारह होंगी....चंपानाथ....प्राणनाथ....सब वहीं पड़े थे....जगह जगह धूँआ उठ रहा था....और असंख्य लाशें पड़ी थीं। असंख्य तुर्क थे। लेकिन फिर भी वे हमसे बहुत अधिक थे...बहुत अधिक थे....तब मुझे आप मिले.... घायल....छाती पर घाव लिये...देखा....धमनी अभी बज रही थी....पवन को बुला कर आपको चढ़ाया और अंधेरा होने लगा तब धीरे धीरे ले आया...उस समय तुर्क सिपाही दूर खाना बना रहे थे....और उनके घोड़े हिनहिना रहे थे...

झंगर रो पड़ा है....

चर्पट की आंखें पानी से धुँधली होगई हैं....

'झंगर! हम भी मर जाते....'

'नहीं गुरुदेव! फिर तो सब ही डूब जाता। गुरु गोरख-नाथ ने बचाया है आपको, फिर से जगाने के लिये, फिर से आग फैलाने के लिये....शिव शक्ति मिलन के रस से फिर जीवन्मुक्ति का स्वाद लोक को चखाने के लिये....'

चर्पट चुप होगया है। झंगर भी।

फिर वह उठ कर पवन के पास जाता है। कहता है: 'गुरुदेव! यह मेरा वत्स घायल ही खड़ा रहा....'

योगी में ममता जागती है, घोड़े को छाती से लगा लेता है...

रात बीत गई है।

'झंगर चलो !'

'गुरुदेव ! आज वन में छिपे रहना ठीक है। तुर्क एक एक जोगी का कत्ल कर रहे हैं....'

कितनों का करेंगे झंगर...वह कहाँ तक करेंगे···सिंध से कामरूप तक, काश्मीर से दक्षिण तक....अब क्या माताओं के पुत्र नहीं होंगे....क्या देह में फिर वे आत्माएं नहीं आयेंगी जो मुक्ति के लिए उठेंगी....आत्मा तो नहीं मरती.... वह तो आती रहेगी...और जोगी सदैव आते रहेंगे....आदिनाथ का मार्ग कभी भी समाप्त नहीं होगा. योगी सदैव धर्म की सेना बनकर जियेंगे, और निस्स्वार्थी होकर लोक और आत्मा को मुक्त करते रहेंगे ..

पवन पर चर्पटनाथ बैठा धीरे धीरे चला जारहा है और पैदल चल रहा है झंगरनाथ ...

किसी वन में ...

'किसी गुहा में गुरुदेव.... तब तक जब तक फिर सारे घाव न पुर जायें

'घाव तो तब पुरेगा झंगर जब फिर गुरु का मन्दिर उठ खड़ा होगा, फिर उस पर धर्मध्वज फहराने लगेगा...

'वह दिन भी दूर नहीं है गुरुदेव ! कहते हैं पहले भी यहाँ कई बार विदेशी आक्रान्ता आ चुके हैं, परन्तु सनातन भूमि की सनातन संतान कभी भी मिटी नहीं है···अनादि

काल से यह धरती निरंजन महादेव का जयजयकार करती आई है और करती जायेगी····यह तुर्कों का धर्म तो कुल छः या सात सौ बरस का है····यह क्या इस धरती को अपने अंधकार में डस सकेगा····यह तो पीर की वानी को ही मानते हैं····यह क्या जानें कि योगमार्ग क्या है····'

'और मुसलमान जोगियों ने क्या किया···'

'काज़ी ने उन्हें डराया। कहा कि जो काफिर से मिलोगे तो तुम भी मारे जाओगे····'

'मारे गये ?'

'कई। कहते रहे कि आदिनाथ और गोरखनाथ का मार्ग तो श्रेष्ठ ही है और रहेगा भी···जाफ़रमीर और नाटेसरी पंथी काफ़ी कुचले गये···काजी ने कहा कि तुम मुसलमान होकर भी कुफ्र करते हो···रतननाथी वैरागियों ने पेशावर में कड़ी टक्कर ली है···ऐसा मैंने सुना है····कावुल के जोगी मुसलमानों का इन विदेशी मुसलमानों ने बड़ा विध्वंस किया···गृहस्थ जोगियों की स्त्रियाँ नंगी कर डालीं और····'

'रहने दो भंग····ररहने दो···वे मुसलमान क्यों हुए जोगी होकर···ब्राह्मण कैसा भी हो महादेव का तो उपासक है, वे तो महादेव को ही लात मारते हैं बौद्धों ने तो मुसलमानों का साथ देकर अपने विहारों का सर्वनाश देख लिया···यदि यह जोगी भी मुसलमान न होते तो क्या आदिनाथ का मन्दिर यों टूट जाता····पर अब जोगी और मुसलमान न होंगे····न होंगे यह शाक्त जुलाहे····उन्होंने इन मुक्ति दिलाने वाले तुर्कों का रूप देख लिया है····यह सबको कुचलते हैं···राजा को भी,

प्रजा को भी ब्राह्मण को भी, जैन को भी शाक्त को भी, जोगी को भी इतरनाथ ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र पहले का समाज कहाँ गया वे योगी का सम्मान करते थे और यह विदेशी '

'बर्बर हैं गुरुदेव ! यह अपने ही मत को सर्वश्रेष्ठ कहते हैं और किसी को भी जीवित नहीं रहने देना चाहते पहले तो ऐसा नहीं होता था तर्क होते थे, पर शास्त्रार्थ में जीत पर ही धर्म फैलाया जाता था कुछ भी हो गुरुदेव ! जोगी हिंदू ही तो हैं नहीं तो यह यवन सब कुछ मिटा देंगे '

'वर्णधर्म का अहंकार मिट जाये अगर फिर क्या दोष है ये मूर्ख मूर्तियाँ तोड़ कर समझते हैं कि वे देवता को तोड़ते हैं। मूर्ति में भगवान कहाँ है अगर वह तो हमारे भीतर है वेद और कुरान को रट कर वह नहीं मिलता ' उसके लिये शील, क्षमा, दया, त्याग, तितिक्षा चाहिये वहाँ है वह इनमें मूर्ति तो निम्न अधिकारी की साधना को केन्द्रित करने को है, मन्दिर है हमारे परस्पर मिलन की ठौर, उपासना व्यक्ति की वस्तु है, सिद्धि और परमसुख प्राप्ति मन की वस्तु हैं, यों मन्दिर मूर्ति नष्ट होने से तो कोई भी नष्ट नहीं होगा पत्थर चूने का क्या फिर खड़ा हो जायेगा अगर पर जोगी समय रहते नहीं चेत वे अपने आडवरों में पड़े रहे कहते रह ' हमें राज्य म क्या कोई भी राजा हो जाय हमारी साधना इस लोक की नहीं हमें तो जन्मांतर के फंद काटने हैं पर गुरु गोरख ने कहा था, जोगी सूरमा है, वही सबसे बड़ी विजय पाता है '

काल से यह धरती निरंजन महादेव का जयजयकार करती आई है और करती जायेगी....यह तुर्कों का धर्म तो कुल छ या सात सौ बरस का है...यह क्या इस धरती को अपने अंधकार में डस सकेगा....यह तो पीर की वानी को ही मानते हैं....यह क्या जानें कि योगमार्ग क्या है....'

'और मुसलमान जोगियों ने क्या किया...'

'काज़ी ने उन्हें डराया। कहा कि जो काफिर से मिलोगे तो तुम भी मारे जाओगे....'

'मारे गये ?'

'कई। कहते रहे कि आदिनाथ और गोरखनाथ का मार्ग तो श्रेष्ठ ही है और रहेगा भी....जाफ़रमीर और नाटेसरी पंथी काफ़ी कुचले गये....काजी ने कहा कि तुम मुसलमान होकर भी कुफ्र करते हो....रतननाथी वैरागियों ने पेशावर में कड़ी टक्कर ली है...ऐसा मैंने सुना है....काबुल के जोगी मुसलमानों का इन विदेशी मुसलमानों ने बड़ा विध्वंस किया.... गृहस्थ जोगियों की स्त्रियाँ नंगी कर डालीं और....'

'रहने दो भंग....र रहने दो...वे मुसलमान क्यों हुए जोगी होकर....ब्राह्मण कैसा भी हो महादेव का तो उपासक है, वे तो महादेव को ही लात मारते हैं बौद्धों ने तो मुसलमानों का साथ देकर अपने विहारों का सर्वनाश देख लिया....यदि यह जोगी भी मुसलमान न होते तो क्या आदिनाथ का मन्दिर यों टूट जाता....पर अब जोगी और मुसलमान न होंगे....न होंगे यह शाक्त जुलाहे....उन्होंने इन मुक्ति दिलाने वाले तुर्कों का रूप देख लिया है....यह सबको कुचलते हैं....राजा को भी,

प्रजा को भी · ब्राह्मण को भी, जैन को भी शाक्त को भी, जोगी को भी क्षगरनाथ ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र " पहले का समाज यहां गया वे योगी का सम्मान करते थे और यह विदेशी '

'बर्बर हैं गुरुदेव ! यह अपने ही मत को सर्वश्रेष्ठ कहते हैं और किसी को भी जीवित नही रहने देना चाहते पहले तो ऐसा नही होता था तर्क होते थे, पर शास्त्रार्थ में जीत कर ही धर्म फैलाया जाता था कुछ भी हो गुरुदेव ! जोगी हिंदू ही तो हैं नही तो यह यवन सब कुछ मिटा देंगे '

'वर्णधर्म का अहंकार मिट जाये क्रगर फिर क्या दोष है" वे मूर्ख मूर्तियां तोड कर समझते हैं कि वे देवता को तोडते हैं। मूर्त्ति में भगवान कहां है क्रगर वह तो हमारे भीतर है वेद और कुरान को रट कर वह नहीं मिलता··· उसके लिये शील, क्षमा, दया, त्याग, तितिक्षा चाहिये कहां है यह इनमें मूर्त्ति तो निम्न अधिकारी की साधना को केन्द्रित करने को है, मन्दिर है हमारे परस्पर मिलन की ठौर, उपासना व्यक्ति की वस्तु है, सिद्धि और परमसुख प्राप्ति मन की वस्तु हैं, यों मन्दिर मूर्त्ति नष्ट होने से तो कोई भी नष्ट नही होगा" पत्थर चूने का क्या फिर खडा हो जायेगा क्रगर पर जोगी समय रहते नही चेते वे अपने आडम्बरों में पडे रहे कहते रहे···हमें राज्य से क्या कोई भी राजा हो जाये हमारी साधना इस लोक की नही हमें तो जन्मांतर के फंद काटने हैं पर गुरु गोरख ने कहा था, जोगी सूरमा है, वही सबसे बडी विजय पाता है '

झंगर रुक गया है। पवन भी। चर्पटनाथ उतरता है। सामने ग्राम है।

झंगर जाता है।

लौट आता है....

'गुरुदेव !'

'क्या हुआ झंगर....'

'गाँव खाली पड़ा है....'

चर्पट कहता है : 'कब तक ऐसे ही चलता रहेगा....'

झंगर उत्तर नहीं दे पाता....अब उसके सामने वे चित्र आरहे हैं..

सुल्तान की विराट सेना बढ़ती आरही है....हाथी....घोड़े....पैदल....

और फिर जोगियों के घुड़सवार टूटते हैं....

अलख निरंजन....

अल्ला हो अकबर....

अलख निरंजन....

अल्लाहो अकबर...

शाही सेना भाग रही है....

एक बार....

दो बार....

तीन बार....

तब चारों ओर से घेर कर विक्षुब्ध प्रहार....

तब भीम शक्ति से प्रतिरोध....

धूल...

घुँग्रा ...

सर्वनाश

कई दिन बीत गये हैं।

अब वहाँ लाशें नहीं हैं।

परंतु खंडहर पड़ा है।

पवन हिनहिनाता है, शायद उसे याद आगया है।

'झंगरनाथ !'

'गुरुदेव !'

'यह देखो'''यह देखो

'क्या है गुरुदेव !'

'देखो झंगर,' चर्पट कहता है—'उन्होंने एक एक ईंट से ईंट बजादी, नीवें खोद कर पलट दीं, मन्दिर मिटा दिया, किंतु

'किंतु क्या गुरुदेव

'पुराने गुरुओं की समाधियों में अभी तक उनकी अस्थियाँ पड़ी हैं'' वे दधीचियों और जीवन्मुक्तों की हड्डियाँ हैं'

झंगर सुनता है और स्फुरित होता है''

एक वयोवृद्ध योगी खंडहर की दूसरी ओर से निकलता है

आदेश

आदेश

वे एक दूसरे को देखते हैं और निर्मम योगियों की आँखें गीली हो आती हैं

फिर से वीरों के यूथ उमड़ेंगे झंगर सुनता है वृद्ध कह रहा है और चर्पट विभोर होगया है

भाग—४

चर्पटनाथ की सिद्धि का दूसरा चरण :

चर्पट ने देखा और सो

१

चारण हूँपा गाने लगा :

चौहान वंश में दीक्षित वासुदेव नाम का एक पराक्रमी राजा हुआ। उसका पुत्र नरदेव आकाश और पाताल तक अपना खड्ग चलाता था। ओ वीरों के पुत्रो ! चंद्रराज का पुत्र जयपाल हुआ, जिसके पुत्र जयराज ने शत्रुओं की लाशों से पक्षियों को परितृप्त किया। उसका पुत्र सामंतसिंह सिंह की भाँति गर्जन करता था। गुयक उसका पुत्र था जिसके घोड़े की चाल देखकर शत्रुओं के हृदय काँपते थे। उसके बाद नंदन, वप्रराज और हरीराज ने वीर गौरव को संभाला। उसके पुत्र सिंहराज ने हेनिम नाम के म्लेच्छ का वध किया। उसके बाद उसका भतीजा भीम सिंहासन पर बैठा जिसके वीर पुत्र विग्रहराज ने गुजरात के मूलराज को सदा के लिये रक्षक्षेत्र में सुला दिया। उसके उपरांत गंगदेव हुए, जिनका पुत्र वल्लभराज था जिसके बाद राम राजा सिंहासन पर चढ़ा। उसके पुत्र चामुंडरभ्य ने म्लेच्छ हेजमुद्दीन को मारा। उसके पुत्र दुर्लभराज ने शहाबुद्दीन को जीता। उसके पुत्र दुशल ने

कर्णदेव को मारा। दुशल के पुत्र वीर वीसलदेव ने शहाबुद्दीन को मारा। फिर पृथ्वीराज हुए जिनका पुत्र अल्हण था। उसके पुत्र अनल ने अजमेर में आना सागर खुदवाया। कहते हैं उसके पास पारस पत्थर था। उसके बाद क्रमशः जगदेव, बीशल, जयपाल और गंगपाल हुए, गंगपाल के पुत्र सोमेश्वर का कर्पूरादेवी से विवाह हुआ। उससे दूसरा पृथ्वीराज जन्मा। हरीराज उसका पुत्र था। गोविंद हरिराज का उत्तराधिकारी हुआ। वाल्हण उसका पुत्र था जिसके बाद प्रहलाद हुआ। वीरनारायण उसके बाद गद्दी पर बैठा। वीर-नारायण के बाद वाल्हण के दूसरे पुत्र वाग्भट्ट को गद्दी मिली। उन्ही के पुत्र वीर जैत्रसिंह थे। उन्हीं की वीर पत्नी हीरा के गर्भ से महाराज हम्मीर जन्मे, जिनके पराक्रम से त्रिभुवन कंपित हो उठता है।

चारण रुक गया। सेना ने राजा हम्मीर का जयजयकार किया। इसके उपरांत सेनापति धर्मसिंह और भीमसिंह के नेतृत्व में सेना ने प्रयाण कर दिया। अलाउद्दीन ने उलगु खाँ को रणथंभोर पर आक्रमण करने भेजा था।

२

जैत्रसिंह की पत्नी हीरादे बड़ी ही सुन्दरी थी। जिस समय हम्मीर गर्भ में था उस समय मुसलमानों के अत्याचारों की कथाएं प्रसिद्ध हो चुकी थीं। हीरादे को विचित्र दोहद

होता था। वह मुसलमानों के रक्त में स्नान करने की इच्छा करती। जब हम्मीर का जन्म हुआ तब ज्योतिषियों ने घोषणा की कि यह वीर पुत्र अवश्य म्लेच्छों के रुधिर से पृथ्वी को धोयेगा। हम्मीर के दो भाई थे—सुरत्राण और विराम। राजा जैत्रसिंह वृद्ध होने पर हम्मीर को राज्य देकर वनवास के लिये चला गया।

राजा हम्मीर पराक्रमी था। उसने सरसपुर के राजा अर्जुन को जीता, फिर उसने गढ़मन्डल के राजा से कर वसूल करके धार के भोज पर आक्रमण किया। यह भोज भी प्राचीन भोज की भाँति कवियों का आदर करता था। इस भोज को हराकर हम्मीर ने उज्जैन जीता जहाँ शिप्रा के जल में उसके हाथियों, घोड़ों और सैनिकों ने स्नान किया। राजा ने स्नान करके महाकाल के मन्दिर में पूजा की जो तुरुष्कों के खंडित कर देने के बाद फिर उठ खड़ा हुआ था। फिर उसने चित्तौर की ओर सेना मोड़ी और मेवाड़ को उजाड़ता हुआ वह आबू पर्वत पर गया। आबू पर्वत पर उसने ब्राह्मण धर्मानुयायी होने पर भी जैन तीर्थंकर ऋषभदेव की पूजा की। फिर अचलेश्वर की उपासना करके आबू के राजा को हरा कर वह वर्द्धनपुर गया जहाँ उसने लूटा, नाश किया, फिर चंपा को ध्वस्त करके वह अजमेर की राह से पुष्कर तीर्थ गया जहाँ उसने आदिवाराह की आराधना की। फिर वह शांकंभरी गया। मार्ग में उसने मरहटा (जोधपुर देशस्थ) खंडिल्ला, चमदा और काकरौली को लूटा। फिर वह रणथंभोर—अपनी राजधानी में लौट आया और उसने अपने

गुरु विश्वरूप के पौरोहित्य मे कोटियज्ञ नामक यज्ञ करना प्रारंभ किया जिसमें विभिन्न देशो के ब्राह्मणो को बुला कर खूब दक्षिणा दी गई ।

इसके उपरात हम्मीर ने सुल्तान अलाउद्दीन को कर देना बन्द कर दिया । उसने मुसलमानो को अपमानित किया और अपने को हिंदू मात्र का रक्षक घोषित कर दिया । यज्ञ का धुआ निरंतर उठता रहा ।

२

यज्ञ समाप्त हो चुका था । राजा हम्मीर क्रोध से घूम रहा था । हठात् उसने मुड कर कहा 'फिर क्या हुआ ?'

धर्मसिंह ने सिर झुकाये हुए कहा : 'हमने वर्णनाशा नदी के किनारे म्लेच्छो का भीषण संहार किया और भीमसिंह विजयी होकर लौट चले । किंतु लूट का माल बहुत मिला था । सैनिक घर पहुँचने को व्यग्र थे । इसी व्यग्रता में उन्होंने एक नायक को पीछे छोड दिया और वे हिंदावत घाटी के बीच पहुँचे । तब उन्होंने विजय के नगाडे बजाये । हम नहीं जानते थे उलुगखां छिपकर पीछा कर रहा था । उन्होंने अधिक सख्या मे होने के कारण अन्त मे वीर भीमसिंह को मार डाला ।'

'और उलुग खां कहां गया ?'

'वह दिल्ली लौट गया।'

'तुम अंधे हो। तुम देख भी न सके कि वह पीछे आरहा था। क्लीव ! तुम भीमसिंह की रक्षा के लिये भी नहीं दौड़ सके ? भोजदेव !'

राजा का लगता भाई भोजदेव इस समय आगे बढ़ा।

'आज्ञा महाराज !'

'तुम आज से सेनापति नियुक्त किए जाते हो। धर्म्मसिंह को अंधा और क्लीव बनाकर निकाल दो।'

भोजदेव ने हाथ जोड़ कर कहा : 'महाराज ! एक प्रार्थना है।'

राजा ने मुड़ कर देखा।

भोजदेव ने कहा : 'युद्ध तो महाराज युद्ध है। उस समय धर्म्मसिंह वहाँ होते तो और बात थी। इन्हें क्षमा करें महाराज !'

राजा ने कहा : 'तुम कहते हो ?'

भोजदेव ने कहा : 'घणीखमा महाराज।'

'तो छोड़ दो।' राव ने कहा : 'किंतु इसका बदला दिल्ली से अवश्य लेना होगा। किंतु इसे अंधा अवश्य करदो।'

राजा ने पत्थर पर लकीर खींच दी थी।

धर्मसिंह का चीत्कार कुछ ही देर में प्रतिध्वनित हो उठा। वह बगल के कक्ष में अंधा कर दिया गया था। उसकी आँखों से बहता रक्त देख कर राधा वेश्या मूर्च्छित होकर गिर गई क्योंकि उसी ने एक दिन राधा को राव के पास पहुँचाया था।

सभा विसर्जित होने ही वाली थी कि द्वारपाल ने विनय की : 'महाराज ! कुछ म्लेच्छ दर्शन करना चाहते हैं ।

राजा चौंक उठा । उसने भोजराज की ओर देखा । भोजराज बाहर गया । कुछ ही देर में एक लंबा चौड़ा मुसलमान राजा के चरणों पर अपना खड्ग रखकर बैठ गया ।

'कौन हो तुम ?' राजा ने पूछा ।

'मैं मीर मुहम्मद शाह, नौ मुस्लिम हूँ ।' आगंतुक ने कहा । 'मैं मंगोल हूँ । अलाउद्दीन हमारा दुश्मन है । वह मुझे तबाह करना चाहता है । किसी तरह मैं भाग कर अपने परिवार को बचाकर लाया हूँ । मैंने सुना था कि राजपूतों की आन सदा से यही है कि जो शरणागत होता है, वे उसकी रक्षा करते हैं । राजा ! मै तुम्हारी शरण में आया हूँ । मेरा भाई मीर गमरू बाहर राजा की भेंट लिये खड़ा है ।'

राजा ने बाहर जाकर देखा । पाँच घोड़े, एक हाथी, दो मुल्तानी कमान, एक तलवार, दो बाण, दो बहुमूल्य मोती और बहुत से ऊनी वस्त्र थे । राजा प्रसन्न हो उठा ।

ब्राह्मण विश्वरूप की भौं पर बल पड़ गये । उसने राणा से धीरे से कहा 'विधर्मी का विश्वास क्या ?'

राजा ने धीरे से उत्तर दिया 'मुझे अपने खड्ग पर ही विश्वास रखना है ।' फिर ज़ोर से कहा 'मुहम्मद शाह उठो ! मैं तुम्हे शरण देता हूँ । एक क्या हजार अलाउद्दीन भी आयें किंतु प्राण रहते मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा ।'

मीर मुहम्मद शाह ने सिर झुकाकर कहा 'वीरों के वीर ! मैंने तेरे बारे में यही सुना था ।'

राव ने कहा : 'आज से मैं तुझे पाँच लाख की जागीर देता हूँ। तू रणथंभोर के दुर्ग में ही मेरे पास रह।'

राधा ने द्वार पर खड़े होकर सुना। भीतर अभी तक धर्म्मसिंह पीड़ा से विह्वल था। राधा का हृदय घृणा और प्रतिशोध से तड़पने लगा। उसने धर्मसिंह से कहा : 'तुमने सुना! राव ने मुसलमान को शरण दी है?' उसका स्वर तनिक ऊँचा था।

'शश...' धर्मसिंह ने कहा : 'चुप रह राधा! चुप रह! वह राव हैं। वे राजपूत हैं। यही तो धर्म है।'

राधा ने आश्चर्य्य से देखा और पूछा : 'तुम्हें अब भी क्रोध नहीं?'

'नहीं' उसने कुटिलता से मुस्करा कर टटोल कर उसका हाथ पकड़ कर कहा : 'समय ही बलवान होता है। आज राव का समय है राधा! लेकिन तू चाहेगी तो एक दिन मैं इस राव से ही इसका बदला लूँगा।'

'मैं वचन देती हूँ।' वेश्या ने कहा।

उधर सभा विसर्जित होरही थी।

४

दूत लौट आया था। अलाउद्दीन नुसरत खाँ और उलुगखाँ के साथ चिंतित बैठा था। दिल्ली के भव्यप्रसाद में मंत्रणा होरही थी।

पड़ेगा ।

'ज़रूर पड़ेगा', सुल्तान ने कहा : 'मैंने काज़ी को बुलाया है । आज ही फ़तवा दिला दूँगा कि मीर मुहम्मद शाह मंगोल है और कभी सच्चा मुसलमान नहीं हुआ इसलिये काफ़िर है ।'

उलुगु खाँ ने सिर झुका कर कहा : 'जहाँपनाह! हुक्म दें। देर होरही है ।'

सुल्तान ने उठते हुए कहा : 'तुम दोनों रणथंभोर को धूल में मिला दो ।'

दोनों ने सिर झुकाये ।

५

राधा उदास लौटी ।

अंधे धर्मसिंह ने कहा : 'राधा! आज तू उदास क्यों है ?'

'राव ने तो आज मेरा नाच ही न देखा ।'

'क्यों ?'

'घोड़ों को बेधरोग जो होगया तो कई तो मर भी गये ।'

धर्मसिंह ने हाथ दबाकर कहा : 'राधा ! समय आगया । राजा से कह कि धर्मसिंह में वह जादू है जो इन मरे घोड़ों से दुगने लादे ।'

राधा ने कहा : 'कैसे ?'

धर्मसिंह हँसा । उसने कहा : 'वह मेरे ऊपर छोड़ ।'

और सचमुच राधा ने धर्मसिंह को फिर उसी पद पर आसीन करवा दिया। भोज पदच्युत हुआ। और वैद्यनाथ के मन्दिर में राव ने उसका अपमान किया जिसके फलस्वरूप भोज अपने भाई पीतम और अपने परिवार को साथ लेकर काशी यात्रा के बहाने निकल गया और अंत में अलाउद्दीन की शरण में चला गया। सुल्तान ने उसे बड़ा सम्मान दिया।

धर्मसिंह प्रजा को निचोड़ने लगा। रतिपाल अब भोज की जगह कोट्टपाल था। वह धर्मसिंह का साथी बन गया क्योंकि धर्मसिंह इस समय राव हम्मीर का प्रिय बन गया था।

६

उलुगखाँ ने भांई को जीता। संवाद पाकर राव के पार्श्व में अभय परमार, सूरसिंह राठौड़, हरी बघेला, रणदूला चहुँमान इकट्ठे होगये। घमासान युद्ध होने लगा। रणथंभोर पहुँचने के पहले ही मुस्लिम सेना पर वीरम ने पूर्व से, मीर मुहम्मदशाह ने पश्चिम से, जाजदेव ने दक्षिण और मीर गफरू ने उत्तर से आक्रमण किया। अभी वे लोग संभले भी न थे कि अग्निकोण से रतिपाल ने, वायुकोण से निचर मोगल, ईशानकोण से रणमल और नैऋत्यकोण से वैचर ने हमला किया। इस भयानक मार से सुल्तान की सेना विह्वल हो उठी। किंतु सेना विशाल थी। लकड़ी के घेरों में उसकी सेना

में कई मारे गये। रतिपाल ने कई मुसलमान स्त्रियों को पकड़ा जो कि कुलीन थीं और उसने उन्हें गाँवों में जाकर मट्ठा बेचने को विवश किया। इस अपमान से मुस्लिम सेना अत्यंत विह्वल हुई। मुगलों और नोमुस्लिमों ने मीर गभरू के सेनापतित्व में भोज के भाई पीतम को सुल्तान की दी हुई जगरा जागीर में पकड़ लिया और बाँध लाये। मीर बंधुओं की ईमानदारी प्रसिद्ध होगई।

उलगुखाँ ने नुसरत से सलाह की और मोल्हण देव नामक हिंदू को हिंदावत की घाटी में पहुंच कर राव हमीर के पास संधि का दूत बना कर भेजा। मुस्लिम सेना भीतर घुसती गई, राजपूत प्रसन्न थे कि वे स्वयं घिरे आरहे थे और मुस्लिम प्रसन्न थे कि शत्रु के गढ़ में घुस रहे थे। नुसरतखाँ ने मँडी पथ को रोका और उलुगुखाँ ने श्रीमण्डप दुर्ग, बाकी सेना जैन सागर के तीर पर रुक गई।

दुर्ग की रक्षा के लिये तैल और राल तैयार थे कि कब डंके पर चोट पड़े और कब उन्हें आग पर गर्म करके फेंका जाय।

मोल्हण देव अपमानित होकर लौट आया।

भीषण युद्ध प्रारंभ होगया। और संध्या के समय एक पत्थर प्राचीर पर से ऐसा फिका कि नुसरत का सिर तोड़ गया। नुसरत खाँ की मृत्यु से सुल्तान की सेना थर्रा उठी। मीर मुहम्मदशाह और राजपूतों के भीषण हमलों ने सुल्तान की सेना के पैर उखाड़ दिये। भीषण क्षय के अंत में किसी प्रकार उलुगु खाँ झाँई पहुँचा और उसने संवाद दिल्ली भेजा।

७

सुल्तान अलाउद्दीन उसी समय नमाज पढ़कर उठा था। भोजराज पागलों की तरह आखड़ा हुआ। उसने धरती पर चादर बिछादी और उस पर ऐसे लोटने लगा जैसे उसे भूत ने पकड़ लिया था। वह रह रह कर चिल्ला उठता था।

सुल्तान को आश्चर्य हुआ। उसने डांटा : 'भोजराज!'

'सुल्तान!' भोज कांपता हुआ उठ खड़ा हुआ।

'क्या है!'

'नुसरत खाँ मारे गये। फौज भाई भाग आई, उलगुखाँ ने मदद माँगी है, जगरा की जागीर पर मीर मुहम्मद शाह ने कब्जा कर लिया, मेरा भाई पीतम पकड़ा गया'

और फिर वह पृथ्वी पर बिछी चादर पर लोटने लगा।

अलाउद्दीन गरजा : 'भोजराज!'

'क्या करूं?' भोजराज ने हाथ फैला कर कहा : 'सारी पृथ्वी राव हमीर की है। मैं तो विश्वासघाती हूं। धरती पर पाँव रखते डरता हूं, तभी चादर बिछा कर पछाड़ खाता हूं।'

सुल्तान ने खड्ग की मूंठ पर हाथ रख कर कहा : 'भोजराज हम चलेंगे!'

'चलें सुल्तान!' उसने कहा 'राव हमीर ने अपने किले पर सूप के झंडे गड़वा दिये हैं कि हमारा तो कुछ भी नहीं बिगड़ा, हमने तो फटक कर फेंक दिया।'

अलाउद्दीन ने क्रोध से होंठ चबा लिया।

८

सुल्तान की सेना चल पड़ी। तिलपत के जंगल में शाही पड़ाव पड़ा था। सुल्तान घोड़े पर हिरन के पीछे दौड़ रहा था। दूर उसका भतीजा अक़त खाँ था।

सुल्तान ने देखा अक़तखाँ ने कमान पर तीर चढ़ा कर मारा। किंतु वह हिरन से दूर गिरा।

सुल्तान को सन्देह हुआ।

इसी समय दूसरा बाण छूटा। सुल्तान ने उसे अपनी ढाल पर रोका। वह तुरंत समझ गया।

उसने वाणों का निवारण करते हुए घोड़ा दौड़ाया और एक ही हाथ में अक़त का सिर काट कर फेंक दिया। तलवार को उसी के वस्त्रों में पोंछते हुए उसने घृणा से थूका और कहा : बग़ावत!

रात के समय सेना में हलचल मच उठी। नौमुस्लिमों ने विद्रोह कर दिया था। किंतु मलिक हमीद अमीरकोह ने विद्रोह को कुचल दिया। सेना फिर बढ़ने लगी। उसने मालवा को उजाड़ा, धारनगरी को लूटा और आगे बढ़ गया। किंतु तभी समाचार आया कि गुलाम फखरुद्दीन के पुत्र हाजीमौला ने उमरखाँ और मंगूखाँ के साथ मिलकर दिल्ली के कोतवाल तुरमुजी को जुल्मी कह कर क़त्ल कर दिया और भीड़ लेकर नगर द्वार जीत लिये। खज़ाना लूट कर बाँट लिया। शाह नजफ के नाती सय्यद को गद्दी पर बिठा कर बड़े बड़ों से भेंट दिलाई गई। उस दिन अलाउद्दीन दिल्ली का सुल्तान

नहीं रहा।

सुल्तान ने माथे पर हाथ फेरा। मन ही मन खुदा को याद किया और मलिक हमीद अमीरकोह को विद्रोह का दमन करने भेजा और स्वयं झाँई की ओर बढ़ गया। वहाँ जाकर उसने उलुगबेग को भी दिल्ली भेजा।

कई दिन बाद जब लौटा तो उसने बताया कि बुदाँयू दरवाजे को जीत कर अमीर कोह ने हाजीमौला को हराया, मार डाला और सुल्तान को सिर भेज दिया। सय्यद को लाल किले में मार कर उसने उसका सिर काट कर भेज दिया।

उलुग ने हाजी मौला का परिवार ही नष्ट नहीं किया था वरन अपने को निरपराध बताने वाले तुरमुजी के पुत्रों को भी मार डाला।

तब सुल्तान ने चैन की साँस ली और उलुग खाँ से कहा: 'अब मैं इस काफिर हम्मीर को देखूँगा।'

उस समय उलुग खाँ ने सिर झुका कर कहा: 'सल्तनत में कोई गड़बड़ नहीं है सुल्तानेआला, लेकिन रणथंभौर का किला पहाड़ी इलाके में है। उसे तरकीबों के बिना जीता नहीं जा सकेगा।'

सुल्तान ने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरकर कहा: 'सुल्तान अलाउद्दीन पहाड़ों को ठोकर लगा कर चूर करता है।'

उलुग खाँ ने कहा: 'तो फिर हुक्म दें।'

'रणथंभौर की तरफ कूँच करो।'

'हिंदावत की घाटी भयानक है।'

अलाउद्दीन ने कहा: 'तुम डरते हो?'

'नहीं सुल्तान।' उलुगूखाँ ने कहा : 'लेकिन मुहिम ज़रा ख़तरनाक तो है।'

सुल्तान ने मन ही मन शक्ति को तोला। लेकिन अब लौटने का समय नहीं था। वह चाचा जलालुद्दीन वाली भूल नहीं करना चाहता था।

९

रणथंभीर को घेरे हुए सुल्तान छः महीने से पड़ा था। भीतर सारा नगर छिपा हुआ था। संध्या के पहले ही सैनिकों ने घी के कुण्डों में भींग रही बाटियाँ निकाल कर खाली थीं। नित्य प्रायः छोटे मोटे युद्ध होते। इधर कुछ दिन से शांति छा गई थी। समझ में नहीं आरहा था कि सुल्तान चुप क्यों था। दुर्ग की प्राचीर पर राव हमीर बैठ गया। वहीं अनेक वीर सैनिक एकत्र होगये। आज कल राजपूत बहुत थोड़ी अफ़ीम खाते थे।

सुल्तान ने देखा दुर्ग की प्राचीर पर एक स्त्री नाच रही थी।

वह राधा थी। उसने नाचते नाचते सुल्तान की ओर पाँव दिखाया।

सुल्तान ने देखा तो कहा : 'उलुगु खाँ। इस काफ़िर औरत को सज़ा देसके ऐसा कोई तीरंदाज़ हमारी फ़ौज में है?'

उलुगुखाँ ने कहा : 'आलीजाह ! अपना एक क़ैदी है

उद्‌डानसिंह ! शायद कैद से छोड़ने का आश्वासन देने पर वह इसे बेध दे।'

उद्‌डानसिंह ने जब मुक्ति की शर्त सुनी तो पहले तो सोच में पड़ गया। फिर उसने बाण चढ़ाया और वह निशाना मारा कि रामा प्राचीर के नीचे गिर गई। सुल्तान की सेना में जयजयकार होने लगा। राव हम्मीर पीछे हट गया।

'कायर !' मुहम्मदशाह ने कहा: 'राव महाराज ! सुल्तान हमेशा का कायर है। मैं उसे इसका सबक दूँगा।'

उसने कमान पर तीर चढ़ाकर फेंका। अलाउद्दीन के सिर से ताज नीचे गिर पड़ा।

शाही डेरे उखड़ने लगे। वे झील के पूर्व से पश्चिम की ओर चले गये। दूसरे दिन सुबह ही मीर गभरू ने राव हम्मीर से कहा: राव महाराज ! मेरे साथ चलें।'

राव हम्मीर साथ गया।

दूर जमीन पर काले काले धब्बे थे।

'वह क्या है ?' हम्मीर ने पूछा ?

मीर मुहम्मदशाह ने कहा 'सुल्तान की खामोशी की वजह।'

'वे सुरंगें हैं महाराव ! गभरू ने कहा—'आज्ञा दें। मैं आज रात ही उन्हें खत्म कर आऊँगा।

लेकिन वहां सुल्तान की सेना है।'

'उसका ध्यान हटाने को मैं दूसरी तरफ से हमला करूँगा। मीर मुहम्मदशाह ने कहा।

दूसरे दिन प्रात सुरंग नष्ट हो चुकी थीं। सुल्तान

अपनी सेना की लाशें उठवाता रहा। उसका विक्षोभ सीमा पर आगया था। उसने कहा : 'उलुगुखाँ। और कब तक!'

उलुगुखाँ ने आकाश की ओर देखा। घने बादल आगये थे। सुल्तान ने भी देखा और कहा : 'पानी बरसेगा!'

'इस साल इस रेगिस्तान में भी कहर बरसेगा?' उलुगुखाँ ने धीमे स्वर से कहा।

आकाश में बिजली कड़कने लगी। दुर्ग में चारणों की वज्र हुँकारें सुनाई देने लगीं।

१०

यह कथा चारण हूँपा ने रोरोकर केलवाड़े में लखनसी के पुत्र अजयसिंह के बड़े भाई अरसी के पुत्र हम्मीर को सुनाई थी। उस समय हम्मीर राणा छोटा था और चित्तौड़ का प्रबंध उसका चाचा रतन सी करता था। चारण हूँपा ने कहा था :

और तब वर्षा के कारण मुसलमान फ़ौज को अपार क्षति पहुँची। उसने भोजराज की सलाह से संधि की बात राव हम्मीर तक भेजी थी। राव हम्मीर ने उस रतिपाल को भेजा जिसे उन्होंने एक दिन सोने की सिकड़ी पहनाई थी। लेकिन रतिपाल का मन सुल्तान के यहाँ जाकर डोल गया। सुल्तान उससे गले मिला और उसने उसकी मुलाकात अपनी

छोटी बहन से करादी। रतिपाल लालच मे फंस गया। उसने विश्वासघात के बदले में रणथंभौर को प्राप्त करना स्वीकार कर लिया। किले मे लौट कर उसने कहा कि अला-उद्दीन बहुत निर्बल होगया है किंतु शायद रणमल आपसे विश्वासघात करेगा। राव हम्मीर को विश्वास नही हुआ। उधर रतिपाल ने जाकर रणमल से कहा कि पता नही क्यों राव आपको गिरफ्तार करेंगे। रात को पकड़ने आयेंगे। रणमल चौकन्ना होगया। रनिवास में रतिपाल ने खबर पहुंचवादी कि सुल्तान तो राव की लड़की चाहता है और कुछ नही।

वीरम ने कहा कि रणमल मेरा भाई है निरपराध है। रतिपाल शत्रु से मिल गया है इसलिये इसे मार डालिये। राव हम्मीर ने कहा कि यदि ऐसा न हुआ और व्यर्थ ही रतिपाल मार डाला गया तो! वीरम चुप होगया। रनिवास की रानियों ने राजकन्या को तैयार करके पिता राव हम्मीर के पास भेजा। कन्या ने कहा: 'पिता! यदि मेरे कारण इतना रक्तपात हो रहा हो तो मुझे बलि दे दीजिये।' राव ने क्रोध से कहा: 'तू बेटी है अत: हाथ नही उठा सकता। यदि किसी और ने यह बात कही होती तो उसके टुकड़े कर देता। भीतर जा।'

संध्या के समय राजा हम्मीर रणमल से मिलने चला। रणमल के मन मे सन्देह तो था ही, वह भागा और गढ़ का द्वार खोलकर सुल्तान के पास चला गया। रतिपाल भी भाग गया। राव पर वज्र गिर गया। सुल्तान ने उन दोनों को बड़े

आदर से रखा। राव हम्मीर ने भंडारी से पूछा : 'कितनी रसद और है ?' भण्डारी ने सोचा राजा से सच क्यों कहूँ ? उसने कहा : 'अभी तो बहुत है।' उसी समय पता चला कि भण्डार खाली हो चुका था। घेरा डाले साल भर हो चुका था। वीरम ने राव की आज्ञा से भण्डारी को वहीं काट डाला और भण्डारी की संपत्ति को पद्मसागर में फिकवा दिया।

रात को राव सो नहीं सका। उसने वीरम को भेजकर मीर मुहम्मद शाह को बुलवाया और कहा : 'मीर ! रात का समय है, तू कहीं अपने परिवार को लेकर भाग जा। सबकुछ समाप्त हो चुका हैं। मैं अब तेरी रक्षा कैसे करूँगा ?'

मीर कुछ नहीं बोला। उठ खड़ा हुआ। फिर उसने कहा : 'अच्छा जाता हूँ।'

राव का हृदय टूक टूक होगया। वीरम के कंधे पर हाथ धर कर वह सूनी आँखों से देखता खड़ा रहा। कुछ ही देर बाद मीर मुहम्मद शाह लौट आया। उसने कहा : 'तो राव महाराज ! मैं चलूँ। लेकिन जाने के पहले मेरी स्त्री आपके नमक के लिये आपसे मिलकर धन्यवाद देना चाहती है। चलना ही होगा।'

राव डरते हुए चला कि कहीं शरणागत का साथ छोड़ने का व्यंग्य न सुनने को मिले। वीरम भी साथ गया। मीर मुहम्मद शाह ने कहा : 'यह रही।'

देखा। उसका सारा परिवार कटा पड़ा था।

राव ने चिल्ला कर कहा : 'यह किसने किया।'

मीर मुस्कराया। उसने कहा : 'मैंने ! वह और किसी

तरह जाती न थी। अब तो आप मुझे नहीं भेजेंगे !'

वीरम की आँखों में आँसू आगये। राव मीर को सीने से लगाकर रोने लगा।

वीरम ने कहा : 'एक रणमल था।'

राजा ने कहा : 'एक वह भोज था।'

मीर ने हँसकर कहा : 'राव ! मैं तुर्क नहीं, तातार नहीं, जगद्विजयी चंगेज़ का वंशज हूँ। गज़नी में आकर हमारा रक्त वैसे ही गंदा नहीं हुआ जैसे इन खिलजियों का हुआ था।'

मीर गभरू भीतर से आगया था।

उसके बाद प्रातःकाल सुल्तान की फ़ौज ने बालू के बोरे दुर्ग की प्राचीर के किनारे किनारे लगाने प्रारंभ किये। किंतु रोकने पर भी दुर्ग-वासियों में उत्साह नहीं था। रसद समाप्त हो चुकी थी।

उस रात रानियाँ इकट्ठी हुईं। महारानी ने कहा : 'मैंने कन्या को भेजने का विचार करके पाप किया है। मैं जलूँगी।'

सारी स्त्रियाँ चिल्लाईं : 'हम शत्रु के हाथों में नहीं पड़ेंगी।'

और फिर जौहर की लपटें आकाश को छूने लगीं। ब्राह्मण विश्वरूप ने वृद्ध हाथों से आशीर्वाद दिया और स्वयं चिता में कूद पड़ा।

राव की आँखों में आँसू नहीं था। भोर होते ही राजपूत केसरिया बाना पहनकर दुर्ग का द्वार खोलकर टूट पड़े। दुर्ग के द्वार पर इतना भयानक युद्ध हुआ कि शत्रु रुंड मुंड हो गये। परंतु मुसलमान सेना पीछे से दाबनी आती थी। वीरम

गिरा, फिर मीर मुहम्मद शाह गिर गया। फिर मीर गभरू मर गया। फिर गंगाधर कटा। फिर ताक. फिर परमार क्षेत्रसिंह और अंत में राव हम्मीर ने अपने क्षतविक्षत शरीर को स्वयं ही काट डाला। युद्ध समाप्त होगया।१ शत्रु सेना दुर्ग को लूटने घुसी, एक भी स्त्री जीवित नहीं थी। सुल्तान पागल सा हो उठा।

बाहर उसने देखा। 'मीर मुहम्मदशाह घायल तड़प रहा था।'

सुल्तान ने कहा : 'मीर ! तेरे ज़ख़्मों की अगर में दवा कराद्‌ूँ तो क्या तू मेरी खिदमत करेगा ?'

मीर ने हँसकर कहा : 'अगर मेरे ज़ख्म ठीक होकर मैं फिर उठ सकूँगा तो तुझे मार कर हम्मीरदेव के बेटे को सिंहासन पर बिठाऊँगा।'

सुल्तान ने क्रोध से उसका सिर हाथी से कुचलवा दिया, लेकिन मीर जीत गया था क्योंकि सुल्तान ने नौमुस्लिमों का दिल जीतने को उसे क़ायदे में दफ़न करवा दिया। उलुगखाँ को रणथम्भौर का इलाका देकर तथा क़िले को बिस्मार करके सुल्तान दिल्ली लौट गया।

अभी राह में आते समय मैंने सुना कि उलुगखाँ ने तिलंगाना और माबर पर हमला करने के लिये भारी फौज इकट्ठी की थी, लेकिन वह रास्ते में बीमार होगया और मर गया।

चारण हूँपा का स्वर रुद्ध होगया।

तरुण राणा हम्मीर ने कहा : 'राव हम्मीर वीर थे। उस

१. १३०१ ई० में उसने क़िला जीता था।

समय चित्तौड़ से यदि बाबा रतनसी सुल्तान पर हमला कर देते तो ज़रूर सुल्तान भाग जाता। छक्के छूट जाते उसके।'

पास बैठे भील सर्दार ने कहा : 'राजपूत यहीं तो नहीं सोच पाते।'

हूँपा ने कहा : 'कितनी सर्दी है। बढ़ती ही जाती है। जरा आग और सुलगा दो।'

११

अनिंद्य सुन्दरी पद्मिनी की रूप-श्री की गाथा चित्तौड़ में वैसे ही सीमित नहीं रही, जैसे आकाश में पूर्णिमा के चद्रमा की ज्योत्स्ना नहीं समाती। उसके रूप की गाथा सुदूर बंगाल में सुनाई देती, धुर दक्षिण के चोल और पाण्डवों में उसके रूप की तुलना की जाती। पूर्व में अनहिलवाड़ा और उत्तर में सुल्तान तक लोग उसके रूप की कल्पना करते।

कवियों ने उसकी वर्णना करने में असमर्थ होकर अपनी लेखनियाँ तोड़ कर फेंक दी थीं।

पहाड़ों पर बसा उन्नत अदम्य सीसोदियों का दुर्ग जैसे दुर्दम था, जैसे राजपूतों की आन प्रलय की अग्नि के समान धधकती थी, जैसे भीलों के बाण अचूक बेध थे, जैसे ब्राह्मण पुरोहितों की गंभीर वेदध्वनि मेवाड़ में गगन तक प्रतिध्वनित थी, उसी प्रकार पद्मिनी का रूप लावण्य एक साथ ही कुसुम और वज्र की भाँति था, क्योंकि वह जितनी स्निग्ध और

कोमल थी, उतनी ही दुर्गम थी, उतनी ही गौरवधारिणी थी।

राणा लखनसी मर चुका था। उसके दोनों पुत्रों में से वड़ा अरसी भी मर चुका था। राणा की आन मानकर उसका पुत्र अजयसिंह अपने भतीजे को लेकर केलवाड़े में रहा करता था। अरसी का पुत्र हम्मीर था। वह अभी छोटा था। यौवन में पाँव रखना ही चाहता था। लखनसी का भाई रतनसी उस समय मेवाड़ का प्रवंध करता था और लखनसी द्वारा घोषित सिंहासन का उत्तराधिकारी हम्मीर अपने चाचा अजयसिंह के पास रहता था।

केलवाड़ा अरवली की श्रेणियों में बसा हुआ था। पद्मिनी संबंध में उसकी दादी लगती थी।

सीसौदियों की तलवार इस समय शाँत थी।

अचानक ही आकाश में वज्र कड़का।

चित्तौड़ की ओर आग लगाता हुआ सुल्तान ाउद्दीन विशाल सेना लेकर बढ़ा चला आता था।

दुर्ग के द्वार वंद होगये। सुल्तान ने घेरा डाल दिया। वासना के अंगार इस प्रतिरोध से और भी भड़क उठे, क्योंकि वह पद्मिनी को जीतने आया था। मुसलमान चुप थे। उन्हें लूट की आशा थी। वर्ना इस्लाम में किसी की विवाहित पत्नी को छीनना उस समय भी वर्जित माना जाता था।

मेवाड़ की धरती पर युद्ध की प्रतिध्वनि होने लगी। आकाश और पृथ्वी में रण-निनाद व्याप्त होने लगा। दूर तक सुल्तान की अपार वाहिनी दिखाई देती।

१२

यह कथा चारण मुंहणोत ने केलवाड़े में राणा हम्मीर को चारण हूंपा के सामने गा गाकर रोरोकर सुनाई थी :

ओ सुनने वालो ! अपने हृदय थामकर बैठो। जैसे आकाश में उड़ती हुई बकपांति हरियाली पर सुशोभित होती है, जैसे अथाह नील समुद्र पर इंद्रधनुष शोभित होता है, उसी प्रकार सुंदरी पद्मिनी दुर्दमनीय राजपूतों की हुंकारों के ऊपर दिखाई देती थी। राणा रतनसी जब उसे देखते तो उनकी आंखों में पौरुष का हलाहल भी अमृतमंथन से निकले अमृत की भांति कोमल हो जाता। रतनसी जब कुसुंभा पीकर झूमते तब पद्मिनी उन्हें अपने हाथों से भर भरकर पिलाती। ओ सुनने वालो ! वह रूप की अमर कथा नहीं, वह वेदना की गाथा है। उसे सुनो और बताओ कि तुम गौरव करोगे या लज्जा ! तुम्हें दुख होगा या सुख। विष्णु के तीन चरणों ने त्रिभुवन को नापा था, सो पद्मिनी के रूप का यश ऐसा ही था। उसके कारण मनुष्य ब्रह्मा बनने की लालसा करता था कि वह विभोर होकर बैठा रहे और जिधर पद्मिनी जाये उधर ही उसके मुख निकल आयें। किंतु उसे देखकर सुल्तान आ निकला जो त्रिपुरासुर सा उन्मत्त था। ओ सुनने वालो ! हृदय थाम कर सुनो कि सुल्तान की अपार सेना ने चित्तौड़ गढ़ को घेर लिया। गढ़ों में एक गढ़ चित्तौड़, सूरमाओं में दो सूरमा गोरा बादल, रूपसियों में एक रूपसी पद्मिनी, नाहरों के राजपूती झुण्डों के झुण्ड, और भीलों की रणरंगिणी

कमानों की लोच सब जैसे नींद छोड़कर उठ खड़े हुए । मेवाड़ की अजेय धरती बोलने लगी । गरजने लगा आकाश और पतिव्रता रजपूतनियों के गर्वीले मस्तकों पर चमकने लगी उनकी बेंदियाँ बनकर अंगार, कि सुल्तान के मुल्तानी, खुरासानी, मुगल, तातार, और तुरक सिपाहियों को देख देखकर चित्तौड़ गढ़ दहाड़ने लगा ।

ओ सुनने वालो ! अपने हृदयों को संयत करके सुनो कि जहाँ बेटों ने माँ के दूध की आन निभाने का वचन लहू से अपनी रग रग में लिखा हो, जहाँ बहुओं ने अपने सुहाग के गौरव की आन निभाने की शपथ फूलों की सेज से चिता की लपट तक लिखी हो, जहां पुत्रियों ने अपने अखण्ड कौमार्य और पवित्र विवाह की आन अपने प्राणों को हथेली पर रख कर निभाने का वचन दिया हो, वहाँ कौन आकाश की ओर उठे शीशों को काटे बिना धरती पर गिरा सकेगा । आकाश से कौनसा नक्षत्र बिना आग की रेखा खींचे टूटता है और रण-भूमि में गिरते राजपूत की तलवार कब गिरते गिरते नहीं चमकती ।

ओ सुनने वालो । सुनो कि जब सुल्तान निरंतर घेरा डालते हुए हार चला और अडिग राजपूतों का कुछ भी नहीं बिगड़ा तब वह विकल हो उठा ।

वह कछुआ गरुड़ की चाल चलने लगा ? वह टीला अपनी पर्वत से तुलना करने लगा ? वह हींस का कांटा खड्ग के सामने लरजने लगा । उसका साहस हुआ कि वह सियार सिंहनी के लिये लालायित हो उठा ! उसकी बुद्धि भ्रष्ट हुई कि वह

कमण्डलु में समुद्र को बंदी करने चला ? उसने रानी पद्मिनी को मांगा। यज्ञ वेदी मे से अग्नि को ज्वाला कब नहीं निकलती ? वसुंधरा में से रत्न कब नहीं निकलते ? ब्राह्मण के मुख से वेद निर्घोष कब नहीं होता? अपवित्र म्लेच्छ के मुख से पाप कब नहीं बोलता ? इसी भांति ओ सुनने वालो ! अग्नि के समान, रत्न के समान, वेदघोष के समान राजपूत चिल्लाये: नहीं। इसकी जिह्वा के टुकड़े टुकड़े करदे, क्योंकि उसके मुख से पाप निकलता है, म्यानों में से तलवारें निकलीं जैसे मेवाड़ में से चित्तोड़ का गढ निकला, क्रोध का ज्वालामुखी धधकने लगा, मेवाड़ ने प्रतिज्ञा की। वीर बप्पा रावल के वंशजों ने आग को छू कर शपथ खाई। और सुल्तान को भीलों के बाणों ने, राजपूतों के छापों ने हाय हाय करने को मजबूर कर दिया।

राजपूत अपनी स्त्री को म्लेच्छ को दे दे ? अग्नि ठंडी हो जाये ? समुद्र गर्जन छोड़ दे ? म्यानों में से तलवारें निकलना छोड़ दें ! जीवन का अंत मृत्यु नहीं हो ! नहीं, नहीं, मेवाड़ चिल्लाने लगा। अंत में सुल्तान ने पराजित होकर चाल खेली।

उसने कहा : 'मैं केवल रानी का सौंदर्य देखना चाहता हूं क्योंकि मैंने जो सुना है वैसे रूप को मैंने कभी देखा ही नहीं। राणा मुझे शीशों में उनकी छवि की छाई ही दिखादें, क्योंकि वे राजपूत ठहरे। वे कैसे अपनी पतिव्रता स्त्री को किसी पर-पुरुष के सामने दिखा सकेंगे।'

ओ सुनने वाले सुनो कि राणा ने अस्वीकार कर दिया

तु पद्मिनी ने समझाया तो राजपूत मान गये कि इसमें ोई दोष नहीं। वे क्या जानते थे कि कैसे आदमी से पाला ड़ा था, जिसने अपनी प्रजा का लहू पिया, जिसने अपने धर्म को अपने लाभ का वाहन बनाया, जिसने अपने चाचा की हत्या की, जिसने अपने भाइयों की आँखें निकलवाईं, जिसने अपनी आत्मा को न देखकर जघन्य से जघन्य हत्या की।

राणा ने बुलाया, सुल्तान दो एक आदमियों के साथ आया। राणा उसे दुर्ग में ले गये। वहाँ वे उसे टुकड़े टुकड़े करके चील कौओं को खिला सकते थे, किंतु उन्होंने कभी विश्वासघात नहीं किया। वीर कभी झुकते नहीं। उन्होंने उसको पद्मिनी की छाया दिखाई। वह पागल सा देखता रह गया।

घर आये मेहमान को राणा पहुँचाने किले से कुछ दूर बाहर चले गये। झट उस सुल्तान ने उन्हें बंदी कर लिया और किले में संवाद भेजा कि पद्मिनी मेरे हाथ में आये तो राणा को छोड़ दूँगा।

चारण मुँहणोंत ने एक लंबी साँस खींची और देखा। उस समय उसके माथे पर बल पड़ गये थे। मुँहणोंत की आँखें चमकने लगी थीं।

१३

मुँहणोंत फिर गाने लगा।

आज आकाश धरती से मिल जाये, आज पहाड़ बाल

ढेर की भाँति पिस जायें, आज महागरुड लवा की भाँति दुबकता फिरे, आज प्रचण्ड केहरी स्यारों की भाँति दुम दबाने लगे, लेकिन यह नहीं हो सकता न होगा। चाहे गंगा फिर शिव के जटाजाल में लौट जाये, चाहे समुद्र मरुस्थल की भाँति साँय साय करने लगे, किंतु राजपूत कभी भी स्वीकार नहीं कर सकता। राणा के रोम रोम से क्रोध के मारण धुँआ निकलने लगा, किंतु वे बंदी थे। इतना बडा धोखा, इतना बडा विश्वासघात देखकर क्षण भर को राजपूत समझ ही नहीं सके कि कोई मनुष्य भी ऐसा हो सकता है? तब ब्राह्मण पुरोहित ने कहा: 'वीर क्षत्रियो के पुत्रो! आश्चर्य मत करो। तुम्हारे पवित्र पुराणों और शास्त्रों ने इन लोगों को म्लेच्छ, यवन और बर्बर क्यों कहा है? क्यों इनको छूना भी अपवित्र है, क्यों इनके हाथ का अन्न-जल भी पाप है। क्यों इनका संसर्ग भी कलुषित है! इसलिये कि इनका धर्म मूढ धर्म है। इनका आचार जघन्य है। इनकी संस्कृति बर्बर है। इनका वचन वचन नहीं। इनके यहाँ सत्य, कृतज्ञता और मनुष्यत्व का कोई मूल्य नहीं। स्वार्थ इनका धर्म है, अत्याचार इनकी वीरता है छल इनकी शक्ति है। इनका कभी अपमान नहीं होता क्योंकि इनका कोई मान ही नहीं। ऐसा ही यह सुल्तान है। राणा को इसने छल से पकडा है। वीर राजपूतो! तुम भोले हो। तुम विधर्मी से धर्म-युद्ध नहीं कर सकते। तुम नास्तिक से ईश्वर का गौरव गाकर उसका हृदय नहीं जीत सकते। एक लिंग महाराज ही मेवाड

के स्वामी हैं। राणा मेवाड़ के प्रबंधक है। यदि राणा आज छल से बंदी हैं, मेवाड़ का बच्चा बच्चा राजपूत राणा का खड्ग बन गया है। तुमने सुल्तान को मारा। वह म्लेच्छ पिट कर आर्त्तनाद कर उठा। याद रखो वह देव-मंदिरों का शत्रु है। उसका धर्म हमारे धर्म का शत्रु है। उसकी सत्ता ही एक कलुष भरा पाप है। उसे हराने के लिये बुद्धि की आवश्यकता है।'

राजपूतों ने पूछा : 'फिर ?'

उनके हाथ तलवारों पर गये।

ब्राह्मण ने कहा : 'खड्ग अभी नहीं वीरो। बुद्धि के बल का प्रयोग करो। शास्त्र कहते हैं—शंठशाठ्यमाचरेत्। नीच को नीचता से ही वर्त्तो। पृथ्वीराज चौहान ने गोरी को छोड़ कर फिर अपने लिये काँटा बोया। रानी पद्मिनी मेरे पास आये, चुने हुए वीर मेरे पास आयें, मैं बताऊँगा तुम्हें।'

हे सुनने वाले सुनो और हृदय को थाम लो कि अचानक ही राजपूतों की ओर से प्रस्ताव सुल्तान के पास गया कि रानी आने को तैयार है, राणा को छोड़ा जाये, किंतु रानी मेवाड़ की रानी है, वह अपने गौरव से आयेगी। सुल्तान ने जब सुना तो वह उछल पड़ा। उसने कहा : 'मुझे स्वीकार है।' उसे तो तृष्णा ने घेर रखा था। राणा रतनसी की पुत्री ने जो योजना बनाई थी, जिस पर जान पर खेल जाने वाले वीर आरूढ़ थे, जिसे रानी पद्मिनी ने स्वीकार किया था, वही अब कार्यान्वित होरही थी।

एक बार को राजस्थान ने आँखें धोयीं। एक बार को

मेवाड़ की भोली प्रजा ने अपने को नोंच कर देखा कि पीड़ा होती है या नहीं। किसको विश्वास होता कि सूर्य्य उतर कर किसी दीपक की शिखा पर जलने को तैयार हो जायेगा ?

ढँकी हुई सात सौ पालकियाँ दुर्ग से निकलीं और सुल्तान के पड़ाव की ओर चल पड़ी। वासना से मत्त सुल्तान घूम रहा था। अचानक ही पालकियों में से स्त्री वेष फेंक फेंक कर सशस्त्र वीर योद्धा निकल पड़े और म्लेच्छ सेना को गाजर-मूली की भाँति काटने लगे। वीरवर गोरा और बादल ने राणा रतनसी को छुड़ा लिया और म्लेच्छों से घोड़े छीन कर वे दुर्ग की ओर लौट चले।

सुल्तान के नहले पर दहला पड़ा। उस समय उन वीरों के खड्गों के सामने जो आता वह ककड़ियों की भाँति कटता चला जाता। सुल्तान को जब होश आया राणा दुर्ग के भीतर पहुँच चुके थे। परंतु अभी वीर गोरा बाहर था, बादल बाहर था।

'ठहरो !' तरुण हम्मीर पुकार उठा।

मुँहणोत ठहर गया। हम्मीर की आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगीं थीं।

१४

मुँहणोत चारण ने कहा ओ सुनने वाले हृदय थाम कर सुनो क्योंकि जो सुनते हो सत्य की वाणी है, वही धर्म का घोष है, यही वीरों के लहू से लिखा हुआ गौन है।

खाँडों पर खाँड़े बजने लगे, आग पर आग बरसने लगी। वीर गोरा और तरुण बादल की वीरता देख कर ही आज तक वीरता टिकी हुई है। अंत में वे दोनों खेत रहे। और तब रूप की ज्वाला पद्मिनी ने पुकारा : आओ ! कुलनारियो ! समय आगया !

उस समय वीरांङ्गनाएं उच्च स्वर से गाने लगीं। तहखाने में ब्राह्मण पुरोहित चिता सजाने लगा। राजपूत वीर केस-रिया बाना पहनकर तैयार होगये और जब चिता धधकी और दुर्ग का द्वार खुला....

हम्मीर ने रोते हुए कहा : 'मत कहो चारण ! मत कहो।'

'मुझे कहने दो !' मुँहणोत ने कहा : 'मुझे कहने दो।

मैं चुप नहीं रह सकता। सीसौदियों का मैंने अन्न खाया है। मैंने वीरों के खड्गों की छाया में जीवन बिताया है। मेरे स्वामी कायरों की भाँति नहीं गये हैं। मेरी स्वामिनी ने सिहनी की भाँति प्राण त्यागे हैं। कुँवर ! चित्तौड़ के स्वामी तुम हो ! तुम हो आज मेवाड़ के स्वामी, जहाँ सुल्तान ने अपने बेटे खिज्र खाँ को गद्दी दी है। उसने ३०००० हिंदुओं की हत्या की है। उसने चित्तौड़ का नाम खिज्राबाद रखा है। जालौर का सोनिग्रा सर्दार माल्देव उसकी सेवा में चला गया है। वह मालवा के महलक देव को कुचलता हुआ माण्डू, उज्जैन, और चंदेरी को जीतता हुआ इस समय दिल्ली लौट गया है। राजा भोज की धारानगरी का सदियों पुराना सरस्वती कण्ठाभरण नामक पवित्र विद्यालय, उसका विशाल और अमूल्य पुस्तकालय उस जंगली ने जला दिया है। और

राणा के वंशज तुम कहते हो मैं चुप रहूँ ? ऊदवा की वन-देवी के गर्भ से तुमने जन्म लिया है वीर !

उसी समय सजनसी और अजीतसी ने प्रवेश किया। वे छोटे छोटे थे, बड़ा अठारह का, छोटा सत्तरह का। हम्मीर १६ का हो चुका था।

चारणहूँसा ने कहा 'लो दोनों कुँवर भी आगये।'

हम्मीर ने उठ कर कहा 'यह मेरे भाई हैं। काका के पास चलो और वहीं हम बाकी कथा सुनेंगे।'

उन पराजित हिंदुओं का विक्षोभ देखकर उस समय विजेता सुल्तान हँस दिया होता। वे हिंदू उस समय याद नहीं रख सके थे कि उनका क्रोध वास्तव में उतना पवित्र नहीं था जितना वे समझते थे, क्योंकि वे वर्ण धर्म को स्वीकार करके असम्य दलितों को दबाये हुए थे। वे नहीं समझते थे, कि 'सुल्तान साम्राज्य का भूखा था, वह इस्लाम का बंदा न था। और साम्राज्य की भूख भीषण होती है। चारण मुँह-र्णंन ने कहा 'क्या सोच रहे हो कुमार !'

'क्या ?' हम्मीर ने चौंककर कहा।

'क्या चिंता कर रहे हो ?'

'सोचता हूँ मेवाड़ का सिर फिर कैसे उठेगा ?'

मुँहर्णंन ने कहा 'ब्राह्मण पुरोहित को राणा रतनसी ने चुपचाप विवश करके दुर्ग के गुप्त द्वार से निकाल दिया था। वह इस समय बाहर बैठा है। उसको ही आपको अपना गुरु बनाना चाहिये।'

हम्मीर ने कहा 'कहाँ हैं वे !'

चारण बुला लाया।

हम्मीर ने ब्राह्मण के चरणों पर साष्टांग दण्डवत की।

ब्राह्मण ने आशीर्वाद देकर कहा : 'चक्रवर्ती हो।'

'चक्रवर्ती !' हम्मीर ने कहा : 'अभी तो चित्तौड़ भी नहीं है !'

'हाँ राजकुमार !' ब्राह्मण ने कहा। 'जब तक ब्राह्मण और क्षत्रिय साथ हैं तब तक कितनी भी विपत्ति क्यों न आये धर्म विचलित नहीं हो सकता। आओ आजमसिंह जी के पास चलें।'

वे लोग भीतर की ओर मुड़ गये।

चारण मुँहणोत ने पुकारा : 'कुँवर ! चित्तौड़ के साका में बंधुओं की राख पड़ी है। गंगा तुम न पहुँचाओगे तो क्या म्लेच्छ पहुँचाएगा ?'

१५

दीप जल रहा था। चारों ओर अंधकार छा रहा था। शैय्या पर वृद्ध सुल्तान अलाउद्दीन पड़ा था। इस समय वह अस्वस्थ था। किंतु उसके प्रकोष्ठ के चारों ओर सशस्त्र गूं[illegible] बहरे हिजड़े गुलाम पहरा दे रहे थे, जो न सुन सकते थे, [illegible] बोल सकते थे। वहाँ सन्नाटा था।

सुल्तान को याद आ रहा था।

क्या था यह लंबा जीवन ! एक के बाद एक लहू[illegible] बूंद। धीरे धीरे वे बूंदे मिल गईं और लहू का समुद्र [illegible]

राने लगा। उस समुद्र मे असम्यो जीवित हिंदू, किसान, कारीगर और मजदूर डूबने लगे।

सुल्तान चौक उठा।

× × ×

"मगोलो की अपार वाहिनी बढती आरही है। वे आपस में बातें कर रहे हैं 'बडा गर्म देश है।'

दूसरा कहता है 'हम यहाँ नही रहेगे।'

'हम यहाँ सिर्फ लूटेंगे।'

'सुल्तान अलाउद्दीन हमें क्यो रोकेगा ?'

'वह तुर्क है।'

'कुछ कहते हैं उसमे भी मुगल खून है।'

'बडा पाजी है। वह बडा खूँखार है।'

भेडो की खाल ओढने वाले घोडो पर चढे चले आते है। वे लूटते हैं, आग लगाते हैं। हत्या करते हैं, जिना करते हैं।

उनका नेता ट्रामोजियाना का मगोल अमीर दाऊद है। यह मुगल एक लाख सिपाहियो के साथ हिंदुस्तान को तबाह करने आरहा है।

वह हँस कर कहता है, सिर्फ मुल्तान, पजाब और सिंध को इस खिलजी से छीन लेंगे।

सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी की सेना उसे रोकती है। भीषण युद्ध होता है। मुगल हार कर भागते हैं।"

× × ×

सुल्तान ने आँखें खोली, फिर बद करली।

× × ×

मंगोल साल्दी खौफ़नाक है। वह अपने हाथ में बहुत लंबा खाँडा लेकर घोड़े पर चढ़ा हुआ है। वह जब मस्त होता है तब जानवरों का कच्चा गोश्त खाने लगता है। उसको शराब पीते देखकर उसके साथी ठठा कर हँसते हैं।

दिल्ली का दरबार लगा है।

सुल्तान अलाउद्दीन तख़्त पर बैठा है। सामने साल्दी ज़ंजीरों में बँधा खड़ा है। सुल्तान का ख़ास दोस्त और सिपहसालार उस मुग़ल को बुरी तरह हरा कर पकड़ लाया है।

साल्दी घबराया हुआ नहीं है। उसके गालों की हड्डियाँ ऊँची हैं। वह चिल्लाता है : 'बड़ी गर्मी है। यह जानवरों का मुल्क है। सुल्तान जानवर है।

उसके २००० सिपाही बंदी बने दूर खड़े हैं। वे डरे हुए हैं।

२००० आदमी क़त्ल कर दिये गये हैं। सुल्तान साल्दी के कटे हुए सिर को देख कर मुस्करा रहा है।

× × ×

वह चित्र भी बदल गया।

× × ×

मंगोल कुतुलुगख्वाजा की भीषण सेना ने दिल्ली को घेर लिया है। प्रजा में भयानक आतंक छाया हुआ है। ज़फ़रखाँ घोड़े पर सवार है।

सुल्तान अलाउद्दीन उस दिन तौबा कर रहा है।

उलुगखाँ कहता है : 'मेरे आक़ा ! वक्त आगया। यह

मुग़ल चंगेज़ ख़ाँ की तरह सबकुछ उजाड़ता चला आरहा है। फर्क इतना है कि चंगेज बुद्ध था यह मुसलमान है। इसके अलावा यह बिल्कुल वहशी है। हम लोगों की तरह इसके दिल में रहम नहीं है, यह तो जानवर है।'

सुल्तान के पीछे १२००० चुने हुए योद्धा खड़े हैं।

ज़फर खां घोड़ा बढ़ाता है। कहता है: 'मेरे सुल्तान, मुझे इजाजत दो। आज मैं तुम्हारा अहसान उतार देना चाहता हूँ।'

सुल्तान गरजता है: 'बहादुरो। मोगल घिर आये हैं। अफ़गानो! तुर्को! तातारो! ईरानियो! आज अपनी तलवारें उठालो।'

काज़ी चिल्लाता है: 'मोगल असली मुसलमान नहीं हैं। असली मुसलमान सुल्तान है।'

फौज गरजती है। उधर कुतुलगख्वाजा की वाहिनी चिल्लाती है।

भीषण संग्राम प्रारंभ होता है।

बीच युद्ध में उलुग़ख़ां आकर कहता है: 'सुल्तान! वह देखिये! ज़फ़रख़ां मगोलों में घुसा चला जारहा है।'

सुल्तान देखता है। यह कैसा हैरतअंगेज़ नज़ारा है। ज़फर ख़ां के हाथों में जैसे बिजली भर गई है। उसके सिपाही नहीं हैं, चीते हैं। मुग़ल फौज तितर बितर होरही है। कुतुलुगख्वा भाग रहा है। वह दिखाई नहीं देता। धूलि आकाश में छागई है। रणवाद्य अभी भी बज रहे हैं। घायलों से धरती पट गई है। ज़फ़रख़ां का घोड़ा उछलता है। कुतुलुगख़ां की पीठ

में ज़फ़रख़ाँ तलवार घुसेड़ देता है। तभी उसे कई मुग़ल घेर लेते हैं।

युद्ध समाप्त होगया है। सुल्तान के सामने ज़फ़रख़ाँ की लाश पड़ी है। मुग़ल भाग चुके हैं। सुल्तान कहता है: 'उलुग़ख़ाँ! सूरज डूब गया है।'

सचमुच सूरज डूब गया है।

बहुत दिनों बाद कोई उत्तर से आता है। वह बताता है अब भी जब मंगोलों के जानवर पानी नहीं पीते तो वे अपने जानवरों से कहते हैं: अरे तुझे कहीं ज़फ़रख़ाँ तो दिखाई नहीं देगया।

× × ×

सुलतान ने करवट बदली।

× × ×

अमीरखुसरो खूब गाता है। कुछ ही दिन बाद तो मुंगल तर्ग़ी आता है। कब तक यह मुग़ल इसी तरह आते रहेंगे—हर कोई पूछता है।

शेख़ निजामुद्दीन औलिया उठते हैं। वे कहते हैं: 'सुल्तान! तर्ग़ी मुसलमान है। वह मेरी बात मानेगा।'

सचमुच तर्ग़ी औलिया की बात मान कर लौट जाता है। औलिया कहते हैं: 'तर्ग़ी तू बहादुर है। लौट जा। उन पर हमला कर जो नबी को नहीं मानते, दीन को नहीं मानते। सुल्तान अलाउद्दीन सच्चा मूसलमान है। ओ तर्ग़ी! तू मुसलमान से मत लड़ क्योंकि तू नहीं जानता कि यह हिन्दू कितने ख़तरनाक हैं। तू इनके तास्सुबी बिरहमनों को नहीं

वे अपने को ही सबकुछ समझते हैं। उन्हें दो टुकड़े
: भी वे नहीं झुकते। तू राजपूतों को नहीं जानता।
के किसानों को नहीं जानता। तू बंगाले के लोगों
जानता। सारी धरती मुसलमानों के लिये है। तू इस
क में जिंदा नहीं रह सकता। इस्लाम का झंडा इस
फहरे सौ बरस के करीब होने आये मगर यहाँ बड़े
ाफ़िर हैं। देख! ईरान, ईराक, अफगानिस्तान, बलू-
तुर्किस्तान, सब जगह दीन कितनी जल्दी फैला।
ाँ नहीं फैल रहा है। जा तू चीन को फ़तह कर!'
ा लौट जाता है। औलिया का नाम दूर दूर तक फैल
। मुगल की लूट से बचे हुए हिंदू भी औलिया को पीर
। औलिया कई काफिरों को मुसलमान बनाते हैं।

\+ \+ \+

ान ने लंबी साँस ली।

\+ \+ \+

गुखाँ बैठा है। वह कहता है : 'सुल्तान अब नहीं महा
इस बार मुग़लों को ऐसा सबक देना होगा कि वे फिर
लौटकर इधर न देखें।'

रतें डरी हुई हैं। हरम में सनसनी है।
ा सड़कों पर कहते हैं : 'क्या होने वाला है?'
ा बार फिर मुगल आरहे हैं।'
ई और कहता है : 'अलीबेग और ख्वाजाताश, मुनते
उनके राजा हैं।'
, 'एक और कहता है, 'वे लाहौर के उत्तर में आकर

आलिक की पहाड़ियों को घेर चुके हैं।'

'नहीं', पहला कहता है, 'वे अमरोहा तक आचुके हैं।'

सुल्तान कहता है : 'उलुगुखाँ। दियालपुर में ग़ाजी तुग़-लक है। उसे जंग पर भेजदो।'

खबर आती है। ग़ाज़ी तुग़लक़ ने मुगलों को कड़ी शिकस्त दी है। मुगलों ने दूसरी बार जो हमला किया उसे भी उसने लौटा दिया है।

सुल्तान शतरंज खेल रहा है। वह कहता है : 'शह! और मात!'

उलुगुखाँ कहता है : 'सुल्तान! मैं हारा हुआ हूँ। आपने सुना?'

'क्यों?'

'इस बार मुगल इक़बाल मण्डा बढ़ा आरहा है।

सुल्तान सोचता है। फिर एक बहुत बड़ी सेना दिल्ली से निकलती है। उसका छोर दिखाई नहीं देता।

दिल्ली में कुछ दिन बाद जशन मनाया जाता है। हज़ारों मुगलों का क़त्लेआम करके शाही फौज लौटी है। ज़िदा मुग़ल सरदार पकड़ पकड़ कर हाथियों के पांवों के नीचे कुचल दिये गये हैं। सैकड़ों सरदारों की इस तरह हँस हँसकर हत्या की गई है। बहुत से मुग़लों की ज़िदा ही खाल खींची गई है। कइयों को बाँध कर जिंदा जला दिया गया है। मुग़लों का चीत्का बहुत दूर तक सुनाई देता है। इक़बाल मण्डा को काट का कर गोश्त के टुकड़े चील कौओं को खिला दिये गये हैं। भी मुग़ल ज़िदा नहीं बचा है, जो भाग गया वह घोड़ा

गया है। शाही फौजों को लुटेरों के पास बड़ा माल मिला है।

सुल्तान सरहद के गढ़ों में चुने हुए तजुर्बेकार सरदार नियुक्त करता है जहां दिन रात हथियार बनाये जाते हैं।

अब मुग़ल नहीं आते। सुल्तान ठठा कर हँसता है और एकांत में मस्त होकर शराब पीता है।

अमीर खुसरो की कविता सुनता है। आनंद ही आनंद दिखाई देता है।

+ + +

सुल्तान ने मुँह पर हाथ फेरा।

+ + +

सुल्तान का युवक पुत्र खिज्र खाँ और गुलाम काफ़ूर खड़े हैं। अब वह गुलाम मलिक कहलाता है क्योंकि सुल्तान का प्रिय पात्र है।

सुल्तान कहता है: 'उत्तर जीता जा चुका। मलिक काफ़ूर। दक्खिन बाकी है।'

'आलीजाह!' काफ़ूर कहता है—'इजाजत दें।'

सुल्तान कहता है: जाओ और कुफ़् को तोड़ो। दीन के लिये इन काफ़िरों को दोज़ख भेजो।'

लेकिन भीतर ही भीतर वह सोच रहा है। वह दक्खिन का पहला मुसलमान सुल्तान होगा। दक्खिन किसी ने नहीं जीता था!

दक्खिन।

वहां की बेशुमार दौलत सुल्तान को मस्त बना रही है। उसकी कल्पना कितनी मादक है, कितनी भुला देने वाली है।

अलपखाँ, मलिक क़ाफ़ूर और खिज्र ख़ां लड़ाई के लिये रवाना होते हैं।

इसके आगे की कथा सुल्तान को कोई सुनाता है कि वे मालवा और गुजरात को लूटते हैं और रामकरन को घेरते हैं। रामकरन अपनी लड़की देवलदेवी को लेकर देवगिरि के राजा रामचन्द्र की शरण में चला गया है। क़ाफ़ूर खिज्र ख़ां को देखता है।

खिज्र ख़ाँ कहता है: 'मलिक !'

मलिक कहता है: 'शाहज़ादे !'

'तुमने सुना है ? देवलदेवी बहुत खूबसूरत !'

मलिक औरत की खूबसूरती नहीं समझता। वह हिजड़ा है।

वह सिर्फ कहता है: 'आक़ा उसे चाहते हैं ?'

खिज्र सिर हिलाता हैं।

मलिक कहता है: 'तो चलें पहले देवलदेवी को ले आयें।'

रामकरन सुनता है। जल्दी से वह रामचन्द्र के बेटे शंकरदेव से अपनी लड़की देवलदेवी का ब्याह कर देना चाहता है, लेकिन तभी शाही फौज घेर लेती है।

अलप ख़ाँ कहता है: 'देवलदेवी को दे दो।'

राजपूत कहते हैं: 'नहीं तू म्लेच्छ है।'

मुसलमान कहते हैं: 'काफ़िरों को इतना घमण्ड है ?'

दो महीने तक भयानक युद्ध होता है। शाही सेना घेरे ने किले के लोगों को भूख से भर दिया है। रामच

हारता है। खाना नहीं है, लोग तड़प रहे हैं। आखिर वह रोता है और कहता है: 'हाय मेरी बेटी उन गन्दे नीचों में जायेगी।'

लेकिन और कोई चारा नहीं है:

खिज्र खाँ पत्थर बना है। देवलदेवी मुस्कराती हुई आती है। वह कहती है: 'पद्मिनी क्यों जल मरी! क्यों उसने आत्महत्या की। मैं तो खुद खिज्र से बदला लूंगी। उसकी इस बात को कोई नहीं जानता। वह आती है, रात को खिज्र पर दूर से हमला करती है। तातार बाँदी उसका छुरा छीन लेती है। फिर वह सिर नहीं उठाती। वह खिज्र की बीबी बनती है। हिन्दू जलते हैं। गाँवों में लोग मुसलमानों को मारते है। अलपखाँ मुल्क को उजाड़ता है। दूर तक खण्डहर दिखाई देते हैं। मन्दिरों के उठे हुए सिर धूल में मिलते है। रामचन्द्र राव हार कर सुलह करता है। उसे दिल्ली भेजा जाता है।

सुल्तान दूरदेशी से उससे अच्छा बर्ताव करता है और उसे रायाँ का खिताब देता है। वह उसे नवसारी का इलाका अपनी तरफ से इनाम मे देता है। रामचन्द्र कुत्ते की तरह दुम हिलाता है।

बाद में देवलदेवी दिल्ली आती है। वह तुर्की बोलती है। वह मुसलमानियों के कपडे पहनती है। वह हर तरह का गोश्त खाती है। वह नमाज पढ़ती है। सुल्तान सुनता है और मुस्कराता है।

+ + +

सुल्तान ने आँखें खोलीं। दीप का प्रकाश स्थिर था। वह उसे देखता रहा। आँखें खुली रहीं पर वह न जाने क्या सोच रहा था।

× × ×

फौज को लूट चाहिए। मुगलों का हमला नहीं। उत्तर में बगावत नहीं। दीन के मतवाले सिपाहियों को जब तक लूट न मिलेगी तब तक चैन क्यों रहेगा ? इतने बड़े मुल्क को तलवार से दबाये रखने को फौज चाहियें। फ़ौज को लूट चाहिये। लूट कहाँ है ? लूट हिन्दू के पास है। सुल्तान मलिक काफूर को हुक्म लिखता है : अब वारंगल ! अब राय अपने खजाने, जवाहिरातों, हाथियों और घोड़ों को इस बार देता है और अगले साल फिर भेजता है, तो मलिक नायब काफ़ूर इसे मंजूर कर ले और बेकार राय पर सख्ती न करे। ऐसा न हो कि तिलंगाने में वारंगल का काकातीय राजा जबर्दस्त पड़ जाये। अगर जरूरत पड़े तो उसे दिल्ली ले आये ताकि मलिक काफूर का नाम रोशन हो।

मलिक क़ाफ़ूर पढ़ता है : राज नहीं चाहिये, खज़ाना चाहिए।

फौज बढ़ती है। रास्ता खराब है। दुर्ग अभेद्य है। राजा प्रताप रुद्रदेव द्वितीय, लाढरदेव के नाम से विख्यात योद्धा है। वह दुर्ग को बन्द करके बैठ जाता है।

अमीर खुसरो फौज के साथ है। वह कहता है 'बखमुरो ! इस गढ़ को तो लोहे का भाला भी नहीं सकता। फौलाद है फौलाद।'

लेकिन कई दिन बीत गए हैं। राजा का मन्न भीतर बीत रहा है। वह अपनी एक सोने की मूर्ति भेजता है। उसके गले में सोने की जंजीर है। वह उसकी गुलामी की निशानी है। वह कहता है कि मैं सुलह चाहता हूं, मैं सालाना खिराज दूंगा।

गर्व से मलिक काफ़ूर कहता है : 'नहीं।'

ब्राह्मण मंत्री देर तक काफ़ूर के सामने गिड़गिड़ाता है, समझाता है। काफ़ूर नहीं मानता। वह कहता है : 'अगर राजा लाकर अपना खज़ाना देता है तो ठीक, वर्ना मैं हिन्दुओं का कत्लेआम करना हूँ। उसे हर साल कर देना होगा।' काकतीय राजा स्वीकार करता है।

देवगिरि, धार और झाँई होता हुआ मलिक काफ़ूर वारंगल को पराजित करके लौटता है और उसके साथ एक हजार ऊंट हैं। उन ऊंटों के ऊपर खज़ाना है। इतना बोझ है कि ऊंट थक गए हैं। एक हजार ऊंटों की पीठें दुख गई हैं।

सुल्तान देख रहा है। उसकी आँखें नहीं थकतीं। सोना फिर सोना, फिर मोती ! हीरे ! पन्ने ! मानिक ! लाल ! पुखराज ! और जाने क्या क्या ? बेशुमार दौलत ! अल्लाह जैसे सदियों से इन काफिरों के पास इसीलिये इस सबको इकट्ठा करना है कि एक दिन दीन के झन्डे को लेकर हम आयेंगे। हम इसीलिये आये हैं।

× × ×

अल्लाह ! उसके मुंह से निकल पड़ा। अल्लाह !

+ + +

उसके बाद मलिक काफ़ूर का नाम ही सुल्तान के कानों में गूँजने लगता है। वह फिर दक्खिन लौटता है। द्वार समुद्र का वीर बल्लाल तृतीय सशक्त राजा है। लेकिन यादव राजा रामचन्द्र की सहायता से काफ़ूर बढ़ता है। गहरी नदियों, खन्दकों और घाटियों को पार करके काफ़ूर और ख्वाजा हाजी बढ़ते हैं। युद्ध में हार कर वीर बल्लाल समर्पण करता है। काफ़ूर कहता है: 'नहीं। या तो तू मुसलमान बन, या फिर जिम्मी बन।'

हार कर भी, अपमानित होकर भी राजा जिम्मी बनता है, दिल्ली की आधीनता स्वीकार करता है, बेशुमार दौलत देता है। काफ़ूर के सैनिक मन्दिरों को तोड़ते हैं। पवित्र स्थान में मुसलमानों के घोड़े दौड़ते हैं, मन्दिरों की पुष्करिणियों में तुर्क थूकते हैं, पेशाब करते हैं। हिन्दू उन्हें तुलुक कहते हैं। वीर बल्लाल को सारी भेंट लेकर दिल्ली भेजा जाता है। वह हाथियों और घोड़ों को पहुँचाने आता है, लेकिन वह इतना अपमान सह कर भी मुसलमान नहीं बनता। मुसलमान बनना वह इस सबसे घृणित समझता है। यादवों ने उसे दग़ा दी है।

तभी काफ़ूर के पास दक्खिन से एक आदमी आता है। वह पाण्ड्य राजकुमार सुन्दर पाण्ड्य है। उसकी गद्दी को वीर पाण्ड्य ने छीन लिया है जो उसका भाई है। वह कहता है—मलिक! मुझे मदुरा का राज दिलाओ। तुमने मदुरा को बचाया है। जब हम दोनों भाई लड़ रहे थे तब वीर

बल्लाल द्वार समुद्र मे मदुरा पर आक्रमण करने आ रहा था। तुम्हारे कारण वह लौट गया। तुमने वीर बल्लाल को हराया है। तुम वीर पाण्ड्य को हरा सकते हो।

दक्षिण के दुर्गम मार्गों मे अमीर खुसरो फौजो में अपनी यह मुकरियां सुनाता चलता है। वह मस्त आदमी है। वह इस्लाम की पनह के साथ है। वह फारसी और संस्कृत का पण्डित है। वह हिन्दी का बडा ज्ञाता है। वह मलिक काफूर से कहता है 'काफिर युद्ध आ गया है।'

वह कहना चाहता है कि वह वीर बल्लाल के साथ किये हुए बर्त्ताव को देख चुका है। देख चुका हूं कि यादवो ने किस तरह द्वार समुद्र के राजा का विनाश किया है फिर भी स्वयं हमे पाडय देश मे ले जाना चाहता है। अल्लाह ही तो इनको ऐसी अक्ल दे रहा है। यह काफिर कभी इकट्ठे नही होते। यह आपस की फूट से लड़ते है। अमीर खुसरो फिर कहता है 'तुमने इन काफिरो की रामायण नहीं सुनी। उसमें भी एक घर का भेदी विभीषण है। सुन्दर पाण्ड्य वही घर का भेदिया है। वीर पाण्डय राजा बना है, वह बडा बेटा है मगर नाजायज औलाद है, सुन्दर पाण्ड्य छोटा है परन्तु जायज औलाद है, लेकिन जब हम-पहुचेगे तब कौन जायज और कौन नाजायज रहेगा कौन जानता है। इनको बाद में वही सजा देना जो सुल्तान ने हम्मीर राव के घर के भेदी रणमल को दी थी। यानी कुत्ते की मौत। इन विश्वासघातियो से मन में नफरत करो क्योंकि यह काफिरो से भी गए बीते है।'

मलिक चलता है। सुन्दर पाण्ड्य साथ है। वह देखता

है काफ़ूर मदुरा की तरफ बढ़ते में मन्दिर को ढहाता जाता है। वीर पाण्ड्य राजधानी छोड़ कर भाग गया है। ५१२ हाथी, ५००० घोड़े, ५०० मन हीरे, मोती, पन्ने और लाल हर तरह के जवाहिरात काफ़ूर के हाथ लगे हैं। काफ़ूर के घोड़ों ने रामेश्वरम् तीर्थ को गंदला कर दिया है। विशाल मन्दिर को ध्वस्त कर दिया है। मूर्त्ति को खण्ड खण्ड कर दिया है। सुन्दर पाण्ड्य को कुछ नहीं मिला है। काफूर ४ थी ज़िलहिज्जा ७१० हिजरी को सुलतान के पास लौट आया है (१३११ ई०) । फतह के खुतवें पढ़े जा रहे हैं और कीमती सामान अमीरों और सरदारों में बांटे जा रहे हैं।

× × ×

सुल्तान ने बुदबुदाया ! 'मलिक काफूर !'

कोई नहीं बोला।

× × ×

राजा रामचन्द्र मर गया है। उसका बेटा शंकरदेव यादव अपने ज़ख्मों को भर नहीं पाया है। वह बागी हो जाता है। फिर मलिक काफूर की सेना कूच करती है और समस्त महाराष्ट्र को बुरी तरह लूटा जाता है, गांव के गाँव जलाकर वह युद्ध में शङ्करदेव को हराकर उसका सिर काट देता है लेकिन शंकरदेव हंसता हुआ मरता है। उसने जान देकर बाप की गुलामी का दाग धोया है दक्खिन के प्राचीन राजवंश चोल, चेर, पाण्ड्य, होयसल, काकातीय, यादव, धूल में मिले पड़े हैं। सोनार गाँव से थट्टा और मुल्तान से दिल्ली, दिल्ली

से द्वार समुद, सब कहीं तुर्कों के घोड़ों ने धूल से आकाश को भर दिया है।

दिगतों में सुल्तान अलाउद्दीन के खुतबे पढे जा रहे हैं, दिगतों में उसके मतवाले हाथी झूमते हैं। उसकी अपार वाहिनी ने करोड़ों रुपया लूट में जीता है।

× × ×

सुल्तान चौंक उठा। उसने देखा दीप अब भी जल रहा था, किन्तु उसकी लौ पहले से क्षीण हो गई थी! क्या हो गई थी!

+ + +

उन्होंने सुल्तान को कत्ल करने की साजिश की है।

वे नौ मुस्लिम हैं।

चाचा जलालुद्दीन ने अपनी बेटी मुगल उलूघ खाँ को ब्याह दी थी। उलूघ खाँ मंगोल था। उसे मुसलमान बनने के बाद धन चाहिए था। सुल्तान ने उसे दिया था। दीन में स्वीकार करने का अर्थ ही धन की प्राप्ति था। इसे सब स्वीकार करने में खुश रहते थे, सिर्फ काफिर हिन्दू उस पैसे को लानत भेजते थे। न जाने उन्हें इस जाहिल कुफ्र में क्या मजा आता था। सुल्तान ने इन नौ मुस्लिमों को सरकारी नौकरियों से निकाल दिया था। वे अलाउद्दीन से नाराज थे।

सुल्तान खड़ा है। नौ मुस्लिम इल्तिजा कर रहे हैं।

सुल्तान कहता है हमने हुक्म दिया है कि तुम लोग अमीरों के यहाँ नौकरी कर सकते हो। राज्य

...हीं कर सकता।

वे भूखे मरते हैं। वे सुल्तान का कत्ल करने की कोशिश करते हैं ?

सुल्तान का गुस्सा जागता है।

पहले दिन ४००० नौ मुस्लिमों का कत्ल होता है।

दूसरे दिन ६००० का।

फिर ६००० का।

फिर ११००० का।

उनके घरों को धूल में मिला दिया गया है। उनके परि-वार सड़कों पर भीख माँगते फिर रहे हैं। रहम से काफिर उन्हें भीख देते हैं, उन हिन्दुओं को कत्ल किया जाता है। नौमुस्लिम चिल्लाते हैं: 'तू मुसलमान है, ये काफ़िर तुझ से अच्छे हैं। हाय जिन्हें हम काफ़िर कहते हैं वे इंसान हैं। तू हैवान है।'

तब शाही फौज के सिपाही नौमुस्लिमों के सिरों को आरे चला कर काटते हैं, उनके धड़ों के टुकड़े टुकड़े किये जाते हैं।

बग़ावत की जलती मशाल को कीचड़ में घुसेड़ कर बुझा दिया जाता है।

× × ×

सुल्तान को पसीना आगया।

× × ×

लेकिन साज़िशें नहीं रुकतीं। बग़ावत नहीं रुकती। सुल्तान को गुस्सा आता है।

खिज्र खाँ और शादीखाँ ग्वालियर भेजे जाते हैं, मलिका वही मलिका जो एक दिन अपनी माँ मलिका जहान से मिली थी आज दिल्ली में है, मगर मजबूर है, आ जा नहीं सकती, उस पर कड़ा पहरा है, और अलपखाँ का क़त्ल कर दिया गया है। देवगिरि की मृतात्माएँ क्यों हँस रही हैं ?

मलिक काफ़ूर कहता है : 'सुल्तान शिहाबुद्दीन ही क़ाबिल शहज़ादा है, उसी को वारिस क़रार दीजिये।'

सुल्तान उसे वारिस क़रार देता है,...

लेकिन....

और बड़ा लेकिन ..

लेकिन....और सुल्तान के सामने लेकिन....

कि लोग नहीं मानते....

नहीं मानते....

क्यों ?

× × ×

सुल्तान व्याकुल सा जीभ फेर कर होटों को भिगोने लगा।

× × ×

गुजरात बग़ावत से खौल रहा है। कमालुद्दीन गर्ग को बाग़ियों को दबाने भेजा था...

कमालुद्दीन को हिंदुओं ने बुरी तरह हरा कर मार डाला....

× × ×

'मार डाला !' सुल्तान पुकार उठा।

× × ×

रामचंद यादव का दामाद हरपाल देव अपने साले शंकरदेव की मौत का बदला लेने को खड़ा होगया है और उसने बग़ावत की है, वह आज़ाद होगया है....

दुआबे के हिंदू किसानों ने बगावत की है....

सौदागर अब आज़ाद होरहे हैं, वे शहनाए मएदों की शक्ति को स्वीकार नहीं करते...

बगाले में बग़ावत के शोले भड़क रहे हैं....

आग....आग....आग लग रही है...

सल्तनत कागज़ की तरह सुलगने लगी है...

नौमुस्लिम

हारे हुए राजपूत

मराठे...

हिंदू....

सौदागर...

किसान....

और फिर इस्लाम के घर में झगड़ते

तातार....

तुर्क....

अफ़गान....

और वह दीवाने जोगी गोरखपुर का मंदिर फिर उठ आया है....

× × ×

'पानी !' सुल्तान चिल्लाया मगर गले से आवाज़ नहीं निकली।

× × ×

यह कौन कहता है, याद नहीं आरहा है—

वह राणा हम्मीर है...

चित्तौड़ की आग का शोला....

जौहर का वारिस...

कितना अंधेरा है....उस अंधेरे में दो रोशनियाँ हैं....एक मशाल रणथंभीर में जल रही है, एक मशाल चित्तौड़ में धधक रही है...

इस्लाम की कितनी आँधी और कितना तूफान आयेगा जो इन दोनों को बुझा सकेगा....

सुल्तान अलाउद्दीन की राह साम्राज्य की राह है। वह खुदा और इस्लाम की राह को समझता नहीं....उसने तो काज़ी से कह दिया था....

और यह कौन है...

मीर मुहम्मदशाह....

मुग़ल....

फिर वही मुग़ल....

उसने अपने हाथ से हिंदू हम्मीर के लिये अपनी औरत और बच्चे को काटा था....और रणमल ने हम्मीर को दग़ा दी थी....हम्मीर ने मर जाना पसंद किया....लेकिन वह वचन से पीछे नहीं हटा...मीर मुहम्मद शाह को उसने आख़िर तक नहीं छोड़ा ..

और गोरा और बादल....

और यह राणा हम्मीर....

उसने खिज्रख़ाँ को मार कर भगा दिया, क्या वह सोनिश्रा

सरदार मालदेव को भी भगा देगा....

किस क़दर बगावत....किस क़दर भाग....

जब मेरा दीप जल रहा था तब चारों तरफ़ अंधकार था और मैं सबकुछ देख रहा था....अब चारों तरफ आग जल रही है तो मुझे इतने उजाले में भी कुछ दिखाई क्यों नहीं देता....बोल, उठ रहा हूं, पाएहम उठ रहे हैं, सब....सुल्तान अब सुल्तान नहीं हूं....

× × ×

अलाउद्दीन मर चुका था !

१६

पहाड़ियों के मुखिया मूंजा बालेछा का सिर काट कर जिस दिन युवक हम्मीर ने काका अजयसिंह को भेंट किया उस दिन काका ने मूंजा के लहू से ही उसे अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था। सुजनसी दक्षिण चला गया था। शीघ्र ही हम्मीर ने आसपास के सरदारों को जीत लिया और मेवाड़ के किसानों और भीलों की सहायता से उसने इतना उपद्रव खड़ा किया कि खिज्र खां को चारों ओर मौत नज़र आने लगी। वह भाग गया, मगर घर का भेदी मालदेव चित्तौड़ का राजा बना जो अलाउद्दीन खिलजी को खिराज देता था।

× × ×

भीड़ एकत्र होरही थी। एक किसान ने कहा : 'राणा !'

'राणा नहीं', हम्मीर ने कहा : 'राणा चित्तौड़ का स्वामी होता है। मैं योद्धा हूँ। जैसे तुम, वैसा मैं।'

किसान वलिष्ठ व्यक्ति था। उसका नाम था कान्ह। उसके पीछे भील रूखा खड़ा था। काला और गठीला। उसने कहा : 'तो फिर वप्पा के वंशज को हम फिर राणा वनायेंगे। मालदेव के सिपाही हमारी पैदावार का आधे से ज़्यादा उठा ले जाते हैं। वे लगान में रुपया नहीं नाज लेते हैं और नाज के उन्होंने ऐसे भाव वाँध रखे हैं कि हम भूखे मरते हैं।'

नीमन वनिये ने कहा : 'राणा ! तू तलवार उठा। वे तो तिजारत भी नहीं करने देते। कहते हैं यहाँ नाम लिखाओ, इसी भाव वेचो, सरकार को दो।'

राणा ने कहा : 'विद्रोह करोगे ?'

'जान देंगे।' स्त्रियाँ चिल्लाई : 'वे हमारी इज़्ज़त लूटने को आते हैं। कई वार उनसे इसी वात पर लड़ाई हो चुकी है। चार सिपाहियों को हमने मार डाला था तो उन्होंने सारे गाँव को उजाड़ दिया। हम जंगलों में जाकर छिप रहे थे। कहते हैं गोमांस खाओ।'

स्त्री ने घृणा से थूक दिया।

हम्मीर ने कहा : 'तो तैयार हो जाओ। वच्चे वच्चे को लड़ना होगा। सारा देश उजाड़ डालो ताकि इन लोगों के हाथ कुछ न पड़े।'

भीड़ चिल्लाई : 'मारेंगे, मरेंगे !'

विद्रोह प्रारंभ होगया !

× × ×

सेना एकत्र होरही थी । राणा ने मुसलमानों के पिट्ठुओं को खूब लूटा था । जो माल एकत्र हुआ था उससे सेना उठी थी, जैसे राख में से बुझते हुए दिखाई देने वाले अंगार फिर दहक उठे थे । पाँच हजार सैनिकों ने मालदेव को त्रस्त कर दिया ।

राणा हम्मीर का नाम अब चित्तौड़ में फैलता जा रहा था ।

राणा हम्मीर ने पुकार कर कहा : 'मेवाड़ के वीरो ! आग धधक रही है । मेवाड़ की स्वतंत्र चेतना फिर जाग रही है । चारों तरफ ज्वालामुखी फूट रहे हैं । केवल चित्तौड़ अब मालदेव के आधीन रह गया है । मालदेव स्वयं बहुत निर्बल है, केवल मुसलमानी फौज के बल पर वह टिका हुआ है ।'

सेना सुनती रही ।

राणा ने फिर कहा : 'ब्राह्मण पुरोहित कहते हैं कि इस पवित्र देश पर कई विदेशियों के बर्बर आक्रमण हो चुके हैं, लेकिन इतना बड़ा बर्बर कोई भी नहीं आया जिसको हमारे धर्म से द्वेष हो । और लोग केवल युद्ध के समय विनाश करते थे और राज्य के लिये युद्ध करते थे । लेकिन यह लोग शांति में भी विध्वंस करते हैं और अपने पाँव जमाने के लिये बल-पूर्वक हिंदुओं को मुसलमान बनाते हैं । मुसलमानों के स्पर्श से ही हिंदू भ्रष्ट होजाता है और फिर उसे मुसलमान बनकर ही रहना पड़ता है । इसलिये आवश्यक है कि इनका सर्वनाश

ही कर दिया जाये। यह लोग छल से अधर्म्म युद्ध करते हैं, फूट डालकर राज्य करते हैं। इसका ही उदाहरण मालदेव है। मालदेव इनके हाथों में पड़कर अपनी प्रजा को लूट रहा है। सुल्तान के नियम विचित्र हैं। उसने राजाओं, जागीरदारों को अपना घरेलू नौकर बना रखा है, उसने उच्च कुलों की प्राचीन मर्यादा का विनाश किया है। उसके राज्य में किसी की विवाहित स्त्री भी सुरक्षित नहीं है। यह तो सारे शास्त्रों के विरुद्ध है। एक रावण ही था जो विवाहित स्त्री सीता को छीन लेगया था, लेकिन उसका परिणाम यही हुआ कि राजा राम ने वानरों की सहायता से सोने की लंका को ढहा दिया। हमने बलिदान देकर अपना गौरव जीवित रखा है। हमने लहू बहाकर मेवाड़ की आन को सुरक्षित रखा है। बोलो ! तुम आगे बढ़ोगे कि पीछे हटोगे ! तुर्कों का दास बन कर, ज़िम्मी बनकर जीवित रहना चाहते हो या स्वतंत्रता की मृत्यु चाहते हो ?'

रूखा भील ने कहा : 'राणा ! क्या तू हमें कायर समझ कर ललकार रहा है ! क्या तू समझता है कि हम दास हैं और दास बन कर रहना चाहते हैं ?'

राणा चिल्लाया : 'तो उठाओ शस्त्र ! मालदेव भी खिज्र तुर्क की भाँति भागता दिखाई देगा। यह सच है कि हमारे आक्रमणों के कारण तुर्क सुल्तान घबरा गया है। वह केलवाड़े के बीहड़ मार्गों से डर गया है। उसने अर्वली की श्रेणियों का पूर्वी भाग अपनी विशाल सेना से जीत लिया है, लेकिन अब दक्षिण हमारा है। उसके पास बहुत बड़ी सेना है, हमारे

की भाँति तारकासुर का वध करके लौटो।'

सेना पहाड़ से उतरने लगी।

× × ×

मालदेव के पुत्र हरीसिंह ने कहा : 'आगये राणा जू !'

'जय एकलिंग !' हम्मीर ने घोड़ा रोककर कहा।

५०० सवार रुक गये।

वनवीर, मालदेव का दूसरा पुत्र, पीछे था। वह चुप था।

'चलें।'

राणा ठिठक गया।

'अगवानी को पुत्रों को भेजा है।' हम्मीर ने कहा—'लेकिन दुर्ग में बाजा नहीं बज रहा, द्वार पर तोरण नहीं लटक रहा। तुम्हारे स्वामी तुर्क तो तोरण नहीं बाँधते, पर बाजे तो बजाते हैं ?'

हरीसिंह सहम गया। उसने कहा : 'सभा में चलें राणा ! भयभीत तो नहीं हैं ?'

हम्मीर हँसा। उसने कहा : 'भय मेरे शत्रुओं को हो। आज या तो मालदेव की कन्या का नारियल अपना फल देगा या मालदेव की तलवार की वार फल देगी।'

पाँच सौ घोड़े क़िले में चढ़ने लगे।

हठात् हम्मीर ने रुककर कहा : 'रुखा !'

भील ने कहा : 'आज्ञा !'

'तू आधे आदमियों के साथ यहीं फाटक पर रह, हम अभी विवाह करके आते हैं।'

सभा के सामने ढाई सौ घोड़े रुक गये। ढाई सौ तलवारें

हाथों में नंगी चमकने लगी और कूद कर उन्होंने सिंहासन पर बैठे मालदेव को घेर लिया। मालदेव की आंखें भय से फट गईं। सभासद जहां के तहां बैठे रहे।

हम्मीर ने कहा : 'मालदेव ! सुल्तान ने तुर्क शिक्षा तो खूब दी है। राणा रतनसी की भांति फंसने वाला हम्मीर नहीं। कन्या कहां है।'

मालदेव ने अपने को संभाला। कहा—'आप विराजें। विवाह अभी होगा।'

रघू अपनी जगह से हिला।

कान्ह ने खड्ग उठा कर कहा : 'वहीं बैठा रह। अभी हिलेगा तो तेरे राजा का सिर धड़ पर नहीं रहेगा !'

सभा चित्रलिखित सी रह गई।

हम्मीर ने कहा : 'मालदेव ! कन्या कहां है ?'

इसी समय द्वार पर फूलों का हार लिये एक लड़की दिखाई दी। वह वधू वेष में नहीं थी। अपनी बहिन को वहां देखकर हरीसिंह चिल्लाया : 'भीतर जा कुंवरि यहां तेरा क्या काम है ?'

कन्या हँसी। कहा : 'मेरा काम ही तो है भैया। मेरा दूल्हा आया है। तुमने मेरे लिये ही तो उसे बुलाया था। ऐसे वीर के गले में हार न डालूं तो क्या पिता के गले में तलवार डलवादूं !'

मालदेव ने फीके मुंह से कहा . 'बेटी ! मुझे बचाले।'

कन्या आगे बढ़ी। हम्मीर के गले में माला डालदी।

मालदेव की सेना का प्रचंड युद्ध करना आगे बढ़ आया।

की भाँति तारकासुर का वध करके लौटो।'

सेना पहाड़ से उतरने लगी।

× × ×

मालदेव के पुत्र हरीसिंह ने कहा : 'आगये राणा जू !'

'जय एकलिंग !' हम्मीर ने घोड़ा रोककर कहा।

५०० सवार रुक गये।

बनवीर, मालदेव का दूसरा पुत्र, पीछे था। वह चुप था।

'चलें।'

राणा ठिठक गया।

'अगवानी को पुत्रों को भेजा है।' हम्मीर ने कहा—'लेकिन दुर्ग में बाजा नहीं बज रहा, द्वार पर तोरण नहीं लटक रहा। तुम्हारे स्वामी तुर्क तो तोरण नहीं बाँधते, पर बाजे तो बजाते हैं ?'

हरीसिंह सहम गया। उसने कहा : 'सभा में चलें राणा ! भयभीत तो नहीं हैं ?'

हम्मीर हँसा। उसने कहा : 'भय मेरे शत्रुओं को हो। आज या तो मालदेव की कन्या का नारियल अपना फल देगा या मालदेव की तलवार की धार फल देगी।'

पाँच सौ घोड़े क़िले में चढ़ने लगे।

हठात् हम्मीर ने रुककर कहा : 'रूखा !'

भील ने कहा : 'आज्ञा !'

'तू आधे आदमियों के साथ यहीं फाटक पर रह, हम अभी विवाह करके आते हैं।'

सभा के सामने ढाई सौ घोड़े रुक गये। ढाई सौ तलवारें

हाथों में नंगी चमकने लगी और कूद कर उन्होंने सिंहासन पर बैठे मालदेव को घेर लिया। मालदेव की आँखें भय से फट गईं। सभासद जहाँ के तहाँ बैठे रहे।

हम्मीर ने कहा : 'मालदेव ! सुल्तान ने तुर्क शिक्षा तो खूब दी है। राणा रतनसी की भाँति फँसने वाला हम्मीर नहीं। कन्या कहाँ है।'

मालदेव ने अपने को सभाला। कहा—'आप विराजें। विवाह अभी होगा।'

रघू अपनी जगह से हिला।

कान्ह ने खड्ग उठा कर कहा : 'वहीं बैठा रह। अभी हिलेगा तो तेरे राजा का सिर धड़ पर नहीं रहेगा !'

सभा चित्रलिखित सी रह गई।

हम्मीर ने कहा : 'मालदेव ! कन्या कहाँ है ?'

इसी समय द्वार पर फूलों का हार लिये एक लड़की दिखाई दी। वह वधू वेष में नहीं थी। अपनी बहिन को वहाँ देखकर हरीसिंह चिल्लाया : 'भीतर जा कुँवरि यहाँ तेरा क्या काम है ?'

कन्या हँसी। कहा : 'मेरा काम ही तो है भैया। मेरा दूल्हा आया है। तुमने मेरे लिये ही तो उसे बुलाया था। ऐसे वीर के गले में हार न डालूँ तो क्या पिता के गले में तलवार डलवादूँ !'

मालदेव ने फीके मुँह से कहा . 'बेटी ! मुझे बचाले।'

कन्या आगे बढ़ी। हम्मीर के गले में माला डालदी।

मालदेव की सेना का प्रबंधक वृद्ध महता आगे बढ़ आया।

उसने कहा : 'बेटी ! तू जारही है ?'

वृद्ध मेहता को देखकर राजकुमारी ने प्रणाम किया और कहा : 'काका ! मेरा तो ब्याह होगया। दहेज़ में राजा बेटी को क्या देंगे ?'

वृद्ध ने कहा : 'राजा से पूछ।'

राजा ने काँपते स्वर से कहा : 'बोलो राणा क्या चाहिये?'

लड़की ने इशारा किया।

हम्मीर ने कहा : 'मुझे अपने मेहता को दें।'

राना ने सिर झुका लिया। सामने की तलवार और झुकी। राजा ने देखा दोनों वगलों की तलवारें कुछ हिल रही थीं।

उसने कहा : 'मेहता जू ! कन्या के संग जाओ।'

मेहता पीछे हटा। उसने पुकारा : 'भाइयो ! मैं जाता हूँ। आज से राणा हम्मीर हमारे सम्बंधी हुए। वे हमारे जमाई हैं। वे अब से पूज्य हैं।'

सेना के जो लोग युद्ध की इच्छा से खड़े थे कि कब आज्ञा मिले, कब हम आगे बढ़ें, मेहता की आज्ञा से पीछे हट गये और नंगे खड्ग म्यानों में चले गये।

लड़की ने झुककर पिता के चरण छुए, और हम्मीर से कहा : 'राणा जू ! मेरे घर का लहू न बहाना। चलो चलें।'

वृद्ध मेहता ने इंगित किया। दो घोड़े और आगये। किंतु हम्मीर ने तुरंत घोड़े पर चढ़कर राजकन्या को पीछे चढ़ा लिया। राजकन्या चिल्लाई : 'प्रणाम ! सबको प्रणाम ! तुम्हारी लाड़ली जारही है पिता !'

मालदेव हिल उठा। उस समय तक वृद्ध मेहता घोड़े पर सवार आगे आगे जारहा था, पीछे राजकन्या के साथ हम्मीर था, और बाकी सवार पीछे थे। जब ये लोग द्वार पर पहुँचे, राणा के सिपाही जयजयकार करने लगे। मेहता ने इंगित किया। चित्तौड़ दुर्ग में रहने वाली राजपूत सेना भी जय जयकार करने लगी। मुसलमान डर के मारे भीतर छिप गये। मेहता का राजपूतों पर ऐसा प्रभाव था।

जब वे चले गये मालदेव ने काँपते स्वर से कहा 'वे चले गये!'

रघू पास आगया। उसने कहा : 'गये, महाराज!'

हरीसिंह ने दांत पीसकर कहा . 'बहन ने सर्वनाश कर दिया!'

'नहीं', बनवीर ने कहा . 'आज उसी ने पिता को बचा लिया।'

'अब सुल्तान सुनेगा तो क्या कहेगा?'

मालदेव यह सुनते ही मूर्च्छित होगया।

× × ×

दो वर्ष बीत गये। नयी रानी अपने पुत्र खेतसी को गोद में खिलाने लगी। राजा हम्मीर सोच रहा था।

'क्या सोच रहे हैं?'

'सोचता हूँ कि जिस चित्तौड़ के राजवंश का मुख सारा राजस्थान देखता था, आज वह यवनों के दासों के हाथ में पड़ा है।'

रानी हँसी। कहा : 'का राणा को चित्तौड़ चाहिये?'

राणा ने चौंक कर देखा ।

'यह क्या कठिन है ?' रानी ने कहा ।

'लेकिन तुम्हारे पिता !'

'मेरे पिता तो वहीं तक थे जब तक तुम न थे । पति ही स्त्री का सर्वस्व होता है । फिर मेरा पति भगवान है । वह दीनों दरिद्रों का नारायण है । मेरा पिता और भाई निर्लज्ज दास हैं ।'

'रानी !' राणा ने आश्चर्य्य से कहा ।

'क्यों ?' रानी ने कहा : 'मेवाड़ के उत्तराधिकार की ही चिंता है या हिंदू वंश की स्वतंत्रता का भी ध्यान है । यह बर्बर तुर्क ही इस देश में राज्य करते रहेंगे ? और राजपूत क्या इसी तरह बँट कर अपने को नष्ट करते रहेंगे ? मेहताजू कहाँ हैं ? उन्हें बुलवाइये ।'

मेहता आया । वृद्ध ! गोरा । गुजराती ब्राह्मण । मुख पर असीम दृढ़ता थी ।

राजरानी ने पाँव छुए । बैठा तो रानी ने कहा : 'सुना काका ! अब कब तक केलवाड़े में रहना होगा ?'

मेहता ने कहा : 'बेटी ! केलवाड़ा और चित्तौड़ क्या दूर दूर हैं ?'

'दूर तो हैं हीं । केलवाड़े में सेना कहाँ हैं ?'

'सेना तो चित्तौड़ में है ।'

'पर वह तो मालदेव की है, दासों की सेना है ।' राणा ने टोका ।

'यह किसने कहा ?' ब्राह्मण ने कहा—'दास तो

इसी से है कि कोई योग्य राजा नहीं है। राजपूत दास हुए हैं ? मालदेव तो मुसलमानों के बल पर राजा है।'

'और राजपूत ?'

'सेना का अध्यक्ष और प्रबंधक रहा हूँ। क्या सोचकर बेटी ने मुझे दहेज में मांगा था राणा !'

'मेहता जू ने ही', रानी से कहा— 'मुझ से छिपकर रनिवास में कहलवाया था कि हिंदुओं का असली राजा आ-गया है, इसी को वर ! ऐसे वर कि पता किसी को न चले।'

'फिर', मेहता ने कहा . 'दहेज में तो मैं आया हूँ। पहले भी कभी कहीं ब्राह्मण को दहेज में दिया गया था ! राजपूतों को तो एक इशारा करूँ। ये तुम्हारी ओर हो जायेंगे।'

'फिर चित्तौड़ लेने में क्या है ?' राणा ने कहा : 'बाकी मुसलमानों को हम यों ही मसल देंगे।'

'नहीं' मेहता ने कहा : 'चित्तौड़ किसने जीता था ?'

राणा नहीं समझा। देखता रहा।

मेहता ने कहा : 'छल ने ! क्योंकि सुल्तान ने छल से राणा रतनसी को पकड़ा था। और लाज किस प्रकार बची थी !'

'छल से।' रानी ने कहा : 'रानी पद्मिनी ने छल से ही नीच सुल्तान को पराजित किया था।'

'छल से।' ब्राह्मण ने कहा . 'दुष्ट के साथ छल करने में निंदा नहीं। मालदेव को सुल्तान ने कैसे पाया ? छल से। उसने जनधिकारी को सोन देकर जीता, यह बैदा फूट डालना

नहीं है ? वह क्या छल नहीं है ? फिर चित्तौड़ को बुद्धि से ही क्यों न जीता जाये ?'

राणा ने कहा : 'वाह होगा कैसे ?'

रानी ने मुस्करा कर कहा : 'ऐसे कि न मेरे घर के मरें, न हानि हो। राजपूत अपनी ओर होजायें, मुसलमानों की दासता के बंधन कटें। चित्तौड़ स्वतंत्र हो, राजस्थान की नाक ऊँची उठे, मेवाड़ में फिर जयध्वज फहराये। मैं जाऊँगी। मेहता जू को मेरे साथ भेजिये। मुझे पहुँचाने पाँच सौ आदमी लेकर आप चलें। दुष्टों को सज्जनता से ही दबाया होता तो श्रीकृष्ण ने शिशुपाल को क्यों मारा था। मेरे पिता भीष्म और द्रोण की भाँति अधर्मी के साथ हैं, इन्हें छल से ही हटाना होगा।'

राणा ने पूछा : 'लेकिन जाओगी किस बहाने ?'

मेहता ने मुस्करा कर कहा : 'इस समय मालदेव सेना लेकर मेर लोगों से लड़ने गये हैं। हरीसिंह, बनवीरसिंह अपने भाइयों के साथ हैं। बनवीर अपनी बहन को बहुत चाहता है। उसे गद्दी का मोह भी नहीं। वह दिल ही दिल में मुसलमानों से घृणा करता है। उससे काम बनेगा। रानी लिखदें कि मुझे अपने क्षेत्रपाल देवता के पगों लगना है, मुझे बुलालो। वे अवश्य बुलायेंगे। तब हम सब चलेंगे।'

राणा ने अविश्वास से कहा : 'क्या यह संभव है।'

'जयध्वज तैयार रखो।' कहते हुए मेहता उठ खड़ा हुआ।

× × ×

'इस जयध्वज पर अपना पवित्र झंडा लगाकर इसी स्थान

पर फहराम्रो', वृद्ध मेहता ने कहा ।

चित्तौड़ के महाराणा हम्मीर ने कहा : 'फिर उड़ेगा !'

'हाँ, फिर उड़ेगा !' वृद्ध ने मुस्करा कर कहा—'इस क्षेत्रपाल देवता में यही गुण है ।'

मेहता की योजना सफल हुई थी । पति, पत्नी, पुत्र और मेहता कुछ लोगों के साथ भीतर घुसे । चित्तौड़ के दुर्ग में राजपूत सेना राणा की ओर होगई । मुसलमानों को मार डाला गया । राणा को गद्दी दी गई । हरीसिंह भाग गया और मेर युद्ध में लगे हुए पिता मालदेव के पास पहुँचा । मालदेव ने सुना तो कहा : 'अब ! सुल्तान अलाउद्दीन तो मर चुका है ।'

'तो जो भी सुल्तान है वह अवश्य सहायता देगा ।'

'तुग़लक है ।'

'चलिये, उसी की शरण में चलें ।'

× × ×

वयोवृद्ध चारणहूँपा और मुँहणोत जब चित्तौड़ पहुँचे थे तो मुँहणोत ने कहा था—जब सिंह गरजा तो सारे सियार जंगलों में जाकर छिप रहे । उसका गर्जन सुन कर वीर निकल निकल कर आने लगे और फिर वही पवित्र झण्डा लहराने लगा । कायर हरीसिंह की मृत्यु ने रानी के कुल का कलंक धो दिया । अजमेर, रणथम्भोर, नागोर, और चम्बल तक राणा की यशोगाथा गूँजती है । मारवाड़, जयपुर, बूँदी, ग्वालियर, चंदेरी, राजोड़, राज्यमेन, सीकरी कालपी और आबू में उसी का जयजयकार उठता है । उसके राज्य में

प्रजा को सुख है, अत्याचार नहीं, न विधर्म्मी हैं। वह हिंदुओं का चमकता हुआ सूर्य्य है। उसके माथे पर सतियों की भस्म का तिलक है। वीरो। उसे अपनी तलवार दो, क्योंकि वह तुम्हारे ही लिये जीवित रहता है। जब तक राणा है तब तक तुम्हारी वीरता अखण्ड जीवित रहेगी।

चारण हूंपा ने कहा था : यह मेवाड़ की पवित्र धरती है, इसे सौ बार प्रणाम ! इसे हजार बार प्रणाम। यह माँ तो स्वतंत्र रहती है, या उजाड़ खंडहर पड़ी रहती है, यह कभी दास बन कर नहीं रहती।

भाग-९-उपसंहार

चर्पटनाथ की सिद्धि : नया रास्ता

१

वृद्ध होगया है चर्पट। वृद्ध है भंगरनाथ।

अब वे यात्रा पर चल पड़े हैं।

केवल सिद्धि का स्वप्न शेष है, रससिद्धि का, पवन को ऊपर चढ़ाने का। वृद्ध हैं पर स्वास्थ्य अब भी वही सा है यद्यपि काल किस पर अपना प्रभाव नहीं छोड़ता।

यात्रा का भी कारण है।

वह है यह कि किसी भी गोरखपंथी मन्दिर में स्थान नहीं है।

उस दिन गोरखपुर के बाद वे आगे चले और एक और मन्दिर में पहुंचे। यहां तर्कों में अचानक चर्पट ने कहा था...

होने कारनि करहिंगिआनु,
होने कारनि धरहि धिआनु,
होने कारनि तीरथि इसनानु,
होने कारन पुनु अरु दानु,
होने कारनि जुधि संगरामु,
होने कारनि पचि पचि मुआ
चरपटि प्रणिवं कोई
साधु अनिहोनी हुआ।

ज्ञान, ध्यान, तीर्थस्नान, पुण्यदान, युद्ध संग्राम, मृत्यु सब होनी के कारण है, परंतु चर्पट ने अनहोनी को जीतने वाला ही ऐसा साधु माना जिसके सामने वह सिर झुका सकता था।

योगी असन्तुष्ट हुए। यह उन पर सीधा आक्षेप था।

चर्पट सम्मानित योगी था अतः वे तरह दे गये। समझे कि बुढापा शायद कुछ रंग ले आया है। स्वयं महंत भी चर्पट से बहुत स्नेह रखते थे बल्कि चर्पट ने उन्हें रसेश्वरमत का सम्पूर्ण ज्ञान दिया था। अतः वे भी नहीं बोले। ब्रह्मचारी अपनी नित्य नैमित्तिक चर्य्या में लगे रहे।

प्रातःकाल जब धूनी के पास तरुण योगी बैठे थे कोई हठ साधना कर रहा था।

चर्पट देखता रहा। फिर न जाने उसे क्या सूझी कि वह उनके निकट आगया।

साधना के कठिन मार्ग की वे प्रशंसा ही कर रहे थे कि अचानक ही चर्पट गाने लगा।

तरुण पास आगये। चर्पट ने गाया—

वनि बनि फिरैं
कन्दु अहारू करे,
जालि तपु,
तीति कालि मधि खरै।
अगनि तपु उसनि
कालि महि करै
हठि निग्रहि करि
छीजतु जरै

यह भाता कर।

तरुण एक दूसरे का मुँह देखने लगे। चर्पट हँसा और कहा : ब्रह्मचारियो ! सोचते होगे सठिया गया हूँ ? । मैं सच कहता हूँ। वन वन घूम कर कन्दमूल खाने से नहीं होता। तप भी व्यर्थ है। यह जो तुम हठ करते हो, स्ती अपने को घोट कर संयम करते हो, इससे तो शरीर होने लगेगा।

'तो गुरुदेव !' तरुण ईश्वरनाथ ने कहा : 'यह जो सूर्य चंद्र का मिलन है, यह जो गुरु गोरखनाथ ने कहा है, व झूठा है ?'

'गोरखनाथ की बात भी झूठी हो सकती है वत्स ! वे योगी थे। किंतु गोरख का तत्त्व देखो। केवल बाहरी पकड़ने से आत्मा का कोई लाभ नहीं होगा। ऐसी बातें ले हुए लोग ही करते हैं।'

भंगरनाथ ने कहा : 'गुरुदेव ! इन परिणामों पर पहुँचने ये जीवन की साधना भी तो चाहिये।'

ईश्वरनाथ फिर कुछ नहीं बोला। योगी उठ गये और होते संवाद महन्तजी तक जापहुँचा।

'तुम वहीं थे ईश्वरनाथ ?'

'मुझ से ही तो कहा था गुरुदेव !'

'हठयोग व्यर्थ है ?'

'कहते थे यह भूल है।'

महंतजी ने पास बैठे महानाथ की ओर देखा। महान

परेशान सा दिखाई दिया।

'यह पंथ में क्या होरहा है?'

'नाथ ही जानें।'

'और चर्पट जैसे सिद्ध?'

'क्यों कहते हैं?'

'वे कहते हैं योगी वास्तविक सत्य को भूल कर वाह्याडंबर में फंसते जारहे हैं।' ईश्वरनाथ ने कहा।

बात इतने ही तक सीमित नहीं रही। जब नये ब्रह्मचारी आये और उनके कानों को चीरा लगाकर कुण्डल पहनाने की बात आई तो चर्पट ने टोक ही दिया :

सुध फटकि मनु गिआनि रता,
चरपट प्रणवै सिध मता।
बाहरि उलटि भउनि नहीं जाउ
काहे कारनि कांननि का चीरा खाउ?

महंतजी झल्ला उठे। यह क्या! आखिर यह है क्या? सिद्धमत को ऐसे ही प्रणाम होता है। मन को शुद्ध करके ज्ञान में रत होओ। बाहर को भीतर संयमित करो! कानों में चीरा क्यों लगवाते हो!

यह तो स्वयं कनफटा मत की ही उपेक्षा हुई।

दूसरे दिन महंत जी को क्रोध चढ़ा जब उन्होंने सुना—

विभूति न लगाओ जिउ तरि उतरि जाइ
खर जिउ धूड़ि लेटे मेरी बलाइ।

विभूति मत लगाओ। भस्म को भी छोड़ दो! मेरी बला से गधा भी धूलि में लोटता है। और पाप की सीमा होगई।

सेली न बाँधो लेवों ना म्रिगानी
ओढ़उ ना सिया जि होइ पुरानी
पत्र न पूजो डंडा ना उठावो
कुत्ते की निम्राई माँगने न जावो

सेली मत बाँधो, म्रिगानी मत लो। पुराने कंथा को मत ओढ़ो। किताब को पूज्य मत समझो। डंडा भी त्याग दो। और अंतिम बात! कुत्ते की तरह भिक्षा माँगने मत जाओ।

योगी तिलमिला उठे। क्या वे भिखारी थे? कुत्ते थे! यह तो समस्त योगी मार्ग की निंदा थी। कितना भयानक था यह विचार! यह क्या योगी को शोभनीय था!

यदि लोग इसे सुनें तो?

किंतु कुछ ही दिन बाद महंतजी को बाहर नगर में एक काम से जाना पड़ा। लौटे तो सन्ना उठे। वे चर्पट की कविता को लोगों को गाते सुन आये थे।

खासी करि के भुगति न खावो
सिंधिया देखि सिंगी न बजावो
दुआरे दुआरे धूमा न पावो
भेखि का जोगी न कहावो,
आतिमा का जोगी चरपट्ट नाउ।

निश्चय ही यह योगियों के प्रति भीषण व्यंग्य था। और लोगों ने उन्हें ही सुनाने को कहा था। यानी सब योगी का भेस बनाये डोलते हैं। आत्मा का जोगी तो एक चर्पट ही रह गया है?

उत्तर पश्चिम से नागनाथ आया था। वृद्ध होगया था।

सुनते ही बोला : 'अरे वह तो पहले भी मन्दिर से निकाला गया था। उसका नाम ही चर्पट है जिसका अर्थ है धूर्त और झगड़ालू ! यहाँ भी कर दिया उसने कुछ प्रारंभ !'

महंथजी ने सुनाया तो नागनाथ हँसा। खूब हँसा। कहा : 'अभी आप पर तो आग नहीं आई !'

'मुझ पर कैसी आई ?'

'वहाँ तो गुरुदेव से ही इसने प्रारंभ किया था। आपसे गुरुदेव ! आयु में तो मैं ही बड़ा हूँ। साधना में बड़े हैं आप ! फिर भी यह व्यक्ति मेरा पहँचाना हुआ है। वह तो कहिये कि बीच में संग्राम आगया था। और फिर जहाँ सब लड़ कर अमर पद प्राप्त कर गये, यह आत्मा का जोगी वहाँ से भी चुपचाप बच निकला।'

'और यह झंगरनाथ !'

'अपने गुरु से दो पग आगे ही है।'

'सचमुच ?'

'ये साथ छोड़ आया था मन्दिर को, इसी के पीछे। इसने पंथ से ऊपर माना इसे। गुरु की आज्ञा लिये बिना ही चला आया और नये जोगियों में से कुछ को बहका ले गया।'

'आपने जाने दिया ?'

'उसका नरक उसी के साथ है। हमें अपनी साधना से मतलब ठहरा।'

'गुरुदेव !'

'कौन ! ईश्वरनाथ ! कोई खास बात ?'

'गुरुदेव अभी बाहर लड़के मुझे देखकर गारहे थे—

संगो गिया भोल मकोली
कनि फड़ाई मुग्ग तंबोली,
दिहै भिगिया राती रमु भोगु
चरपट्ट कहै कवाइया जोगू !
महंथ चौंक उठे !
'कौन गारहा था !'
'नगर के लड़के !'
'और तुम ने क्या किया !'

× × ×

मैंने उन्हें प्रसाद दिया। दो दो चिमटे जड़े। लेकिन फिर नगर के बड़े लोग मुझ से क्रुद्ध होगये। कहने लगे कि जोगीड़े की इतनी हिम्मत ! हमारा ही खाये, हमें ही डराये !'

महंथ खड़े होगये।
'और तूने क्या कहा ?'
'गुरुदेव ! मैं तो तब कहता जब वे मुझे कुछ कहने देते।'
'क्यों क्या हुआ ?'
'वे फिर गाने लगे।'
'क्या गाया ?'
'जो भितकु घोड़े परि चढ़ै
किउ मकानु टूटि नहीं पड़ै
जो भिक्खु तनि सावं जोड़ा
कजहु ना मूआ निगोड़ा
जो भितकु बांधे धर्मराई
धिगु जननी या कउ साजि न भाई।'

'यह किसने कहा ?'

'उसी चर्पट ने।'

महंथ सोचने लगे।

नागनाथ ने कहा : 'जब घर में कांटे उगते हैं तब यही होता है।'

ईश्वरनाथ ने बीच में ही बात काटकर कहा : 'वे कहने लगे—इनमें सिद्ध तो एक है। वह है चर्पटनाथ। और मैंने देखा। चर्पट ने कुण्डल उतार दिये हैं। कंथा फेंक दिया है। भंगरनाथ ने सिंगी उतार दी है। वे लोक में कहते फिरते हैं कि योगिवेश व्यर्थ है। आडंबर है। गोरखनाथ सिद्ध थे। आत्मा के जोगी थे। उन्होंने वह वेश धारण किया क्योंकि उन्हें आदिनाथ ने वह वेश दिया था। हम तो वैसे नहीं ? गुरु गोरख का शब्द ही प्रमाण है। जब साधना सहज ही है, और मन का ही संयम है, तो इस वेश की आवश्यकता ही क्या है ? भस्म क्यों लगाते हो ? वासना को भस्म करो।

महंथ घूमने लगे। उनकी दृष्टि अपने योगिवेश पर गई। क्रोध आया।

चर्पट और भंगर नहीं आये। बीच बाज़ार बैठा था चर्पट और लोग चारों ओर खड़े थे, वह गाता था और लोग उसके शब्दों को पीरहे थे—

जो मनु मारै किआ पड़ै पुरान
जो मनु मारै किआ कथै गिआनु
जो मनु मारै किआ धरै धिआनु
जो मनु मारै किआ वेद कुरान

जो मनु मारै विद्या मही प्रमाणु
जो मनु मारै विद्या पुनु अरु दानु ।
जो मनुमारि ता विद्या जुधुमगिरामु
जो मनु मारे विद्या गंगा इसनानु ।
मनु मारै सिधि होई
चरपट्ट प्रणिवै साधू विरला मनु मारै कोई ।

पुराण पढ़कर क्या होगा यदि मन को वश में कर लिया ? ज्ञान का प्रवचन, ध्यान करना, वेद कुरान, मही दमशान, पुण्य दान, युद्ध संग्राम, गंगा स्नान सब व्यर्थ हैं । सिद्धि तो मन को जीतने से मिलती है ।

लोगों ने चर्पट का जयजयकार किया । परंतु मंदिर के द्वार बंद होगये ।

रूपा दर्जी ने कहा : 'सिद्ध चर्पट ! मंदिर बंद होगया ।'

'कौनसा मंदिर रूपा ?'

'गुरु का द्वार ।'

'वह तो मेरे मन में है रूपा ! गुरु का तो हृदय में वास है । जिसने पथ दिखाया है वह क्या कोई छीन सकेगा ?'

रात भी बीत गई ।

डंगर ने कहा : 'गुरुदेव !'

'कहो झंगरनाथ !'

'यहीं गुरुदेव !'

'फिर यहीं ?'

'यहीं गुरुदेव !!' उसने फिर पूछा ।

इद्द हजार गठियों की गाडी

निरखु निरखु पगु धरना
चरपटु कहै सुनहरे सिधो
हठि करि तप नहीं करना।'

'जानता हूँ गुरुदेव !'

'तो चलो वहीं कहें जहाँ सत्य सुना जाता है, जहाँ स्वार्थ के परे कोई कान तो देता है। पंथ के भीतर जो वंद होते है वे स्वार्थ में होते हैं। मर्यादा उन्हें कायर वना देती है। विद्रोह वाहर किया जाता है। सत्य वही है जो लोक में तपाया जाये। अव मंदिर में नहीं लौटना है झंगरनाथ !

अंदरि गंदा,
वाहरि गंदा,
तू की भूलिश्रो
चरपट अंवा।

'तो चलें गुरुदेव ! उसी सहज आनंद की ओर, जहाँ अनाहतनाद निरंतर होता है, जहाँ मृत्यु नहीं आती।'

'चलो झंगरनाथ। पूर्व की ओर चलो। वहाँ अभी तक अशांति है। सुल्तान के वाद वहाँ हलचल मच रही है। जगह जगह ठग और लुटेरे खड़े होगये हैं। चलो झंगर जोगियों को जगायें। वज्रोली और प्राणायाम मात्र से सव नहीं वचेगा।'

यह कथा है उनके चल पड़ने की और वे नगर नगर ग्राम ग्राम सुनाते जारहे हैं, साधारण है उनका वेश···किंतु संदेश है अपने उसी शाश्वत गुरु—गोरखनाथ का····

यात्रा··
अनंत यात्रा····

इसमे कही विश्राम नही

किंतु थकन की भी तो कोई गु जायश नही

इस पृथ्वी पर न जाने कितने चल चुके हैं, योगी भी, इसी तरह और सब आकर चले ही तो गये हैं

आया और निकल गया है पथ। ऐसे ही तो थी वह—गोरखवंसी। बस।

कितनी यात्रा हो चुकी है, अभी न जाने कितनी बाकी है

झंगर को अधिक याद नही कुछ ही चित्र याद हैं जिसमे उसने गुरुदेव चर्पटनाथ के कुछ विशेष रूप देखे थे···

गुरुदेव व्याकुल होगये थे।

'झगरनाथ ?'

'हाँ गुरुदेव !'

'यही भूमि है जहाँ जोगी जालधर ने योग साधना की थी ?'

'हाँ गुरुदेव !'

'म्लेच्छो से पदाक्रात। ठगो और डाकुओ ने कितनी अराजकता फैला रखी है। प्रजा कितनी सत्रस्त है

'हाँ गुरुदेव ! तुर्क कहते हैं यह काफिरो की वस्ती ऐसा नरक है जिसमे अल्लाह ने स्वर्ग की वस्तुए भर रखी है

'मन निरजन मे लगाओ झगर ! अब और कुछ शेष नही है

सूफी है वह कोई।

आया है और चर्पटनाथ उसे सिखा रहा है, पवन का

निरखु निरखु पगु धरना
चरपटु कहै सुनहरे सिधो
हठि करि तप नहीं करना।'

'जानता हूँ गुरुदेव !'

'तो चलो वहीं कहें जहाँ सत्य सुना जाता है, जहाँ स्वार्थ के परे कोई कान तो देता है। पंथ के भीतर जो बंद होते है वे स्वार्थ में होते हैं। मर्यादा उन्हें कायर बना देती है। विद्रोह बाहर किया जाता है। सत्य वही है जो लोक में तपाया जाये। अब मंदिर में नहीं लौटना है झंगरनाथ !

अंदरि गंदा,
बाहरि गंदा,
तू की भूलिओ
चरपट अंधा।

'तो चलें गुरुदेव ! उसी सहज आनंद की ओर, जहाँ अनाहतनाद निरंतर होता है, जहाँ मृत्यु नहीं आती।'

'चलो झंगरनाथ। पूर्व की ओर चलो। वहाँ अभी तक अशांति है। सुल्तान के बाद वहाँ हलचल मच रही है। जगह जगह ठग और लुटेरे खड़े होगये हैं। चलो झंगर जोगियों को जगायें। वज्रोली और प्राणायाम मात्र से सब नहीं बचेगा।'

यह कथा है उनके चल पड़ने की और वे नगर नगर ग्राम ग्राम सुनाते जारहे हैं, साधारण है उनका वेश…किंतु संदेश है अपने उसी शाश्वत गुरु—गोरखनाथ का….

यात्रा…

अनंत यात्रा….

इसमे कही विश्राम नही

किंतु थकन की भी तो कोई गु जायश नही

इस पृथ्वी पर न जाने कितने चल चुके हैं, योगी भी, इसी तरह और सब आकर चले ही तो गये हैं

आया और निकल गया है पथ। ऐसे ही तो थी वह—गोरखवसी। वग।

कितनी यात्रा हो चुकी है, अभी न जाने कितनी बाकी है

भगर को अधिक याद नही कुछ ही चित्र याद है जिसमें उसने गुरुदेव चर्पटनाथ के कुछ विशेष रूप देखे थे ''

गुरुदेव व्याकुल होगये थे।

'भगरनाथ ?'

'हाँ गुरुदेव !'

'यही भूमि है जहाँ जोगी जालधर ने योग साधना की थी ?'

'हाँ गुरुदेव !'

'म्लेच्छो से पदाक्रात। ठगो और डाकुओ ने कितनी अराजकता फैला रखी है। प्रजा कितनी सत्रस्त है

'हाँ गुरुदेव ! तुर्क कहते हैं यह काफिरो की वस्ती ऐसा नरक है जिसमे अल्लाह ने स्वर्ग की वस्तुए भर रखी हैं

'मन निरजन में लगाओ भगर ! अब और कुछ शेष नही है

सूफी है वह कोई।

आया है और चर्पटनाथ उसे सिखा रहा है, पवन का

उलटना...

आया है एक वैद्य। चरण पकड़ता है, महौषधियां मांगता है....

'वैद्य हो ?'

'हां योगिराज !'

परंतु मेरी औषधियों को पाकर क्या करोगे ? धन कमाओगे ? लोभ की तृप्ति ? प्रतिज्ञा करो लोक के कल्याण के लिये इनका प्रयोग करोगे ?'

'सौंगंध है गुरुदेव ! आज्ञा का पालन करूंगा।'

गुरुदेव उसे सिखाते हैं....पारे की, अभ्रक की....न जाने कितनी क्रियाएं....

मेला लग रहा है। नाथपंथियों की भीड़ है। शाक्त और बौद्ध भी हैं कुछ, वैसे वे अब या तो मुसलमान हो चुके हैं या अपने को हिंदू कहते हैं। अब वे भीतर शाक्त हैं, वाहर नहीं।

और चर्पट का स्वर ऊंचा सुनाई देता है—

अरे संसार पागल होगया है....

लोग एकत्र होते हैं, जोगी भी...

चर्पट कहता है....

कोई कहता है कि अच्छे और बुरे कार्य को छोड़ देने से ही मोक्ष मिल जाता है। कोई कहता है वह वेदों को पढ़ने से मिलता है। सभी न जाने कितने मार्ग बताते हैं, किंतु गुरु गोरखनाथ की बात ही सत्य है संसारियो !—जहां सहज समाधि में मन मन को देखने लगता है, वही मोक्ष है। उसमें न आडंबर है, न जाति, न वर्ण, न घृणा, न रूढ़ि, न

निम्न कोटि की उपासना हो…

लोग कहते हैं : सिद्ध कौन है ?
चर्पटनाथ !!!
सुना है नाम ?

हाँ। पर वह तो जोगी थे। जोगियों का इतना आदर कहाँ गया ? कान तो चिरे हुए हैं ?

जोगी कहते हैं—कुठारों में बुद्धि नष्ट होती है। किया धरा सब नष्ट हो गया। हम भी सिद्ध थे, शायद कुछ गलत कर गये…छोड़ दिया स्वयं महादेव का पथ…

हँसता है चर्पट।
लोग उत्सुक हो उठते हैं।
क्यों हँसता है सिद्ध !
सिद्ध हँसता है तो क्या आश्चर्य !

सिद्ध तो सदैव ऐसे काम करता है, जो साधारण लोग नहीं करते। इनकी तो कुछ भी कहीं ओर-छोर नहीं रहती है। वह ध्यान में डूबे रहते हैं यह लोग…

जोगी कुछ विस्मय से देखते हैं,…
क्योंकि चर्पट के हास्य में व्यंग्य है…
मत्स्येन्द्रनाथ गुरु के पास आ जाता है…
इक मौन पटा, इक तीर्थ पटा
इक निर्मल अंतक मोक्ष जटा
इक ध्यान, इक मौनी इक कानफटा
इक जंगम कहिये भसम घटा,
जउ तउ नहीं चीन्हे उलटि घटा
तब चरपट सगले स्वांग नटा
कहु चरपट पेट नटा…

तव छोड़ि जाहिगा लटा पटा
जवि आवैगी कालि घटा....❀
भीड़ ठठा कर हँसती है...

योगी क्रुद्ध से चर्पट को देखते हैं। आ ण करने को टूटते नहीं क्योंकि तर्क को तर्क चाहिये। परंतु भीड़ बीच में आजाती है....घनी जो होती चली जा रही है, चर्पट की वात में नया जीवन है...

फिर भी एक प्रहार चर्पट के शीश पर हो ही जाता है... वह कोई नया जोगी है....उद्दण्ड....

चर्पट....विद्रोही के सिर से रक्त की बूंदें गिरती हैं....

भंगरनाथ देखता है। देखता है चर्पट के नेत्रों में असीम करुणा छलक रही है....और सुनता है कि जोगी पीछे हट गये हैं, क्योंकि भीड़ मुक्त कंठ से चिल्ला रही है....

जय...

सिद्ध चर्पटनाथ की जय....

और जयजयकार आने वाली शताब्दियों में फैल जाने के लिये घना होने लगता है....घना....और घना....



❀ कोई सफेद कपड़े पहनता है, कोई नीले, कोई तिलक जनेऊ और लंबी जटा रखता है, कोई किसी मत का है, कोई किसी, फीए, मोंनी और

कनफटा, जंगम, भस्म लगाए, पर जब तक पवन को ऊर्ध्वगति नहीं किया तब तक चर्पट इस सारे वेश को स्वांग मानता है... " कहता है यह तो पेट के साधन हैं, रोटी कमाने

के तरीके....

यह सारा लटा पटा—वस्त्र और परिवेश—छूट
जायेगा....योंही...कुछ भी करते धरते न बनेगा...
जब आजायेगी काल की घटा....

परिशिष्ट-१

यह हैं चर्पटनाथ। विद्रोही। गोरख के बाद वाले युग में। कबीर की पृष्ठभूमि, जिसे किसी ने नहीं देखा है।

चर्पट ने निम्नलिखित काम किये—

१) गोरखपंथ के भीतर जो वाममार्गी घुसे थे उन्हें अंतिम चोट चर्पटनाथ ने दी और वीर्य्य और रज के संयोग की सिद्धों की बात की परंपरा को पारे और गंधक के मिलन के रूप में रसेश्वर मत को प्रचारित करके नाथयोगियों के द्वारा आयुर्वेद को औषधियों के क्षेत्र में एक नया प्रयोग दिया।

· २) इस प्रकार योग की एकांत साधना लोक के हित में आने लगी। यद्यपि उन औषधियों का मध्यकालीन सीमा के कारण सोना बनाने और कीमियागरी के आगे वैज्ञानिक विश्लेषण नहीं हुआ। [यह और बात है कि बाद के समय में यह दवाएं सामंतों के विलास के लिये साधन बनीं। परंतु इसके लिये चर्पटनाथ उत्तरदायी नहीं थे।

३) चर्पट ने योगमार्ग में रह कर भी लोक के लिये संघर्ष किया। और योगमार्ग को सर्वश्रेष्ठ मार्ग समझने के कारण इस्लामी शासक वर्ग से टक्कर लेकर जनवल की हिम्मत बढ़ाई। गैनीनाथ ने निम्न जातियों को इकट्ठा किया, नामदेव ने प्रजा की निराशा से टक्कर ली। यह नाथपंथ का ही

प्रभाव था। योगियों में फिर जाँबाज़ी की लहर दौड़ी, जिसने प्रजा का साहस उस भयानक समय में नहीं खोने दिया।

४) चर्पट ने प्रकारांतर से वर्ण व्यवस्था की स्वीकृति दी, यद्यपि वे जाति प्रथा को नहीं मानते थे। एक ही लक्ष्य था कि इस्लामी शासक वर्ग से लड़ा जाये, इस ध्येय से उन्होंने भारतीय संस्कृति की रक्षा की, जिसे ईरानी मुल्ला वर्ग और तुर्क नष्ट कर देना चाहते थे, यही मन्दिर बनवा कर नामदेव ने भी किया। वर्ण धर्म के समर्थन का कारण युद्ध में एकता थी अन्यथा समाज की भीतरी बुराइयों के प्रश्न पर वे वर्ण-धर्म के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने जातियों के अलग धर्म कर्मानुसार माने थे, जन्मानुसार नहीं।

५) चर्पट ने जोगियों के भीख माँगने को बुरा कहा। जोगियों के चरित्र को उठाना चाहा। और आडंबर का घोर विरोध किया। गुरुडम का विरोध किया। नारी के प्रति चर्पट का स्वर बदल गया था। गोरख का नारी के प्रति कठोर स्वर था, जिसके कारण हम 'धूनी का धुंआ' में बता चुके हैं। चर्पट के समय में 'योनि पूजा' नहीं थी। जिस 'मातृत्व' को गोरख ने सम्मान दिया था, वह अब समाज में काफ़ी मान्य था। अर्थात् स्त्री विषयभोग मात्र की वस्तु न समझी जाये। वह माता बनती है यह सम्मान उसका गृहस्थ भी रखे। संतान के लिये संभोग हो, इसलिये नहीं कि नारी भोग की वस्तु है। परंतु योगी के लिये स्त्री का स्थान अब भी वर्जित था। यह युग सीमा के अतिरिक्त योग पथ की भी सीमा थी।

६) योगि रूप का कड़ा विरोध बताता है कि चर्पट ने गोरख के काफी बाद विद्रोह किया होगा। यदि वे गोरख के कुछ ही परवर्ती होते, जैसा कि पं० हजारीप्रसाद का मत है, तो वे गोरखपंथ में आते ही क्यों ? वे गोरख के मतों के प्रशंसक अंत तक रहे। बल्कि यह कहा जाये तो ठीक होगा कि जिस प्रकार गोरखनाथ ने अपने युग मे पुराने कायायोग की आध्यात्मिक योगपरक व्याख्या की थी, उसी प्रकार चर्पट ने बाद के युग मे होने के कारण, गोरख मे जो कसर रह गई थी, या कहें गोरख की युग सीमा की कमी रह गई थी, उसे भी साफ करना चाहा, सूक्ष्म और पवित्र करना चाहा और उसकी योगपरक व्याख्या की।

७) चर्पट ने योगियों मे घुसी बुराइयों को दूर करने की चेष्टा की। फोकटीपन के वे बडे विरोधी थे। स्वय वैसे निर्भय मस्त और फक्कड़ थे।

गोरख और कबीर के बीच की यह कड़ी मैने आपके सामने प्रस्तुत की है। अब कबीर को मिला कर देखिये। चर्पट के बाद की स्टेज ही कबीर मिलेगा। कबीर में भक्ति थी, जो नाथमत के चर्पट मे तो नही थी, परंतु गैनीनाथ (गाहिनीनाथ) में आपको वह दिखाई देगी। नामदेव ने भक्ति और योग को मिलाया था। विद्रोही चर्पट पहली बार सामने आया है. इतिहास ने उसे तब भुला दिया था, किंतु वह जीवित है, और जीवित रहेगा, क्योंकि 'स्वस्वारथ' छोड़ कर लोक को कुछ दे जाने वाला विद्रोही कभी न कभी चमक कर ही रहता है। एक बार फिर इन्ही योगिदलों ने औरंगज़ेब

जैसे साम्राज्यवादी से टक्कर ली थी और यही योगियों की सैन्य प्रवृत्ति शिष्यों अर्थात् सिक्खों में फूटी थी यही महाराष्ट्र के रामदास में बोली थी, और यही अंगरेज़ों के आने के समय बंगाल के 'आनंठमठ' बनाने वाले ब्रह्मचारियों में प्रस्फुटित हुई थी।

